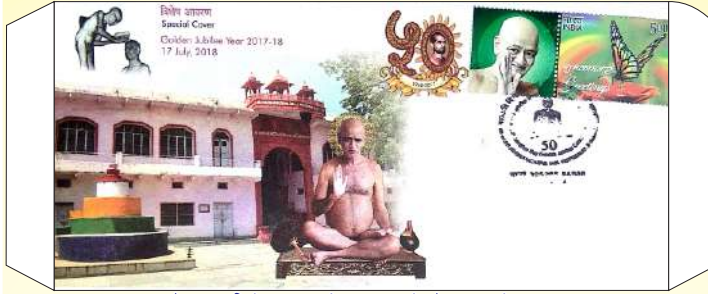


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बरचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री सकल दिगम्बर जैन समाज बारां (राजस्थान) के माध्यम से दिनांक 17-07-2018 को भारतीय डाक विभाग के राजस्थान डाक परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि. वार तिथि नक्षत्र
(जुल ज्येष्ठ शुक्ल)

16	रविवार	चतुर्दशी	अनुराधा
17	सोमवार	पूर्णिमा	ज्येष्ठा
(आषाढ़ कृष्ण)			
18	मंगलवार	प्रतिपदा	मूल
19	बुधवार	द्वितीया	पूर्वाषाढ़
20	गुरुवार	तृतीया	उत्तराषाढ़
21	शुक्रवार	चतुर्थी	श्रवण
22	शनिवार	पंचमी	धनिष्ठा
23	रविवार	षष्ठी	शतभिषा
24	सोमवार	सप्तमी	पूर्वाभाद्रपद
25	मंगलवार	अष्टमी	उत्तराभाद्रपद
26	बुधवार	नवमी	रेवती दि./रा.
27	गुरुवार	दशमी	रेवती
28	शुक्रवार	एकादशी	अश्विनी
29	शनिवार	द्वादशी	भरणी
30	रविवार	त्रयोदशी	कृत्तिका

(जुलाई 2019)

1	सोमवार	चतुर्दशी	रोहिणी
2	मंगलवार	अमावस	मृगशिरा
(आषाढ़ शुक्ल)			
3	बुधवार	प्रतिपदा	आर्द्रा/पुनर्वसु
4	गुरुवार	द्वितीया	पुष्य
5	शुक्रवार	तृतीया	आश्लेषा
6	शनिवार	चतुर्थी	मघा
7	रविवार	पंचमी/षष्ठी	पूर्वाफाल्गुनी
8	सोमवार	सप्तमी	उत्तराफाल्गुनी
9	मंगलवार	अष्टमी	हस्त
10	बुधवार	नवमी	चित्रा
11	गुरुवार	दशमी	स्वाती
12	शुक्रवार	एकादशी	विशाखा
13	शनिवार	द्वादशी	अनुराधा
14	रविवार	त्रयोदशी	ज्येष्ठा
15	सोमवार	चतुर्दशी	मूल

तीर्थकर कल्याणक

19 जून	: भ. आदिनाथ गर्भ कल्याणक
23 जून	: भ. वासुपूज्य गर्भ कल्याणक
25 जून	: भ. विमलनाथ मोक्ष कल्याणक
27 जून	: भ. नमिनाथ जन्म-तप कल्याणक
07 जुलाई	: भ. महावीर गर्भ कल्याणक
08 जुलाई	: भ. नेमीनाथ मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

01 जुलाई	: रोहिणी व्रत
07 जुलाई	: ऋषि पंचमी
08 जुलाई	: णमोकार पैंतीसी व्रत प्रारंभ
09 जुलाई	: अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
14 जुलाई	: चातुर्मास कलश स्थापना चातुर्मास प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

21 जून	: 05/47 बजे से 18/15 बजे तक।
25 जून	: 05/47 बजे से 29/38 बजे तक।
27 जून	: 05/48 बजे से 29/48 बजे तक।
28 जून	: 05/48 बजे से 01/12 बजे तक।
01 जुलाई	: 05/49 बजे से 29/50 बजे तक।
04 जुलाई	: 05/50 बजे से 26/31 बजे तक।
07 जुलाई	: 20/14 बजे से 29/52 बजे तक।
12 जुलाई	: 15/58 बजे से 29/54 बजे तक।
14 जुलाई	: 17/27 बजे से 29/54 बजे तक।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ : जून-20,27,28. जुलाई-4,5,8,12,13
वाहन क्रय : जून-21,23,30. जुलाई-4,11,12
मशीनरी प्रारंभ : जून-17,27,28. जुलाई-4,13
विद्यारंभ मुहूर्त : जून-20,27,28. जुलाई-4,11



संस्कार सागर

• वर्ष : 21 • अंक : 242 • जून 2019

• वीर नि.संवत् 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

आदरणीय पाठकों के लिए विशेष सूचना : आपके पास भेजी जा रही सदस्यता सूची आपकी स्लिप में जो जानकारी नहीं है, अथवा गलत है यदि आवश्यक हो तो जानकारी संस्कार सागर कार्यालय में पत्र द्वारा अथवा फोन से सूचित करें। आप मोबाइल पर एसएमएस भी कर सकते हैं :- फोन नं. : 0731-2571851, 4003506, मो. : 8989505108, 8989121008, 98272-82170

मई 2019 से संस्कार सागर 20 वर्ष पूर्ण करके 21 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जिसका अप्रैल 2019 तक पूरा हो गया है। पत्रिका को सुचारु रूप से प्रकाशित करने के लिए आप अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र ही भेजकर सहयोग करें।

आजीवन सदस्यों के लिए 15 वर्ष तक पत्रिका भेजी जाती है जिन सदस्यों के 15 वर्ष अप्रैल 2019 में हो चुके हैं अतः आप 5001 रु. की राशि जमा कर संरक्षक सदस्य बनकर पीढ़ी दर पीढ़ी (सदैव) पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। जिन पाठकों के 4000 रु. बाकी जा रहे हैं वह पहले आजीवन सदस्य थे। अब उनकी राशि कम कर संरक्षक बनाया जा रहा है यदि आप पुनः आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो 2100/- की राशि भेज सकते हैं।

4. जिन सदस्यों की पिछली राशि बाकी है उसकी जानकारी इसी पत्रिका में दी जा रही है। अतः आप शीघ्र ही निम्नलिखित खातों में राशि जमा कर अथवा सीधे भेज कर या आपके यहां पहुँचने वाले हमारे अधिकृत प्रतिनिधि को देकर अनुगृहीत करें। बैंक में राशि चेक द्वारा जमा करने पर कोई शुल्क नहीं कटता है अतः चेक द्वारा जमा करें।

आयसीआयसीआय	भारतीय स्टेट बैंक	ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स	आईडीबीआई बैंक
संस्कार सागर	संस्कार सागर	ब्र. जिनेश मलैया	श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
004105013578	63000704338	07882151004198	15510400037022

सदस्यता सूची का प्रारूप

सदस्यता क्र.	सदस्यता आरंभ-
सदस्यता श्रेणी	बकाया राशि
सदस्य का नाम	
पता	
गाँव/शहर	जिला
राज्य	पिनकोड
फोन : एसटीडी	नंबर
मो.	

प्रतियोगिताएं : अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा - परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांघेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- ♦ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ♦ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- ♦ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- ♦ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

*श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मांदि प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते
की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो
तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : 2100/- (15 साल)
परम संरक्षक : 15000/-

अपनेशहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
खाता क्र. 07882151004198 (IFSC: ORBC0100788)
• आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 155104000037022
• आईसीआईसीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)
में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय कोसूचित कर सकते हैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

• सम्पादक महोदय, श्री
लंका के चर्चों में आतंकी
हमला हुआ लगभग 215
लोग मरे इससे न्यूजीलैंड में
जुमा के दिन मस्जिद में आतंकी
हमला हुआ उसमें भी सैकड़ों बे गुनाह मारे
गये। मजहबी टकराव का परिणाम यदि हिंसा
होता है। तो फिर यह क्यों नहीं कहा जा
सकता है कि जिस धार्मिक विचार धारा में
हिंसा को स्थान हो वह विचार धारा सच्चा
मजहब/या सच्चा धर्म सच्चा कैसे हो सकता
? वह शान्ति का आदर कैसे कर सकता धर्म
का अर्थ तो शान्ति/आनंद प्राप्त कराना होता
है। जबकि हिंसा में आनंद प्राप्त करने की
सोच ही नरक दोजख जहन्नुम का द्वार
खोलती है।

**पाती
पाठकों
की....**



अभिषेक जैन (मुम्बई)
• सम्पादक महोदय, लोकसभा के
चुनाव सम्पन्न हुए चुनाव में राजनीतिक
दलों ने जो एक दूसरे के प्रति जो आरोप
लगाये वे आरोप सिद्ध हों या न हो किन्तु
उनकी ओछी भाषा शैली निश्चित रूप से
उन्हें शर्मिन्दा करेगी। भारत की आजादी के
उपरांत जितने भी आम चुनाव हुए हैं उनमें
सर्वाधिक भाषा और आचरण का स्तर
गिरने वाला इस 19 के चुनाव से पहले
शायद ही कोई आम चुनाव हुआ होगा।
भविष्य में हमारे देश के राजनीतिक दल एवं
राजनेता अपने इस गिरते हुए स्तर को रोकने
के लिये प्रयत्नशील होंगे ? यदि हां तो
कैसे ? **श्रीमति अंजू जैन (धुवारा)**

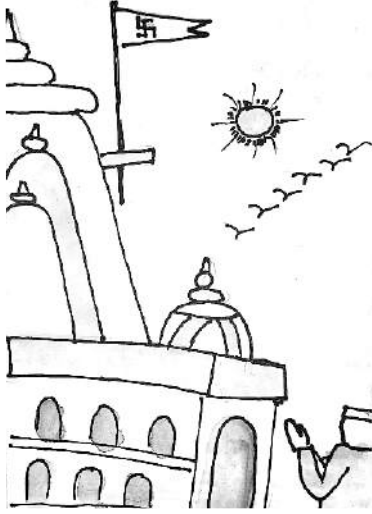
• सम्पादक महोदय, संस्कार
सागर के मई अंक में जैन पूजा
पद्धति में विवाद समाज के लिये
घातक शीर्षक से डॉ. अनिल
जैन जयपुर का लेख पढ़ा सच यह है कि
पूजन पद्धति की विभिन्नता जैन सिद्धांत की
मूल अवधारणा पर चोट नहीं करती तथा
एक दूसरे की पूजन पद्धति को लेकर नफरत
की भावना पैदा करना जैन धर्म की मूल
भावना के विपरीत है। पूजन पद्धति को
लेकर जिन पन्थों का निर्माण हुआ है।
उनके मूल में अहं और स्वार्थ के अलावा
कुछ भी नहीं है। लेखक ने जैन समाज की
एकता सम्बंधित करने का अनूठा प्रयास
किया है।

धन्यकुमार जैन सावरमति (गुजरात)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के
मई अंक में आयुर्वेद में आचार्य उग्रादित्य
का योगदान शीर्षक से लेख पढ़ा विद्वान
लेखक डॉ. सुशील मैनपुरी ने विद्वता पूर्ण
शोध लेख लिखकर जैन धर्म की प्रभावना
में एक नया अध्याय जोड़ा है जैन साहित्य में
आयुर्वेद से संबंधित ग्रंथों की सूची यदि
संस्कार सागर में प्रकाशित कर दी जाये तो
एक नई और तथ्य पूर्ण जानकारी पाठकों
को मिलेगी जिससे शोधार्थियों को भी
सहायता प्राप्त होगी।

श्रीमति रश्मि जैन (सागर)

भक्ति तरंग जिन मंदिर प्यारा भक्ति



जैन मंदिर हमको लागै प्यारा

कैं ज्यों ब्याह मुक्ति मंगल ग्रह, तोर नादि जुत लसत अपारा
धर्मकेतु सुखहेत देत गुन, अक्षय पुन्य रतन भंडारा
कहूँ पूजन कहूँ भजन होत हैं, कहूँ बरसत पुन श्रुतरसधारा
ध्यानारूढ़ विराजत है जहां, वीतराग प्रतिबिम्ब उदारा
भागचन्द्र तहां चलिये भाई, तजिकै गृहकारज अघ भारा

हे भव्यजन जहाँ जिनेन्द्र की प्रतिमा विराजित है वह जैन मंदिर हमें बहुत प्रिय लगता है।

उस जैन मंदिर की साज सज्जा ऐसी हो रही है मानो वह मुक्ति रूपी वधू के विवाह के लिये सज्जित मांगलिक घर हो। जो तोरण आदि मांगलिक चिन्हों से चित्रित मंडित हो।

ये जैन मंदिर जैन धर्म की पताका है अर्थात् जैन धर्म के फैलाने वाले हैं। धर्म स्थल होने से सुख के साधक हैं, स्वाभाविक गुणों को प्रकट करने में सहायक तथा अक्षय-कभी न समाप्त होने वाले पुण्यरूपी रत्नों के भण्डार हैं, अर्थात् जिन मंदिर में आने वाले को असीम पुण्य होता है।

इन जिन मंदिरों में कहीं पूजन हो रही होती है। कहीं भजन हो रहे होते हैं तो कहीं श्रुत-शास्त्र का पठन-पाठन विश्लेषण हो रहा होता है जिसमें वातावरण पवित्र रहता है।

जिन मंदिर में वीतराग भगवान की ध्याना रूढ़ ध्यान में मग्न मुद्रा का प्रतिबिम्ब विराजित है।

कवि भागचन्द्र कहते हैं कि हे भाई अपनी घर गृहस्थी का पाप युक्त भार छोड़कर कुछ समय के लिये वहाँ (जिनमंदिर में) अवश्य चलिए।



परिवार का पर्यावरण

परिवार वह संस्था है जिसमें पारिवारिक सहयोग करूणा और प्रेम की भावना विकसित होती है। मकान में और घर में बहुत अंतर होता है। मकान बिकाऊ होता है, मकान किराये पर दिये लिये जाते हैं। मकान खाली कराया जाता है परन्तु घर बिकाऊ नहीं होता है और न ही घर किराये पर दिये लिये जाते हैं। प्रेम और करूणा का वास जहाँ हो जाता है ऐसा घर परिवार में परिवर्तित हो जाता है और परिवार संस्कारों का धाम होता है। संस्कार निर्माण की कार्यशाला परिवार हुआ करती है। जिस समाज ने परिवार महत्व को समझ लिया है वह समाज आदर्श समाज बन जाता है। संस्कार शून्य समाज संस्कृति की रक्षा करने में कभी भी सक्षम नहीं हो सकता है। श्रमण संस्कृति विश्व की वह संस्कृति है जिसके चार स्तंभ हैं। अहिंसा अपरिग्रह, अनेकान्त और स्याद्वाद।

जिस परिवार में अहिंसा की रक्षा होती है वही परिवार पर्यावरण की रक्षा करने में सक्षम होता है। प्रकृति के संसाधनों का दोहन करना अहिंसा की ओर कदम बढ़ाना होता है किन्तु जब प्रकृति के संसाधनों का शोषण होने लगता है तब परिवार प्रदूषण और हिंसा की ओर बढ़ने लगता है। विषय भोग की लालसा परिवार में संवेदना और संवाद को समाप्त कर देती है। व्हाट्सप फेसबुक इंस्टाग्राम और सोशल मीडिया विषय वासना की लालसा का ऐसा रूप है जो वर्तमान में परिवार के प्रेम और करूणा व्यवहार को समाप्त कर रहा है। नौकरी की लालसा हर व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाने के नाम पर पारिवारिक व्यवहार को एकाकी बना रही है जिसका परिणाम यह होता है कि व्यक्तिगत विकास की ओर प्रयास होने लगता है। सबका साथ-सबका विकास जैसा महत्वपूर्ण सूत्र बिखर जाता है। पर्यावरण रक्षा का उद्घोष मात्र शब्दों में रह जाता है। अतः परिवार रक्षा के प्रयास यदि ईमानदारी से किये जायें तो पर्यावरण रक्षा करने का प्रयास अलग से नहीं करना पड़ेगा।

श्रुत पंचमी -श्रुत की अराधना का पर्व है श्रुतपंचमी

✽ मुनि श्री कुंथुसागर ✽

इस हुण्डावसर्पिणी काल की चौबीसी के अन्तिम तीर्थकर श्री महावीर भगवान के पश्चात् श्री गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी एवं जम्बू स्वामी ये तीन केवली हुए।

इसके पश्चात् पाँच आचार्य द्वादशांग के ज्ञानी श्रुतकेवली हुए।

तदनंतर ग्यारह अंग, दस पूर्व के वेत्ता ग्यारह आचार्य हुए तत्पश्चात् पाँच आचार्य ग्यारह अंगों के धारक हुए। इसके पश्चात् श्री सुभद्र श्री यशोभद्र, श्री यशोबाहु एवं श्री लोहार्य के चार आचार्य एक मात्र आचारांग के धारी हुए। इन्हीं के साथ-अंग और पूर्व वेत्ताओं की परम्परा समाप्त हो गई और सभी अंगों एवं पूर्वों का एक देश ज्ञान आचार्य परम्परा से आचार्य धरसेन जी को प्राप्त हुआ। अतः काल के अनुसार क्षयोपशम घटता गया। आज से लगभग 2000 वर्ष पहले अर्थात् भगवान महावीर के निर्वाण के 683 वर्ष व्यतीत होने पर आचार्य श्री धरसेन जी का काल माना जाता है।

एक रात्रि के अन्तिम प्रहर में अचानक ध्यानस्थ आचार्य धरसेन जी का ध्यान भंग हो गया। क्यों? विचार किया- काल प्रभाव से क्षयोपशम घट रहा है, आगे जीव श्रुतज्ञान से अपरिचित रह जावेंगे, मेरी आयु भी कम रह गई है। श्रुतज्ञान को लिपिबद्ध करने के लिये योग्य शिष्य चाहिये। दक्षिणापथ में साधु सम्मेलन में एक शिष्य को पत्र लेकर भेजा, वहाँ के आचार्य महाराज ने पत्र पढ़ा। उन्होंने प्रसन्न होकर दो शिष्यों को भेजा। गिरनार की ओर बिहार किया। इधर साधुओं के आगमन की पूर्व रात्रि को स्वप्न में आचार्य धरसेन जी ने दो सफेद बैलों को देखा। लक्ष्यसिद्धि का संकेत मिला। दोनों मुनिराजों की परीक्षा लेने के उपरान्त शुभ नक्षत्र, पक्ष, तिथि, एवं दिवस देकर श्रुतज्ञान देना प्रारम्भ किया।

भूतजाति के व्यन्तर देवों ने पूजा की इसलिये उनका नाम भूतबलि जी रखा और दूसरे मुनिराज की देवों ने दन्तपंक्ति को ठीक किया। इसलिये उनका नाम आचार्य श्री पुष्पदन्त जी रखा।

छः खण्डों की रचना ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन समाप्त हुई सभी मुनिराजों ने ग्रंथों की वंदना की। इसलिये इस दिन श्रुत पंचमी महोत्सव मनाया जाता है।

यह ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी अनन्तकालीन कर्म कालिमा को धोने वाली शुभ तिथि है। जैसे बिना जल के कपड़ा नहीं धुलता वैसे ही ज्ञान के बिना आत्मा स्वच्छ नहीं होती है। इसलिये ज्ञान को जल की उपमा दी जाती है। सत् साहित्य एवं साधु संगति, मन के मैल को धोने के लिये साबुन और पानी का काम करते हैं।

जिनवाणी का स्वाध्याय करने से विपरीत मान्यतायें समाप्त हो जाती हैं, वस्तु तत्त्व का सच्चा स्वरूप सामने आ जाता है, स्वाध्याय रूपी उपवन में मात्र समता के ही फूल खिलते हैं अर्थात् वर्तमान में विषमता में भी समता के साथ जीने का आधार स्वाध्याय से ही उपलब्ध हो सकता है।

दृष्टि एवं सोच का परिवर्तन स्वाध्याय से ही सम्भव हो सकता है। स्वाध्याय करने से निर्मल दृष्टि एवं विचारधारा का जन्म होता है। क्षुद्र बातों को सुनकर मन नहीं बिगड़ता छोटी-छोटी बातों

को लेकर क्रोध नहीं आता। सकारात्मक दृष्टिकोण से व्यक्ति हर परिस्थिति का सामना सहजता से कर सकता है। कर्मोद्भेद में भी व्यक्ति का मन विचलित नहीं होता हृदय में सद्बुद्धि हो तो पाप के विचार आ ही नहीं सकते।

स्वाध्याय करने से भगवान की आज्ञा का पालन होता है, जिससे जिन वचन में दृढ़ श्रद्धा हो जाता है, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति एवं प्राप्त सम्यग्दर्शन में निर्मलता आती है। मन की प्रसन्नता एवं विशुद्धि बनी रहती है, साधर्म्य के प्रति वात्सल्य भाव उत्पन्न होता है।

इस पर्व पर सभी को स्वाध्याय करने का नियम अवश्य लेना चाहिये। तभी इस पर्व को मनाना सार्थक होगा।

कविता

चलें जिन मंदिर प्यारा

✽ सुभाषचन्द्र सरल (अशोकनगर) ✽



वीतराग भगवान का मंगल है गुणगान
प्रभु के स्तवन गान से, हो जाता कल्याण
यही विश्वास हमारा, चलें जिन मंदिर प्यारा।

प्रातः प्रथम अभिषेक करें हम, श्री गंधोदक माथ धरें हम
भक्ति भाव से पूजन करके, गुरुजनों की विनय करें हम
षट् धर्म कर्म प्रतिपाल से, जग जावे भाग्य हमारा चलें जिन मन्दिर प्यारा।
वीतराग भगवान का.....
तीर्थ क्षेत्रों की करें वन्दना, मुक्ति क्षेत्रों की महा अर्चना
पंच परमेष्ठी हैं पूज्य हमारे, हमको निज प्राणों से प्यारे
सिद्ध क्षेत्रों के दर्श से, कट जावे कर्म पिण्ड मल सारा चलें जिन मंदिर प्यारा।
वीतराग भगवान का.....

श्री जिन की निश्चल भक्ति से, होता आत्म विकास
दस धर्मों की पालना, प्रगटाती आत्म पुँज प्रकाश
आत्म पुँज प्रकाश से, खुल जावे मुक्ति द्वारा चलें जिन मंदिर प्यारा।
वीतराग भगवान का.....

पूज्य आचार्य श्री का फिरोजाबाद-वर्षायोग (कुछ अविस्मरणीय स्मृतियाँ)

✽ नरेन्द्रप्रकाश जैन ✽

युगनायक पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जब इस नगर में आये थे, तब अकेले ही थे। गत 41 वर्षों में वह वामन से विराट बनकर देश के आध्यात्मिक आकाश में धर्म-सूर्य की तरह चमक रहे हैं। उन्होंने अब तक 443 दीक्षाये दी हैं, जो अपने आप में एक अनोखा विश्व-कीर्तिमान है। 443 की इस संख्या में 120 निग्रंथ मुनि, 172 आर्यिका मातायें तथा 151 ग्यारह प्रतिमाधारी (एलक, क्षुल्लक और क्षुल्लिकार्यें) शामिल हैं। सम्प्रति लगभग 400 बाल ब्रह्मचारी भैया-बहिनें पूज्य आचार्य श्री के अन्तेवासी बनने के लिये प्रतीक्षा-रत हैं। उनके सभी शिष्य बाल ब्रह्मचारी, शिक्षित, साहित्य-कला, संस्कृति और इतिहास के गहन अध्येता हैं। पूज्य आचार्य श्री किसी को अपना शिष्य बनने के लिये नहीं कहते। जो भी इस कतार में शामिल हुए हैं, वह उनकी स्वतः स्फूर्त प्रेरणा का परिणाम है। हाँ, आचार्य श्री के चुम्बकीय व्यक्तित्व का प्रभाव इसमें निमित्त अवश्य है। वह तो इस मार्ग पर अकेले ही चले थे, पर आपो-आप कारवाँ बनता चला गया।

प्रस्तुत आलेख में हम उनके ऐतिहासिक कृतित्व और कर्तृत्व की चर्चा न केवल अपने इस नगर में सन् 1975 में सम्पन्न हुआ वर्षायोग की कभी न भुला सकने वाली कुछ स्मृतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं बल्कि बहुत कुद और भी। श्रोतागण उनकी वाणी सुनकर धर्म के मर्म को सहज रूप से आत्मसात कर लेते हैं। अहोभाग्य है इस नगर का कि उत्तर प्रदेश में उनका वर्षायोग केवल सुहागनगरी फिरोजाबाद में हुआ, अन्य कहीं नहीं, हमें गौरव है इस बात का।

सन् 1975 का जुलाई का महीना, समय लगभग दो बजे का। हम अपने कॉलेज के प्राचार्य-कक्ष में बैठे कुछ वरिष्ठ शिक्षकों से बात कर रहे थे कि फोन की घण्टी बजी। हमने चोगा उठाकर कान से लगाया और कहा-हैलो। उधर से उदारमना सेठ साहब की आवाज थी-नरेन्द्रप्रकाश! मैं छदामीलाल बोल रहा हूँ। यहाँ (सेठ जी द्वारा संस्थापित मन्दिर जी में) सुबह 8 बजे एक छोटी उम्र के युवा मुनि महाराज पधारे हैं। चातुर्मास की स्थापना में अब केवल दो-तीन दिन शेष हैं और यहाँ अभी कोई व्यवस्था नहीं है। हमने पूछा-हमारे लिये क्या आज्ञा है, बताइए। वह बोले- पहले पूरी बात सुनें। हमने उन्हें नमोस्तु किया और उनसे विनम्रतापूर्वक यह निवेदन किया- पूज्य महाराज जी, शहर में गली लोहियान- स्थित श्री बंशीधर दिगम्बर जैन धर्मशाला में एक साधु- संघ ठहरा हुआ है। वहाँ आहार और निवास आदि की उत्तम व्यवस्था है। आप वहाँ पधारें। ये मुनीम जी (सुनहरी लाल जैन) आपको वहाँ पहुँचा देंगे। हमारे यह पूछने पर कि फिर क्या हुआ, अब हम क्या करें, आप यहाँ आकर स्थित को समझें। आगे जो बातचीत हुई, वह इस प्रकार है:-

प्राचार्य:- सेठ जी! पूज्य महाराज जी का नाम क्या है उनके साथ कौन-कौन हैं?

सेठजी:- अकेले ही हैं और निगाह नीची रखते हैं। वह बोलते बहुत कम हैं। पूछने पर नाम विद्यासागर बता रहे हैं।

प्राचार्य: सेठ साहब आप बिलकुल भी चिन्ता न करें। वह एक उत्कृष्ट साधु हैं। यों समझों कि अचानक लॉटरी का नम्बर लग गया है।

सेठ जी: क्या आप उन्हें जानते हैं?

प्राचार्य: नहीं, अब यहाँ आ गये हैं तो प्रथम बार हम उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करेंगे।

सेठ जी: जब अभी तक आपने उन्हें देखा ही नहीं तो कैसे कह रहे हैं वे उत्कृष्ट साधु हैं।

प्राचार्य: हम वहीं आकर आपको सब कुछ बताते हैं। आप तो उनसे चातुर्मास की स्थापना की प्रार्थना करने के लिये आरती की थाली और श्रीफल आदि मँगाकर रखिए।

सेठ जी अभी कुछ और पूछना चाहते थे, पर फोन कट गया। हमने इस वार्ता के बाद नगर के कुछ प्रतिष्ठित लोगों को फोन करके पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शुभागमन की सूचना दी तथा तुरन्त जैन नगर मन्दिर जी पर पहुँचने के लिये कहा।

हम भी अपने कॉलेज के प्रबन्धक एवं प्रमुख समाजसेवी श्री हकीम प्रेमचन्द्र जी को उनके घर से अपने साथ लेकर मन्दिर जी पहुँच गये। सेठ साहब अपने कक्ष में बैठे हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। हमने उन्हें बताया कि अभी पिछले दिनों हमने सिद्धान्ताचार्य पंडित कैलाशचन्द्र जी शास्त्री का जैन संदेश में एक सम्पादकीय आलेख, जिसका शीर्षक था-**एक नये नक्षत्र का उदय** पढ़ा था। उन्होंने इन्हीं नवोदित आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की प्रशंसा करते हुए लिखा था- हमने भगवान महावीर स्वामी के दर्शन नहीं किये, पर वह इन साधु- सखीसे ही होंगे, इन्हें देखकर ऐसा विश्वास हमें हो गया है। सेठ जी सुनकर बोले कि बनारस वाले पंडित जी ने ऐसा लिखा है। तब तो इनका चातुर्मास यहाँ होना ही चाहिये। इस बीच जिन-जिनको हमने फोन किया था, वे सभी आ गये। आस पास के मोहल्लों में रहने वाले भी भनक पाकर आने लगे। चार-सवा चार बजे तक पचास-साठ लोग इकट्ठे हो गये, सबके चेहरे उत्साह से लवरेज थे।

सभी लोग महाराज जी की जय-जयकार करते हुए उनके चरणों के समीप पहुँचे। इसी बीच मुनीम जी आरती का थाल और एक कट्टे (बैग) में श्रीफल लेकर आ गये। सभी ने भक्ति पूर्वक आचार्य श्री की आरती की। हमने सभी स्त्री-पुरुषों से बैठने को कहा और पूज्य आचार्य श्री के बारे में जितना हमने सुना या पढ़ा था, उसके आधार पर उनका परिचय दिया तथा विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि स्वामी ब्रह्मगुलाल और आचार्य महावीर कीर्ति महाराज की साधना और जन्मभूमि में वर्षायोग स्थापित कर यहाँ के धर्मप्राण भक्तों को कृतार्थ करें। सभी लोगों ने क्रम-क्रम से भेदविज्ञान के प्रतीक श्रीफल उन्हें (सामने रखी एक बैंच पर) अर्पित किये। अगले दिन से प्रातः आठ बजे आकर और अपना स्थान ग्रहण कर उनके प्रवचनमृत्तों का लाभ प्राप्त करने की अपील भी की। उदारमना सेठ जी के मन में उनके चातुर्मास को लेकर जो असमंजस था, वह दूर हो चुका था और अब उनके मुखमण्डल पर प्रसन्नता और उत्साह का उत्स झलकने लगा था। पूरे नगर में पूज्य आचार्य श्री के नियमित प्रवचनों की उद्घोषणा करा दी गई थी। पूज्य महाराज जी ने अभी तक अपने श्रीमुख से वर्षावास की स्वीकृति का कोई संकेत नहीं दिया था, पर उनकी शान्त सौम्य मुद्रा नासादृष्टि और होठों पर तैरती स्मित-रेखओं को देखकर सभी भक्तों को यह विश्वास था कि चातुर्मास यहीं होगा।

दूसरे दिन प्रातः साढ़े सात बजे तक ही जन-सैलाब उमड़ने लगा। आठ-सवा आठ बजे तक मन्दिर जी के पश्चिम-दक्षिणोन्मुख परिक्रमा-मार्ग पर लगभग डेढ़ हजार स्त्री-पुरुष अपना स्थान ग्रहण कर चुके थे। सभी लोगों के मन में यह जानने की उत्सुकता थी कि बिना किसी पूर्व सूचना के अचानक इनका पदार्पण यहाँ कैसे हुआ। रास्ता चलकर आये होते तो निकटस्थ गाँव-कस्बों में रहने वाले श्रावक सूचना अवश्य देते। एक भाई बोले- हमें तो ऐसा लगता है कि सीधे आकाश मार्ग से चलकर चुपके-चुपके यहाँ उतर आये हैं। इसी बीच पूज्य श्री नीची दृष्टि किये हुए बिना किसी आहट के आकर मंच पर विराजमान हो गये। आकृति से वह किसी देवदूत-से ही लग रहे थे। उनके कमाल के चुम्बकीय आकर्षण में बंधे भाई-बहिनोंने अपने-अपने स्थान पर, खड़े होकर उन्हें सविनय नमोस्तु किया और उनकी जय-ध्वनि से आकाश गुंजायमान कर दिया। हमारे संकेत पर फिर सभी लोग अपने स्थान बैठ गये।

हमने माइक सँभाला। पहले मंगलाचरण किया, फिर कहा-अपनी इस सुहागनगरी के भव्य जीवों के प्रबल पुण्योदय से इस विभूति का यहाँ वर्षायोग हो रहा है। अब चार महीनों तक यहाँ ज्ञान-गंगा की धारा बहेगी और उसमें अवगाहन करने का हम सबको दुर्लभ अवसर मिलेगा। हम बिना किसी भूमिका के पूज्य श्री से अपनी दुखहारी-सुखकार वाणी से मांगलिक उदबोधन प्रदान करने के लिये विनम्र प्रार्थना करते हैं, ताकि आकुलता-व्याकुलता के भँवर में डूबने-उतरने वाले हम जीवों का कल्याण हो। पूज्य श्री का प्रथम उदबोधन सम्यग्दर्शन पर हुआ। वह एक घण्टा बोले और सभी धर्म-पिपासु लोग उन्हें सूचीपात शान्ति के साथ सुनते रहे। सबको यह लगने लगा कि कल से श्रोताओं की भीड़ बहेगी और हुआ भी ऐसा ही। पूरे चार माह तक लगभग द्वाई-तीन हजार लोग उन्हें सुनते आते रहे। लोग उनके अध्यात्म परक प्रवचनों से इतने सम्मोहित या मंत्रमुग्ध थे कि समय से पूर्व आकर अपना स्थान ग्रहण कर लेते थे पूज्य श्री की ओर से यह संकेत मिल चुका था कि चातुर्मास यहीं होगा।

प्रथम पच्चीस दिनों तक पूज्य श्री प्रवचन सम्यग्दर्शन से सम्बन्धित विषयों पर हुए। फिर सोलह दिनों तक वह सोलह कारण भावनाओं पर बोले तथा बाद में दस दिनों तक उन्होंने धर्म के दस लक्षणों पर प्रकाश डाला। इन तीनों ही विषयों पर लिये नोट्स के आधार पर हमारे कॉलेज के आंग्ल भाषा में प्रवक्ता श्री जगरूपसहाय जैन ने तीन पुस्तकें तैयार की, जो प्रवचनामृत (भाग-1-2-3) के रूप में प्रकाशित हुई। चातुर्मास के शेष दो माह तक भी विविध विषयक प्रवचन-श्रृंखला विधिवत चलती रही। चारों महीनों तक मंगलाचरण और सभा-संचालन का सौभाग्य हमें मिला। अपने सम्बोधनों में विषय-प्रतिपादन करते समय या किसी जिज्ञासु के कुछ कहने या प्रश्न करने पर वह जो तर्क या उदाहरण देते थे, आज 41 वर्षों के बाद भी हम उन्हें भुला नहीं पा रहे हैं। अपनी स्मृति - मंजूषा सुरक्षित ऐसे ही कुछ बिन्दुओं के आधार पर हम कुछ स्मृतियाँ यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, जो निश्चित ही प्रबुद्ध पाठकों के लिये बोधप्रद सिद्ध होगी।

मुक्ताकाश सभा

पूज्य आचार्य श्री के इस चातुर्मास की एक विशेषता यह थी कि पूज्य श्री के प्रवचन प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में खुले आकाश के नीचे होते थे। जिस दिन बारिश होती, उस दिन मन्दिर जी के भीतर बैठकर लोग उन्हें सुनते थे। सेठी जी द्वारा स्थापित यह मन्दिर विशाल तो है ही, उसका परिक्रमा-पथ भी काफी विस्तृत है। मन्दिर जी के पीछे के परिक्रमा-पथ पर महिलायें और बार्थी और के परिक्रमा-पथ पर पुरुष बैठते थे। नीचे हरे-भरे लॉन और बरामदों में भी सैकड़ों लोगों का हुजूम दिखाई देता था। दोनों परिक्रमा-पथों को जोड़ने वाले कॉर्नर में लगभग पाँच फीट ऊँचे मंच पर पूज्य महाराज की विराजते थे। सभी लोग सुगमता से उन्हें देख और सुन सकते थे।

आजकल तो वाटर-प्रूफ प्रवचन-मण्डप या शामियाने बनाये या लगाये जाते हैं और अब तो कहीं-कहीं मण्डप में ए.सी. की व्यवस्था भी करनी पड़ती है, जिसके लिये टैण्ट हाउस के मालिक को लाखों रूपयों का भुगतान करना पड़ता है। किसी तरह के तामझाम और सजावट से रहित इतनी सादगी से सम्पन्न होने वाला ऐसा चातुर्मास इन दिनों कहीं देखने को मिल पाता है। प्रकृति की तरह ही आचार्य श्री का चेहरे भी सदा खिला, खिला दिखाई देता था। इस वर्षायोग का कोई पोस्टर भी नहीं छपा था।

रस-परित्याग तपः सही परिभाषा

एक दिन सभा के प्रारम्भ में हमने कहा कि हम लोगों में और महाराज में क्या अन्तर है? यही कि महाराज नीरस या रूखा-सूखा आहार लेते हैं, पर मृदु और मीठा बोलते हैं और हम लोग बढिया-बढिया स्वादिष्ट पकवान खाते हैं, पर कटु और कठोर बोलते हैं। महाराज के मीठा नमक, घी तेल और दही का त्याग था। आहार में वह केवल दाल, रोटी, दलिया, चावल और दूध के अलावा कुछ नहीं लेते

थे। जैन साधु वैसे भी चौबीस घण्टों में केवल एक बार आहार-पानी लेते हैं। उसमें भी यदि अन्तराय आ जाये तो वह भी नहीं ले पाते हैं कभी-कभी स्वेच्छा से उपवास भी करते हैं, फिर भी सदा मस्त रहते हैं। उर्दू भाषा में जिन्हें अलमस्त फकीर कहते हैं, उनसे भी बेहतर चर्या होती है दिगम्बर जैन साधुओं की।

महाराज जी ने प्रवचन शुरू करते हुए कहा कि अभी-अभी ये (इशारा हमारी ओर था) कह रहे थे कि महाराज नीरस भोजन लेते हैं। यदि इनका वश चले तो ये डाइबिटिज या हृदय-रोगियों को भी महाराज कहने लगेंगे, क्योंकि डॉक्टर उनसे भी नीरस भोजन लेने को कहते हैं। उनका घी, नमक, मीठा आदि छुड़वा देते हैं। कुछ महिलायें हैं, जो रविवार को नमक नहीं लेती, लेकिन एक दिन पहले वहाँ से कह देती हैं के कल मावा की बरफी और खीन बना लेना। कल हमारा नमक का त्याग है। भला यह भी कोई त्याग है। नमक तो नहीं लिया, पर मीठे की मात्रा बढ़ा दी। इसमें त्याग या तप कहाँ हुआ? जो लालसा नमक में थी, वह मीठे में चली गई। यह रस-परित्याग नहीं, रस का ट्रान्सफर मात्र है। उनके कथन पर श्रोताओं ने तुमुल करतल-ध्वनि की, क्योंकि एक नई और सही बात तो सुनने को मिली थी।

आचार्य श्री ने आगे कहा-अरे भाई! बाहर के रसों को छोड़ना रस-परित्याग नहीं है, आत्मा में रस अर्थात् आनन्द का संचार होना वास्तविक तप है। समझे प्राचार्य जी।

सही बात है महाराज जी, हमने सिर झुकाकर कहा।

स्वजातीय से जुड़ो, विजातीय से नहीं

पूज्य आचार्य श्री ने एक दिन कहा कि सुख पाने के लिये स्वजातीय से जुड़ना चाहिये, विजातिय से नहीं। हम शरीर नहीं हैं, आत्मा हैं, और आत्मा सचेतन ओर निराकर है। वह सिद्धों की जाति की है। सिद्ध भी सचेतन और निराकर हैं। हमें उनसे जुड़ना चाहिये, पर हम किनसे जुड़ना पसन्द करते हैं? शरीर, घर-परिवार, धन-दौलत, सोना-चाँदी, वस्त्र, वाहन, मोहनभोग आदि से। ये सभी पदार्थ तो अचेतन और साकार होने से विजातीय हैं। विजातीयों से लगाव या अटैचमेण्ट दुःख का कारण है। सुख पाने के लिये अपने स्वाजातीय सिद्धों से अटैचमेण्ट होना चाहिये।

आचार्य श्री ने पूड़ी का उदाहरण देते हुए कहा कि पूड़ी बनाने के लिए पहले गीले आटे की लोई को पूड़ी के आकार में गोल-गोल बेलना पड़ता है। फिर चूल्हे पर रखी घी से भरी कढ़ाई में उसे छोड़ने पर वह कढ़ाई की तली में बैठ जाती है, क्योंकि उसमें विजातीय पानी का संयोग है। चूल्हे की आग और खोलते घी से संयोग से जब पानी का अंश समाप्त हो जाता है, तब वह पूड़ी फूल कर घी के ऊपर तैरने लगती है। फिर उसे करछुली से कितना ही नीचे दबाने की कोशिश करो, वह करछुली के अगल-बगल से निकल कर फिर ऊपर तैरने लगती है। फिर वह तली में नहीं रूकती। इसी प्रकार विजातीय से अलगाव या डिटैचमेण्ट होने पर यह जीव सिद्धालय में ऊपर पहुँच जाता है, फिर कभी नीचे नहीं आता।

भैया! यदि सुखी होना चाहते हो तो उसके लिये एक ही सूत्र है- विजातीय से सम्बन्ध छोड़ो और स्वाजातीय से सम्बन्ध जोड़ो।

रसगुल्ला काण्ट गो टू माउथ.....

सांयकालीन धर्म-चर्चा के समय एक मुमुक्षु भाई आये। उन्होंने कहा-महाराज हमने जैनाध्यात्म के सर्वोपरि ग्रन्थ समयसार का चार बार स्वाध्याय पूरा कर लिया है। महाराज जी ने उनसे पूछा उससे आपको क्या लाभ हुआ? मुमुक्षु बोले- समय सार के स्वाध्याय से हमारी सम्पूर्ण इच्छायें समाप्त हो गयी हैं और किन्हीं पदार्थों में हमारी कोई रुचि नहीं रही। पूज्य आचार्य श्री ने गम्भीर होकर कहा- ये तो कमाल हो गया जी! कुछ दिन पहले एक बड़े विद्वान् हमें बता रहे थे कि समयसार का सात बार स्वाध्याय करने पर भी अपनी इच्छाओं पर विजय नहीं पा सके हैं। एक इच्छा पूरी हुई कि दूसरी आ धमकती है। दूसरे के बाद तीसरी और तीसरी के बाद चौथी इच्छा के जन्मने का सिलसिला चलता रहता है। यह बात

बताकर पूज्य श्री ने उन मुमुक्षु भाई से कहा-आपने तो चार बार स्वाध्याय करके ही सात बार वाले महामनीषी को पछाड़ दिया। आपका स्वाध्याय करना तो सार्थक हो गया। प्रशंसा सुनकर मुमुक्षु भाई का सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

कुछ देर तक धर्म-चर्चा चलने के बाद आचार्य श्री ने अचानक उन भाई से पूछा-यह बताइये कि प्लेट में एक रसगुल्ला रखकर आपके सामने पेश किया जाये तो आप क्या करेंगे ? तपाक से वह बोले- हाथ में रसगुल्ला उठाकर मुँह में रखेंगे ओर गले के नीचे उतार लेंगे। महाराज खिलखिलाकर हँसे और बोले- रसगुल्ला काण्ट गो टू माउथ विदाउट इण्टेंशन अर्थात्- बिना इच्छा के रसगुल्ला मुँह में जा नहीं सकता। यह बात सुनकर मुमुक्षु भाई से कुछ कहते नहीं बना और वह हाथ जोड़कर चलते बने।

पानी टैंक में होता है, टोंटी में नहीं

पूज्य आचार्य श्री ने एक मजेदार प्रसंग सुनाते हुए कहा कि अरब देश का एक सौदागर भारत आया और बम्बई के किसी फाइव स्टार होटल में ठहरा। सुबह होने पर बाथरूम में नहाने के लिये गया, लेकिन वहाँ न तो पानी दिखा और न मग्गा-बाल्टी ही। उसने होटल के कर्मचारी से इस बारे में पूछा तो उसने उन्हें बताया कि इस नल की टोंटी को यों घुमाओगे तो पानी आएगा, आप जी भरकर नहाइये। नहाने के बाद टोंटी बन्द करना न भूलें, ताकि पानी बर्बाद न हो। सौदागर जीवन में पहली बार तबियत से नहाया। नहाकर कपड़े बदले। तरोताजा होकर पुनः उसी कर्मचारी को बुलाकर कहा- तुम्हारी इण्डिया में यह टोंटी तो बड़ी मजेदार चीज है। हमारे अरब में तो पानी की बड़ी किल्लत है। कई-कई दिनों तक तो मुँह-हाथ धोकर रहना पड़ता है : ये टोंटी किनते की आती है। हमें एक दर्जन लाकर दे दो। टोंटी घुमाकर हम खूब नहायेंगे।

कर्मचारी ने सोचा कि आज तो इस बुद्धू से अच्छी कमाई हो जायेगी। वह बोला-सर एक टोंटी एक हजार रूपये की आती है। सौदागर ने बाहर टोंटी लाने के लिये कर्मचारी को बारह हजार रूपये दिये। कर्मचारी खुश होते हुए बाजार गया और लौटकर बारह टोंटियों का एक डिब्बा सौदागर के हाथ में थमा दिया।

अरब देश में लौटकर सौदागर ने एक-एक करके टोंटियों को घुमाया, पर किसी भी टोंटी से एक बूँद पानी भी नहीं टपका। उसने मन में सोचा कि बम्बई के कर्मचारी ने उसे ठग लिया और उसने असली की जगह नकली टोंटियाँ पकड़ा दी। गुस्से में उसे बम्बई के होटल-मैनेजर को फोन मिलाया और उसे सारी बात बताई। मैनेजर ने कहा-महाशय जी ! पानी टैंक में होता है, टोंटी में नहीं। टैंक से पाइप के जरिये पानी टोंटी से बाहर आता है।

किस्सा सुनकर श्रोताओं का ठहाका गूँज उठा। आचार्य श्री ने समझाया-**इसी प्रकार सुख तो आत्मा रूपी टैंक में है, पर उसकी अनुभूति ज्ञानेन्द्रियों रूपी टोंटियों से होती है।** यह सार की बात सुनकर भक्तों ने तालियाँ की गड़गड़ाहट से तुमुल हर्ष-ध्वनि की।

अहंकारी व्यक्ति और छिपकली

अभिमानी व्यक्ति अपने को **तीस मार खाँ** और दूसरों को तुच्छ समझता है। सबको नीचा दिखाने में उसे आनन्द आता है। मानी व्यक्ति स्वयं को सबका स्वामी ओर उनके सुख का कर्ता मानता है और शेष सबको अपना दास समझता है। वह छिपकली की तरह होता है।

एक दिन यह उद्गार व्यक्त करते हुए पूज्य आचार्य श्री ने आगे कहा कि एक छिपकली छत पर उल्टी लटकी थी। उसके पंजे छत से सटे थे और पीठ नीचे की ओर थी। किसी ने उससे पूछा कि तुम उल्टी क्यों लटकी हो ? गिर गई तो चोटिल हो जाओगी। छिपकली ने कहा- तुम अनाड़ी हो। इस रहस्य को

नहीं समझोगे। देखते नहीं कि यह छत कितनी कमजोर है। जगह-जगह से दरक और चटक रही है। यदि मैं इसे अपने पंजों पर न थामूँ तो यह गिर जायेगी और तुम इसके नीचे आकर घायत हो जाओगे। मर भी सकते हो। मैं तो तुम्हारी सुरक्षा के लिये उल्टी लटकी हूँ। यह सुनकर श्रोता अपनी हँसी न रोक सके।

अहंकारी व्यक्ति भी यही सोचता रहता है कि यदि वह न होता तो सारा परिवार भूखों मर जाता। वही तो सबका पालनहार है। आचार्य श्री ने कहा कि यदि स्व-कल्याण चाहते हो तो यह सूक्ति याद रखना-

तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान

वह ठहाका आज भी गुदगुदाता है

एक दिन सभा में आने में हमें पाँच-सात मिनट का विलम्ब हो गया था। आचार्य श्री मंच पर विराजमान हो चुके थे। हमने सहमते-सहमते मंगलाचरण किया और देरी के लिये सफाई दी कि आज जल्दबाजी में कुर्ता उल्टा पहन लिया था। जब बच्चे हँसने लगे, तब हमें इसका एहसास हुआ। फिर से कुर्ता उतारा, सीधा करके पहना और बटन लगाये, इससे देरी हो गई। क्षमा चाहता हूँ। इस सफाई पर श्रोता हँसने लगे थे।

महाराज जी तो बड़े ही हाजिर जबाब हैं। बोले-ऐ फिरोजाबाद वाले पण्डित जी ! हमारी- जैसी ड्रेस पहनो, जिसमें न तो उल्टे सीधे का चक्कर है और अटन-बटन लगाने का झंझट ही। साधु तो ड्रेस और एड्रेस दोनों से मुक्त होता है। ऐसी ड्रेस कब पहनोगे ? फिर तो जो ठहाका लगा, उसकी गूँज तो इतने वर्षों के बाद सपने में भी सुनाई देती है।

चाह लँगोटी की दुख भाले

संस्कृत के यशस्वी विद्वान एवं नगर के प्रख्यात वैद्य श्री राज जी लाल शर्मा की एक बात याद आ रही है। वह महाराज के अनन्य भक्त थे। एक दिन अपरान्हकालीन चर्चा में दोनों हाथ जोड़ कर वह बोले-महाराज जी, एक विनम्र प्रार्थना है। महाराज ने पूछा-क्या ? उस समय वहाँ 70-80 भक्तजन उपस्थित थे। सभी उत्सुक हो उठे कि देखें वैद्य जी क्या कहते हैं।

महाराज जी ! जब आप बस्ती में आहार के लिये उठा करें तो एक लंगोटी पहन लिया करें। जो जैन नहीं है, वे लोग दिग्गम्बरत्व का महत्व नहीं समझते और नग्न मुनि को देखकर मन ही मन हँसते हैं, यह थी वैद्य जी की प्रार्थना।

सभी श्रोता वैद्य जी की प्रार्थना से सन्न थे, पर महाराज सहज थे। महाराज बोले- आप ठीक कहते हो। दो लँगोटी तो चाहिये ही एक पहनने के लिये और दूसरी धोकर सुखाने के लिये। कितना कपड़ा लगेगा दो लँगोटियों में ?

बड़े अर्ज के डेढ़ मीटर कपड़े में बन जायेगी महाराज, प्रार्थना स्वीकार होते देख प्रसन्नता से चकहते हुए वैद्य जी ने कहा।

अच्छा, तो ले आना। सफेद लाओगे या हरे रंग का-यह पूछा महाराज ने।

वैद्य जी ने कहा- लँगोटी के लिये तो सफेद रंग का कपड़ा ही ठीक रहता है।

महाराज बोले- नहीं हरे रंग का लाना। आँखों के आपरेशन के बाद नेत्र-सर्जन मरीज की आँख पर हरी पट्टी बाँध देते हैं। जो कपड़ा लाओ, उससे हरी पट्टियाँ बनवा लाना। **मुनि के नग्नत्व को देखकर जिनको एलर्जी होती है, उनकी आँखों पर यह पट्टी बाँध देना, एलर्जी ठीक हो जायेगी।**

उपस्थित भक्तों का समवेत स्वर गूँज उठा-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की जय। सुधी वैद्य जी ने भी साष्टांग नमस्कार करते हुए कहा-धन्य हो महाराज। साधु हो तो ऐसा। पूज्यवर, मैं अपनी भूल

के लिये क्षमा मांगता हूँ।

यह प्रसंग क्या कभी भुलाया जा सकता है ?

प्रतीकात्मक पिच्छी : वास्तविक पिच्छी

पूज्य आचार्य श्री के चातुर्मास के 27 वर्षों के बाद भवि भागन वश जोगे वशाय उनके सुयोग्य शिष्यतम पूज्य मुनि श्री समतासागर जी, मुनि श्री प्रमाणसागर जी एवं एलक श्री निश्चतसागर जी के वर्षायोग का सुयोग सन् 2002 में बना। यह वर्षायोग भी पूज्य आचार्य श्री के चातुर्मास की तरह की सादगीपूर्ण एवं प्रभावक रहा। चातुर्मास समापन से दो दिन पूर्व 21 नवम्बर को पूज्य श्री विद्यासागर महाराज का 31वाँ आचार्य पद-प्रतिष्ठापन समारोह मनाया गया था। मुनि श्री समतासागर महाराज ने उनका गुणानुवाद करते हुए एक संस्मरण सुनाया, जो उन्हीं के शब्दों में अक्षरशः यहाँ प्रस्तुत है :-

आचार्य श्री पृथ्वी के समान क्षमाशील, अग्निवत तेजस्वी, जल के समान स्वच्छ, वायु की भाँति सतत प्रवाहमान तथा आकाश की तरह निर्लेप हैं। **संयम और सदाचार की ओर किसी के कदम बढ़ते हैं तो उन्हें बहुत खुशी होती है।** अभी 11 नवम्बर को प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन उनके दर्शनार्थ मण्डीदीप (भोपाल) गये थे। उनके साथ जबलपुर के विद्वान ब्र. जिनेश भैया भी थे। भैया जी ने आचार्य श्री को यह सूचना दी कि हमारी (मुनि श्री समतासागर जी की) पिच्छी प्राचार्य जी को मिली है। यह जानकर वह खूब खिलखिलाकर हँसे, उनके सिर पर स्नेह का हाथ रख और बोले-जो पिच्छी मिली है, वह तो पुरानी और प्रतीकात्मक है, नई और वास्तविक पिच्छी कब ग्रहण करोगे ? ऐसे करूणाशील और सबके हितचिन्तक हैं हमारे आचार्य श्री।

अतिथि कौन ?

पूज्य आचार्य श्री का वर्षायोग समापन की ओर था। एक दिन उन्होंने कहा-कल के प्रवचन का हमारा विषय रहेगा - अतिथि कौन ? लोगों में कानाफूसी होने लगी कि आज से पूर्व तो उन्होंने कभी नहीं बताया कि वह किस विषय पर बोलेंगे। पहली बार उन्होंने ऐसी पूर्व घोषणा की है। कल तो विशेष प्रवचन होगा। सभी लोगों को अवश्य सुनना है, चूकना नहीं है।

अगले दिन उन्हें सुनने के लिये भारी भीड़ जुटी, पर महाराज जी का कहीं अता-पता नहीं था। एक जैनैतर महानुभाव, जो प्रतिदिन दूर तक टहलने जाते थे, बताया कि महाराज जी को उन्होंने राजा के ताल की ओर देखा है। यह सुनकर प्रमुख लोगों की गाड़ियों में बैठकर भक्तजनों ने राजा के ताल (निकटस्थ एक कस्बा) की ओर दौड़ लगा दी। महाराज जी जैन मन्दिर में विराजमान थे।

भक्तों ने कहा- आज तो आप, अतिथि कौन, इस विषय पर बोलने वाले थे, आपको सुनने के लिये श्रोताओं की भारी भीड़ उपस्थित है। क्या हम लोगों से कोई भूल हो गई है महाराज, जो आप अचानक विहार करके चले आये।

नहीं, नहीं ! आप सबकी भक्ति प्रशंसनीय है। जिसके आने और जाने की कोई तिथि निश्चित न हो, वही अतिथि है-यही बताकर हम यहाँ आये हैं। कुछ बातें वाणी से बताई जाती हैं और कुछ चर्चा से।

इधर जैन नगर में जो जन-सैलाव उमड़ा था, विहार की सूचना से उनकी आँखों में आँसू छलक उठे। और तो और, रिक्शा चलाने वाले भी दुःखी थे। कह रहे थे कि चार महीनों तक उनका धन्धा खूब चला। अब सुहागनगर सूना-सूना हो गया।

सच है निर्ममत्व होते हैं जैन साधु।

यह अर्थ युग है। पद, ऐसा प्रतिष्ठा, प्रभुत्व और प्रशंसा- इन पंच पकारों को महत्व देने वाली आज की मानसिकता में पूज्य आचार्य विद्यासागर - सरीखे उत्कृष्ट सन्त किसी अजूबे से कम नहीं हैं।



अथम स्वास्थ्य योग

नाखूनों से रोग की पहचान

नाखून आपके स्वास्थ्य व सौन्दर्य का श्रेष्ठ दर्पण है। नाखूनों का स्वयं का कोई रंग नहीं होता है। वे पारदर्शी होते हैं। स्वस्थ दशा में नखों का जो मोतियों की तरह गुलाबी रंग दिखाई देता है, वह नाखून के नीचे के स्वस्थ रक्त के कारण चमकता है। यदि आप किसी नख को जोर दबाकर देखें तो रक्त के इधर-उधर सिमट जाने के कारण दूधिया रंग दिखाई देने लगता है।

जिन व्यक्तियों में रक्त की कमी रहती है या जो तनाव से ग्रस्त रहते हैं या रूग्ण रहते हैं उनके नाखून पीले या सफेद नजर आते हैं। चिकने, सफेद धब्बों व धारियों से रहित नाखून आपकी स्वस्थता व सौन्दर्य की सही पहचान हैं।

हृदय रोग :- अंगुलियों के अंतिम सिरे के ऊपर नख मुड़े हुए होना हृदय या फेफड़े के रोग का प्रतीक है।

स्नायाविक दुर्बलता :- नाखून टेढ़े या तवाकार हो तो रक्तहीनता से पीड़ित होने के कारण ऐसा होता है। नाखूनों में आड़े उभार पैदा होना नख वृद्धि में रूकावट से होता है। इसका कारण दुर्बलता एवं मुख्यतः अत्यधिक स्नायविक दुर्बलता से पीड़ित होना है। कभी-कभी बिना नाखूनों की अंगुलियों वाले बच्चे भी पैदा होते हैं। इस लक्षण वाले शिशु में बहुधा पैदायशी गंजापन पाया जाता है।

नाखून टूटना :- यदि नाखून, टूटे, त्वचा में अलग हो गये हों तो सरसों के गुनगुने तेल में अंगुलियों को दस मिनट तक डुबोयें। बाद में धीरे-धीरे मलें जिससे उनमें रक्त प्रवाह हो। यदि आपके नाखून आसानी से टूट जाते हैं तो कैल्शियम से युक्त भोजन व दुध प्रचुर मात्रा में लें। नाखूनों की सभी तरह की शिकायतों में दूध उपयोगी रहता है।

नाखूनों को मजबूत और चमकीला बनाने के लिये जैतून के तेल की मालिश करनी चाहिये, नारियल या तारपीन का तेल भी नाखूनों की स्वाभाविक चमक और मजबूत को बनाये रखता है। नाखूनों पर ग्लिसरीन मलने से इनका सूखापन दूर हो जाता है और वे सुन्दर लगने लगते हैं।

कैल्शियम की कमी :- नाखूनों में खुदरापन है, समतलता नहीं है, छोटे बच्चे नाखून चबाते हैं, ये सब कैल्शियम की कमी से होते हैं, इसकी कमी से नाखून छोटा रह जाता है या चमक जाती रहती है, या नाखून बढ़ता है तो बहुत पतला व मुलायम रहता है।

नींबू :- 1. यदि आपके नाखून बढ़ते हो तो गर्म पानी में नींबू निचोड़कर उसमें पाँच मिनट अंगुलियाँ रखे, फिर तुरंत हाथ ठण्डे पानी में रखे। इससे नाखून बड़ने लगते हैं। 2. नाखूनों पर नींबू का रस लगाने से बहुत मजबूत व सुन्दर रहते हैं। 3. नींबू का रस निकलने के बाद छिलकों को हाथों और नाखूनों पर रगड़ने से नाखूनों की चमक बढ़ जाती है।

आचार्य विद्यासागर जी एवं युवा पीढ़ी

✽ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) ✽

प्रायः देखा जाता है कि बालक, बालक से मित्रता करते हैं, वृद्ध वृद्ध की संगती करते हैं और युवा, युवा का साथ पसंद करते हैं। आज लाखों युवा आचार्य श्री जी के दीवाने हैं अथवा यूँ कहें की उनके लिये पागल हैं, और क्यों न हो गुरुदेव भले ही 71 वर्ष के हो गये हों किन्तु वे **कभी भी इतने बूढ़े नहीं होंगे** की युवा न रह सकें।

गुरु जी में अंदर का सौंदर्य देखने की अद्भुत क्षमता है। जो विद्रूपताओं में भी खूबसूरती ढूँढ लेता है वो हमेशा खुश रहता है ऐसा शख्स कभी भी बूढ़ा नहीं हो सकता है। गुरु जी के समक्ष प्रातः से संध्या तक सैकड़ों शिकायतें और समस्याएँ आती रहती हैं लेकिन वे कभी भी अपने मन को हताश नहीं होने देते हैं। कठिनाईयों और निराशा के घने तम के बीच भी वे अपना दिया जला ही लेते हैं। कहा भी है कि

माना कि घना अंधेरा है मगर दिया जलना कहाँ मना है।

समंदर को भी बहा ले जाने वाले तूफानों की बीच गुरुदेव की आत्मा से आप्त और समता की दीप निष्कंप जलता रहता है।

नवम्बर अंत 2004, तिलवारा की बात है ठण्ड बहुत तेजी से से बढ रही थी। गुरु जी जिस कक्ष में विराजमान थे उसमें 7-8 दरवाजे के आकर की खिड़किया थी, सुबह के समय तो उस हॉल में ठण्ड इतनी अधिक होती थी कि गर्म कपड़े वाले भी काँपने लग जाते थे। अनेक लोगों ने अपने स्तर के प्रयास किये पर वे असफल रहे। कई मुनिराज से किसी अन्य कक्ष में शिफ्ट होने का निवेदन किया लेकिन सभी की अर्जी नामंजूर हो गई। एक दिन एक ब्रह्मचारी जी ने हंसी करते हुए कहा गुरु जी तिलवारा में एक भव्य विधान का आयोजन होना है, जिसमें बहुत सारे ब्रह्मचारी आने वाले हैं चूँकि यहाँ जगह की कमी है इसलिये ये हॉल आपको खाली करना पड़ेगा, तो गुरु जी कहते हैं मैं भी तो एक ब्रह्मचारी हूँ क्या इस कक्ष के एक कोने में मुझे भी जगह नहीं मिल जायेगी। कोई और होता तो ब्रह्मचारी जी को इस टिप्पणी पर आंख दिखा सकता था, डांट सकता था लेकिन गुरुदेव माहौल को खुशनुमा करना जानते हैं, कर्कश शीत लहर के बीच भी वे समओ सव्वथ सुंदरो लोए को चरितार्थ कर लेते हैं।

सौंदर्य खोज लेने के इस हुनर में निपुण गुरुदेव की मनमोहक मुद्रा की युवाओं में चुंबकीय आकर्षण पैदा करती है। एक बार **आर्यिका श्री अंतरमति माता जी** ने बतलाया था कि जब वे कॉलेज में अध्ययन कर रही थी उसी दौर में गुरु जी का मदिया आगमन हुआ। उनके मन में आचार्य श्री जी के दर्शन का कौतुहल पैदा हुआ अतः सहेलियों के साथ गुरुजी ने दर्शनार्थ वे मदिया पहुंची। प्रथम बार ही गुरु जी की भव्य अलौकिक मुद्रा के निष्काम अप्रतिम सौंदर्य को देखकर वे सदैव के लिये गुरु चरणों में समर्पित हो गयीं। ये कहानी मात्र एक साधक की नहीं है

पूज्य समतासागर जी महाराज श्री सहित गुरु जी से जुड़े हर एक साधक का कमोबेश यही अनुभव रहा है।

गुरु जी के इस जादुई व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आधुनिक भौतिक विलासवादी परिवेश में कामनाओं से बजबजाती जीवन शैली में भी युवा साधकों का इतना **विशाल गुरुकुल** बन गया। ये साधक अपना तो उत्थान कर ही रहे हैं साथ ही साथ देश के कोने कोने में पहुंचकर लाखों युवाओं का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

पहले के युवा अपने से बड़ों की, गुरुओं की बात सीधे सीधे स्वीकार कर लेते थे किन्तु आधुनिक माहौल में पले पुसे युवा किसी भी बात को बिना तर्क वितर्क के स्वीकार नहीं करते। **आज के युवा वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक** बातों को ज्यादा महत्व देते हैं। गुरु जी भी किसी भी बात को कहने से पहले उसकी व्यवहारिकता पर विचार करते हैं। गुरु जी न केवल उसे तार्किक तरीके से हर एंगल से परखते हैं अपितु उसका प्रयोग भी करते हैं। गुरु जी **प्रयोगधर्मिता के एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं।**

गुरु जी **समर्पण को सफलता का मूल-मन्त्र** मानते हैं। किसी भी कार्य की सफलता के लिये पूर्ण समर्पण की जरूरत होती है। अनेक बुद्धिमान लोग समर्पण के बिना अपने कार्यक्षेत्र में असफल हो जाते हैं जबकि कुछ सामान्य बुद्धि वाले लोग समर्पण के कारण सफलता के क्षितिज को छू लेते हैं। गुरु जी ने पहले स्वयं इस मन्त्र को अपने जीवन में अपनाया है।

गुरु जी से **नेमावर** में एक भाई ने पूछा आचार्य श्री जी आपने **मात्र 4 वर्षों में इतना गहन अध्ययन** कैसे किया। प्रश्न सुनते ही गुरु जी कहीं खो गये, शायद अपने गुरु जी की स्मृति में। गुरुजी उस भाई ने बार बार निवेदन किया तो उन्होंने संकोच करते हुए बतलाया की 4 वर्ष में नहीं 2 वर्ष में, एक वर्ष तो भाषा के अध्ययन में लग गया और एक वर्ष गुरु जी की सल्लेखना के लिये समर्पित रहा। 2 वर्ष तो बड़ा समय है ऐसा एवं इससे भी अच्छा अध्ययन 1 वर्ष में भी किया जा सकता है बशर्ते

गुरु जी का यह उत्तर कितना **जीवंत और व्यवहारिक** है। उन्होंने ऐसे समर्पण का प्रयोग अपने जीवन में किया और अब इस युवा पीढ़ी को यह अमूल्य धरोहर सौंप रहे हैं। यही कारण है कि **आई आई टी जैसे संस्थानों से** शिक्षित, मल्टी नेशनल कंपनी में काम करने वाले एवं अमेरिका जैसे देश में सेवारत युवा भी आज चरखा चला रहे हैं। इतना ही नहीं अनेक सी.ए, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर भी आपके एक इशारे की प्रतीक्षा में खड़े हुए हैं।

जिन्दगी की असली उड़ान अभी बाकी है,

जिन्दगी के कई इम्तहान अभी बाकी है।

अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीं हमने,

अभी तो सारा आसमान बाकी है।।

उसे लगता है कि यदि एक **रिक्शेवाले का बेटा आई.ए.एस. बन सकता है**, एक

चाय बेचने वाला प्रधानमंत्री बन सकता है और एक गरीब धीरू भाई अम्बानी जैसा बन सकता है तो मैं क्यों नहीं ? अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये वह लीक से हटकर सोचता है, वह रिस्क लेता है, चीजों और परिस्थितियों को ऑब्जर्व करने का उसका एक अलग तरीका होता है। युवा पीढ़ी से सोचने के इस ढंग से गुरुजी न केवल परिचित हैं बल्कि उनके जीवन में भी ये सारे गुणगान विद्यमान हैं। इसलिये युवाओं के लिये उनका कहना है कि

जब हौसला बना लिया ऊँची उड़ान का फिर देखना फिजूल है कद आसमान का।

आजकल एक इंटरव्यू का वीडियो वॉयरल हो रहा है। एक युवा नौकरी के लिये इंटरव्यू देने पहुँचता है, HR कहता है Write Something वह युवक Java लिख देता है। उसका अकादमिक रिकॉर्ड बहुत अच्छा होता है लेकिन उसे HR रिजेक्ट कर देता है फिर दूसरा युवक आता है इसी प्रश्न के उत्तर में वह I love my company लिखता है उसका भी चयन नहीं होता। ऐसे करते करते बहुत सारे युवकों HR मना करता जाता है तब एक और युवक आता है उससे भी वही प्रश्न की Write Something वह युवा Something ही लिख देता है। इस युवक ने 4 वर्ष की डिग्री 6 वर्ष में पूरी की थी लेकिन उसके सहज जबावों से HR खुश होकर उसे जॉब पर रख लेता है।

गुरु जी के शिष्यत्व स्वीकार करने के लिये भी ऐसे ही बड़ी-बड़ी साधना करने वाले चर्यावान और बुद्धिमान व्यक्ति आते हैं लेकिन उनके निरीक्षण की पद्धति बहुत अलग है। बुद्धिमान रह जाते हैं और भोले भाले लोग उनकी चरण छाँव में स्थान पा जाते हैं। एक दिगम्बरत्व आचार्य द्वारा गौ शालाओं के लिये प्रेरणा और आशीर्वाद देना साधुओं और विद्वानों को अटपटा लगता है किन्तु यह उनकी करुणा की अभिव्यक्ति का लीक से हटकर एक अलग तरीका है। श्रमण संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने की पवित्र भावना के कारण वे अहिंसा बैंक, अस्पताल और मांस निर्यात आदि कार्यों के लिये जब युवाओं को प्रेरित करते हैं तो कितनी हैं तो कितनी उँगलियाँ उनकी तरफ उठती हैं। लेकिन गुरुजी का बिल पवार बहुत स्ट्रॉंग है। गुरुजी किसी की टीका टिप्पणी पर ध्यान नहीं देते, वे सोचते हैं कि

उम्र जाया कर दी लोगों ने औरो के वजूद में नुक्स, निकलते निकलते

इतना खुद को तराशा होता तो फरिस्ता बन जाते।

गुरु जी को कोई फरिस्ता कहते हैं, कोई कलिकाल तीर्थकर कहते हैं, तो कोई चलते फिरते सिद्ध कहते हैं। ये भक्तों की गुरुजी के प्रति श्रद्धा है लेकिन सैद्धांतिक दृष्टिकोण से गुरु जी भगवन नहीं हैं। पर आश्चर्य तो ये है कि हमारे जैसा ही हीन सहनन, वैसा ही प्रतिकूल वातावरण एवं इस कलिकाल की नैतिक पतनाभिमुख भौतिक संस्कृति के होने पर भी जगत को विस्मित कर देने वाली आपकी साधना का उंचाई स्तुत्य है, वंदनीय है। जगत पूज्य गुरुदेव अपने इन्ही अनूठे गुणों के कारण से आज की युवा पीढ़ी के आकर्षण केन्द्र बने हुये हैं।

स्वामी विवेकानंद जी का कहना है कि जो फूल बिल्कुल ताजे हैं, जो मसले नहीं गये

हैं और अभी सूँघे भी नहीं गये है वही फूल भगवन के चरणों में अर्पित किये जाते हैं इसलिये युवाओ तुम्हारे सुनहरे भविष्य का निश्चित करने का यही सही समय है। युवावास्था में नये जोश और उमंग के साथ काम कर अपने भाग्य का निर्माण करो तथा एक महान ध्येय का पाने के लिये अपने यौवन को अपने लिये समर्पित कर दो।

गुरु जी भी मानते होंगे कि बालकों के पास सोच नहीं होती और वृद्धों के पास उम्मीद नहीं होती इसलिये उन्होंने हमेशा युवाओं पर भरोसा जताया है। गुरुजी इस युवा पीढ़ी को प्रशासन के क्षेत्र में आने के लिये प्रेरित करते रहते हैं। गुरुजी की इस सोच के पीछे एक मजबूत कारण है कि भारत प्रकृतिक सम्पदा एवं नैतिक संस्कारों के दृष्टिकोण से तो समृद्धशाली देश है किन्तु आज विश्व समुदाय में आधुनिक विकास के मामले में बहुत पिछड़ा है, जिसका एक प्रमुख कारण भ्रष्टाचार है।

गुरु जी ने इस सत्य को पहचानकर प्रशासनिक क्षेत्र में जाने के लिये संस्कारी युवा पीढ़ी को दिशा निर्देश प्रदान किया। जिससे आज हजारों युवक युवतियाँ उच्च प्रशासनिक पद पर आसीन हो चुके हैं। गुरुदेव ने इन युवाओं अंदर इतनी ऊर्जा भर दी है कि यदि वे अपने उद्देश्यों से विचलित नहीं होते हैं तो अगले कुछ वर्षों में भारत की तस्वीर कुछ और ही होगी। ये अभिकांरी भी अपने लक्ष्य के लिये दृढ़ संकल्पित हैं। चाहे कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति आ जाये पर हार नहीं मानना है।

इनके लिये श्री अटल बिहारी वाजपयी जी ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं कि

क्या हार में क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत में

वरदान नहीं मांगूंगा हो कुछ भी पर हार नहीं मानूंगा।

आज हर मां-बाप अपने बच्चे को अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनाना चाहता है कोई उन्हें अच्छा नागरिक बनने के लिये प्रेरित नहीं करता। गुरु जी एक बार बीना बारहा में बड़े गौर से डिक्शनरी देख रहे थे मैंने पूछा आ. श्री जी कुछ खास विषय है क्या ? गुरु जी ने कहा ग्रेजुएट का अर्थ देख रहा हूँ। ग्रेजुएट का मतलब क्रमिक। इंजीनियर विज्ञान आदि की डिग्रियों में मात्र यांत्रिक ज्ञान होता है किन्तु इसमें युवाओं के व्यक्तित्व निखार के लिये कोई स्थान नहीं है। इसलिये आज इस युवा पीढ़ी के अनेक सदस्य कभी कभी आर्थिक मजबूरियाँ के कारण से अथवा कभी अपने अव्यवहारिक लक्ष्य में असफल होने के कारण से अनैतिक आचरण की ओर बढ़ जाते हैं।

यह युवा पीढ़ी कभी गुमराह ही न हो इस हेतु गुरुजी ने शिक्षा के स्तर में सुधार की जरूरत पर महत्व दिया है। जिस तरह विवेशियों ने शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर भारत को बहुत समय तक गुलाम बनाये रखा था, उसके विपरीत युवा, समाज एवं आने वाली पीढ़ी के उन्नयन के लिये गुरुजी ने शिक्षा के समीचीन करण करते हुए आवश्यक विषयों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों की शिक्षा दी जायें, उन्हे इस देश, समाज, परिवार और अपने निजी जीवन का

अर्थशास्त्र सिखाया जाये, भारतीय विधिक एवं न्यायिक व्यवस्था से परिचय कराया जाये तो इस युवा पीढ़ी की सोच में चमत्कारी परिवर्तन देखने मिलेंगे।

यदि प्रतिभास्थली मॉडल को सम्पूर्ण भारतवर्ष के बालक बालिकाओं के लिये लागू कर दिया जाये तो निः संदेह अगले 15-20 वर्षों में न केवल अपराध, अलगाववाद, आतंकवाद बेराजगारी आदि की समस्याएं नियंत्रित हो जायेंगी बल्कि विश्व के मानव विकास मानदंड में भी ऊँची छलांग देखी जा सकेगी।

धर्म के बाबद गुरुजी की सोच बहुत विस्तृत है। आप मात्र जैनियों के बारे में ही नहीं सोचते अपितु समूचे राष्ट्र के धार्मिक नैतिक उत्थान के लिये सोचते हैं। सुना था कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने गुरुजी से मिलने के उपरांत कहा था मैंने यही सोचा था कि उत्थान के लिये बाबा भी किसी मंदिर या प्रोजेक्ट के लिये जमीन या कुछ सुविधाओं की मांग करेंगे लेकिन नहीं इन्होंने चर्चा कि

1. देश के युवाओं को ज्यादा रोजगार कैसे मिले ?
2. गरीबी का उन्मूलन कैसे हो ?
3. किसानों की आत्महत्यायें कैसे रूकें ?
4. जंगलों एवं पर्यावरण की सुरक्षा कैसे हो ?

इतना ही नहीं इन समस्याओं के कुछ बेहतरीन समाधान भी गुरु जी ने सुझाये थे।

1. वहाँ उपस्थित सज्जनों के अनुसार गुरुजी ने कहा कि रेलवे कि पटरियों के दोनों तरफ खाली पड़ी लाखों हेक्टेयर जमीन को यदि कृषि कार्यों के उपयोग में लाया जायें तो लाखों कृषकों को आमदनी का अच्छा साधन मिल जायेगा।

2. गुरु जी का दूसरा सुझाव था कि यदि कुटीर उद्योगों में हस्तकरघा जैसे उपक्रम को प्रोत्साहन दिया जाये तो इससे करोड़ों युवाओं को जीविका का न्यूनतम साधन प्राप्त हो जायेंगा।

इस तरह युवा पीढ़ी और सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रति गुरुजी की करुणा के बारे में जितना भी कहा जाये बहुत कम है। गुरुदेव ने इस पीढ़ी को वो सब कुछ दिया जो किसी देश का मुखिया भी नहीं दे सकता है। अब समय है गुरुजी के संकेतों को समझकर उसे क्रियान्वित करने का। गुरुजी के अवदानों से उपकृत यह सृष्टि सदैव उनकी ऋणी रहेगी।

इतना सब कुछ देने के उपरांत भी गुरुजी कर्तृत्व भाव से बहुत दूर हैं। वो हम सब के बीच में रहते जरूर हैं पर वे जगत से अजनबी बने हुये हैं।

निदा फाजली का एक शेर गुरुजी पर प्रासंगिक है।

बदला न अपने आप को जो थे वही रहे, मिलते रहे सभी से मगर अजनबी रहे।

संयम साधना के 50 वर्षों में साधना की पराकृष्टा को छूने वाले हे गुरुदेव इतनी अनुकम्पा करना कि मेरा हृदय कभी भी आपके चरण कमलों की सन्निधि से दूर नह रहे। मेरी आत्मा के एक एक प्रदेश पर आपकी ही छवि अंकित रहे।

चलो देखें यात्रा

अक्षय धरा अतिशय क्षेत्र, ग्राम भीकमपुर, तहसील खाचरौंद जिला उज्जैन (म.प्र.)

✽ इंजी.आई.एम. जैन (पहाड़िया) ✽

भारत वर्ष के हर प्रांत में भूगर्भ से जैन प्रतिमायें खुदाई में प्राप्त हो रही हैं, वैसी ही आठ सौ वर्ष प्राचीन प्रतिमायें म.प्र. के उज्जैन जिले के खाचरौंद तहसील के गांव भीकमपुर में दिनांक 26-03-2019 को ग्राम के निवासी श्री देवीलाल सोलंकी द्वारा टैंक हेतु खुदाई के दौरान दिगम्बर तीर्थंकरों की बारह प्रतिमायें प्राप्त हुई। जो कि विक्रम संवत् 1324 से 1334 संवत् की है।

इसमें मूलनायक 1008 भगवान नेमीनाथ की श्याम वर्ण की अतिमनोज्ञ के साथ अन्य प्रतिमायें श्वेतवर्ण की हैं। दिगम्बर जैन समाज नागदा एवं खाचरोद द्वारा इन मूर्तियों को अपने अधिकार में लेकर पास ही स्थित विष्णु मंदिर के एक सुरक्षित कमरे में व्यवस्थित रूप से विराजित की गई है।

ऐसा कह सकते हैं कि प्राचीन समय में जैन बस्ती में एवं धार्मिक स्थल यहाँ रहा होगा, साथ ही राजा विक्रमादित्य की कर्म स्थली रहा होगा। परमपूज्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज के बड़नगर शहर के प्रवास के समय नागदा एवं खाचरौंद के जैन श्रेष्ठी द्वारा संपर्क करने पर आपने यहाँ (भीकमपुर में) मंदिर बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

उसी अनुसार रोड़ पर जमीन का चयन कर उसे क्रय कर लिया गया है, जहाँ पर अती शीघ्र निर्माण कार्य प्रारम्भ होना है।

यहाँ से प्राप्त वीतराग तीर्थंकरों (श्री नेमीनाथ, अरहनाथ, मुनि सुव्रतनाथ, मल्लीनाथ, चंदाप्रभु, शांतीनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी)

इत्यादि प्रभुओं की अतिमनोज्ञ और सुन्दर प्रतिमाओं के दर्शन अवर्णनीय आनंद की की अनुभूति प्रदान करेगा।

मार्गदर्शन- क्षेत्र पर म.प्र. के इन्दौर, उज्जैन, बड़नगर, रतलाम खाचरौंद से आसानी से पहुंचा जा सकता है। स्थल नागदा जक्शन एवं खाचरौंद से 10 किलोमीटर पर पक्के मार्ग पर, भीकमपुर गांव स्थित है।

संपर्क सूत्र- ट्रस्ट कार्यालय चिकित्सालय मार्ग दिगम्बर जैन मंदिर के सामने नागदा जक्शन उज्जैन म.प्र.

समीपवर्ती क्षेत्र - मुनि श्री 108 श्री प्रज्ञासागर महाराज की प्रेरणा से निर्मित श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र श्री महावीर तपोभुमी इन्दौर रोड़ उज्जैन म.प्र. जहाँ आवास एवं भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था है। सम्पर्क सूत्र :- 0734-2508103-4-5,

खाचरोद में दो जैन मंदिर में प्राचीन प्रतिमायें विराजित हैं।

सम्पर्क सूत्र :- श्री विजय सेठी खाचरौंद - 9406860181

अधिक जानकारी के लिये लेखक से मो. 9893062480 पर ली जा सकती है।

मूकमाटी (तुलनात्मक) समिक्षण

* प्रो. डॉ. रेखा जैन (बेंगलोर) *

अखिल भारत में प्रसिद्ध जैन धर्मियों के मेरूमणी विद्वान, प्रतिभावंत, संत शिरोमणि आचार्य 108 विद्यासागर मुनिराज का यह संयम सुवर्ण महोत्सव संपूर्ण देश में बड़े धुमधाम से मनाया जा रहा है। उनकी प्रतिभा और उनके प्रवचन का अनुभव याने अमृत कुंभ का पान करने जैसा लगता है। उसमें भी मूकमाटी जैसा महाकाव्य उनके प्रतिभा का मनोरम स्वप्न मानो शुद्धरूप हुआ है।

मेरे भाग्य से उनका बहुत सारा साहित्य समग्र प्रवचन ग्रंथ पढ़ने का मौका मुझे मिला था। **विद्या से विद्यासागर** इस छोटे चरित्रात्मक किताब का मराठी भाषानुवाद भी मैंने किया था। इन सबके कारण उनके विचारों का प्रभाव मुझ पर इसी दरम्यान अचानक मूकमाटी महाकाव्य पढ़ने की और उसका मराठी भाषानुवाद करने की सूचना मुझे मिली। यह महाकाव्य पढ़ना, उसका रस ग्रहण करना और उसके साथ मराठी भाषानुवाद करना यह मेरे लिये सौभाग्य था। यह सुवर्ण संधी मेरे लिये आनंद देने वाली घटना थी।

सामान्य लोगों की दृष्टि से मिट्टी एक तुच्छ पददलित उपेक्षित वस्तु समझी जाती है। लेकिन मिट्टी एक सृजन की जननी, सृष्टि निर्मिती व गंगोत्री, चेतन अचेतन का विकास करने वाली, प्राणिमात्र का संवर्धन करने वाली वह एक दिव्य भूमि भी है। वह इतिहास की जीती जागती खबर एक चिंतन जन्म स्थान एक शाश्वत पुण्य भूमि है, और उत्तम क्षमा की आदर्श मिसाल भी है।

इस चिंतन मिट्टी की युग युग से चल रही कर्म कहानी, वर्तमान भूत भविष्य से उसका न बदलने वाला स्वरूप, उसका मूक रूदन सदैव चल रहा है। इसी मिट्टी की तुच्छता में चरम भव्यता का दर्शन, उसका शुद्ध स्वरूप की ओर जाने का प्रयास इन सबका वर्णन आचार्य श्री करते हैं। इसमें आचार्य श्री की प्रतिभा, उनकी कल्पना शक्ति आध्यात्मिक अभ्यास की उत्तुंगता दिखायी देती है। उनकी निर्मल पवित्र वाणी मुक्तछंद काव्य प्रकार की परियोजना यह सब मूकमाटी यह सब मूकमाटी की काव्यानुभूति अंतरंग को लयबद्ध बना देती है। आचार्य श्री का त्यागी जीवन, उनकी तपस्या, अलौकिक बुद्धिमत्ता, अचार कल्पना सामग्र आध्यात्मिक काव्य प्रतिभा, इसकी प्रतीति इस महाकाव्य में जगह जगह पर आती है। शुद्ध चेतन ही उनकी उपास्य देवता है।

क्षणभंगूर जीवन का अर्थ बताने वाला, आक्रोश करने वाला यह मिट्टी का मूक रूदन समझ लेना जरूरी है। उसके साथ मर्त्य मिट्टी का यह अमर गान हृदय से गाना चाहिये और उसमें छिपा हुआ अमरत्व खोजना चाहिये।

कंकर पत्थरों से भरे हुए इस पददलित स्वरूप से मिट्टी का प्रवास शुरू होता है, कुंभकार उसका मंगल कलश बना देता है, इस परिवर्तन का दीर्घ प्रवास आचार्य श्री वर्णन करते हैं। यह करते समय अनेक प्रसंग, घटना लोक जीवन, के अनेक उदाहरण देते हैं। निसर्ग वर्णन करते

समय सृष्टि का सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृष्टि से किया हुआ अवलोकन, सरिता, सागर, सरोवर पशु, पक्षी, भ्रमर, वृक्ष लता इन सबका वर्णन, उनका वैशिष्ट्य और उसका घटना प्रसंग बताते हुए किया हुआ समयोचित नियोजन, यह सब उनकी उच्चकोटी की प्रतिभा शैली का दर्शन देती है और अपना मन प्रसन्न कर देती है। इन के माध्यम से किया हुआ तत्त्वज्ञान का प्रतिपादन हम आसानी से समझ सकते हैं। इस महाकाव्य में शब्दों का अर्थ मिला है, और अर्थ को परमार्थ का संयोग मिला है। मनुष्य जीवन का गूढ़ रहस्य, नश्वरता से अमरता मृत्यु की गूढ़ता इन सबका आशय संपन्न भाव काव्य में दृष्टि गोचर होता है। शुद्ध चेतन दर्शन ही अन्तिम ध्येय माना है। समता संयम अपरिग्रह अहिंसा इन शाश्वत जैन तत्त्वों का उद्घोष इस काव्य में समाया हुआ है। मन, वचन, काया की शुद्धता रखना यही मनुष्य जीवन की सार्थकता बताई है। यह शाश्वत जैन तत्त्वज्ञान बताते समय वे महाकाव्य में बीजाक्षरों के चमत्कार मंत्र विद्या का आधार आयुर्वेद शास्त्र का महिमा, अंको के चमत्कार शब्दों की कसरत, आधुनिक जीवन प्रणाली की मिसाल इन सबकी जानकारी भी देते हैं। इसलिये मूकमाटी यह एक अध्यात्म प्रचुर रोचक, महाकाव्य बना है।

आचार्य श्री के यह सभी भाव तरंग और विचारों की उत्तुंगता मराठी भाषानुवाद महाकाव्य में भी रूबरू आती है, उसके कुछ उदाहरण यहाँ देना चाहती हूँ।

पहले खंड के प्रारंभ में निसर्ग वर्णन करते हैं

हिन्दी : लज्जा के घुंघट में डुबती सी कुमुदिनी
प्रभाकर के कर छुवन से बचना चाहती है वह,
अपनी पराग को-सराग मुद्रा को
पौखुरियों की ओट देती है।

मराठी भाषानुवाद : सलज्ज पदा आड लपत से, विकासोन्मुख कुमुदिनी
प्रभाकराचे मृदुकर देखिल नकोत तिजला त्याचे स्पर्शन
पराग रूपि सराग मुद्रा, पाकुलीयांचे घेते चुंबन

जिस तरह का कोमल, भावपूर्ण शुद्धाविष्कार, आचार्य श्री के विचार रंग रूबरू दिखाते हैं। ऐसे ही दूसरी जगह सरीता तट की मिट्टी अपना हृदय खोलती है।

हिन्दी : स्वयं पतिता हूँ, और पातित हूँ औरों से
अधम पापियों पददलित हूँ माँ
सुख मुक्ता हूँ दुःख युक्ता हूँ तिरस्कृत त्यक्ता हूँ माँ
इसकी पीडा अव्यक्ता है, व्यक्त किसे सम्मुख करू....

मराठी भाषानुवाद : स्वयं पतित भी वरि पतिता, अधम पापी पदस्पर्श दलित
विन्मुख सुखाशी सन्मुख दुःखा तिरस्कृत भी अन् परित्यक्ता
व्याथा तयाची अंतरी सलते, कशी करू भी तिजला व्यक्ता

यहाँ भी मिट्टी का दुःखी अंतरंग भाव रूबरू प्रतीत होता है इस तरह कुंभकार के नामकरण के बारे में आचार्य श्री लिखते हैं -

हिन्दी : युग के आदिमें इस का नामकरण हुआ है कुंभकार
कु यानी धरती और भ याने भाग्य यहाँ पर जो
भाग्यवान भाग्यविधाता हो कुंभकार कहलाता है।
यथार्थ में प्रति-पदार्थ वह स्वयंकार होकर भी
यह उपचार हुआ है, शिल्पी का नाम कुंभकार हुआ है।

मराठी भाषानुवाद : युगारंभी कुंभकार नामकरण होते
कुंभकार कु घोटक धरतीचे
भ कार आहे भाग्याचा जो जो कोणी भाग्य विधाता
नसे कशी त्या कुंभकारिता
उपदान मृत्तिका खरि तर कुंभाकार तर निमित्त कारण
समयवायाहन महत्व त्याला त्यावचून नच कार्यप्रेरण- कंभकारता मृणून त्याल
यहाँ उपादान कारण से कर्तृत्व वाचक निमित्त कारण श्रेष्ठ दिखाया है। एक जगह

आचार्य श्री लेखनी द्वारा पूछना चाहते हैं :-

हिन्दी : यहाँ पर इस युग से यह लेखनी पूछती है कि
क्या इस समय मानवता पूर्णता भरी है
क्या यहाँ पर दानवता आ उभरी है
लग रहा है कि मानवता से दानवता कहीं चली गयी है
और फिर- दानवता में दानवता पली ही कब थी वह

मराठी भाषानुवाद : इथे नांदत्या कलि युगाला सत्य लेखणी प्रश्न करी
मानवता या भूलोकावर मरून गेली कां सगळी
दानवतेची पिकली पोळी दान भावना लुप्त तळी
मुळात दानवतेच्या हृदयी दान भावना होती कधी ?

वसुधैव कुटुंबकम् इस भारतीय पुरातन उदात्त भावना का आधुनिकी करण कैसे हुआ है
जिसका वर्णन करते हैं :-

हिन्दी : वसु यानी धन द्रव्य, धन ही कुटुंब बन गया है
धन ही मुकुट बन गया है जीवन का गया है

मराठी भाषानुवाद : वसुधा माझे कुटुंब म्हणव्या, व्यक्ति करल्या नाही कुठे
एक बदल परि निश्चित झाला कुटुंब वसुधा अर्थ बदलता
वसु शब्दाचा द्रव्य अर्थ तों कुटुंब बनला कायमचा
मुकुट बनला स्वार्थाचा कुटुंब

जिस तरह के कितने सारे सैद्धान्तिक उदाहरण पहले खंड में हमें मिलते हैं।

दूसरे खंड में साहित्य क्षेत्र के अनेक आयाम उद्घटित होते हैं। षड्रसों का वर्णन, शांत
रस की महिमा जो संतो के अंतरंग में सदैव गुंजन करती है, इसका अलौकिक, वर्णन, बदलते
ऋतुओं की महिमा और सृष्टि में होने वाला परिवर्तन उसकी मौलिकता और इनके माध्यम से

किया हुआ तत्त्वदर्शन सराहनीय है।

1. रागद्वेष आदि वैभाविक अध्यवसान का कारण है
चक्की का चक्रवह जो भौतिक जीवन के अवसान का कारण है कुलाल चक्र यह वह सान है।
2. ज्ञान ज्ञेयाकार हुआ और ध्यान ध्येयाकार
3. जब रति साथ देती है जो मान में प्रमुख होती है।

इस तरह की मौलिक सिद्धान्त की काव्य पंक्तियां जिस महाकाव्य में सभी जगह बिखरी
हुई मिलती हैं।

शब्द का अर्थ समझना बोध है, और यही बोध आचरण में लाना शोध है। **उत्पाद,**
व्यय ध्रौव्य युक्तं सत् सृष्टि के इस नियम का व्यावहारिक भाषा में विवेचन किया है, कहते हैं
आना याने जनन उत्पत्ति, जाना याने मरण व्यय, ध्रौव्य याने स्थैर्य स्थिरता है। यह संसार का
सत्य और तथ्य है, यह शाश्वत सत्य इस सूत्र में समझाया है।

तीसरे खंड में दया धर्म का मूल है इसका प्रतिपादन किया है। इस खंड में माता का
सन्मान, महिला, नारी, कुमारी, सुता इन शब्दों के अर्थ, और यह अर्थ महिलाओं के लिये
उनका व्यक्तित्व दिखाने के लिये कितने महत्वपूर्ण हैं इसका वर्णन सुलभता से किया है। माटी
के विकास के लिये पुण्य कर्म श्रेयस्कार है और पाप कर्म कितना अनर्थकारी है जिसका विवेचन
भी करते हैं। सत्य धर्म का जय जयकार और महत्व बताते हैं। चंद्र, सूर्य, तारामंडल, मेघ, जल
धी, इन की विशेषता और भाव तरंग दिखाने के लिये उनका यथोचित इस्तेमाल किया है। भेद से
अभेद की ओर प्रवास करते समय समत्व दृष्टि का महत्व कथन करते हैं। साधक की आंतर दृष्टि
में निरंतर साधना की यात्रा होनी चाहिये, यह संदेश भी हमें मिलता है।

चौथा खंड बड़ा और विस्तृत वर्णनात्मक है। मिट्टी का कुंभ बन जाता है, उस के जीवन
की इति श्री हो जाती हैं तब साधक पूछते हैं मुक्ती-तृप्ति किससे मिलती है ? तब संत श्री उत्तर देते
हैं। मर्म बताते हैं अध्यात्म सदा चिद्रुपातचि, भास्वत है शाश्वत है। सेवक परिपक्व कुंभ हाथ में
लेता है और हाथ से बजाकर देखता है उससे मानो सा, रे, ग, म की ध्वनि निकलता है उसका
आचार्य श्री अद्भूत अर्थ निकालते हैं - सा-रे ग-म याने सभी प्रकार के दुःख प-ध याने पद
स्वभाव और नि, याने नहीं, दुःख आत्मा का स्वभाव नहीं है। ऐसी ही यह अद्भूत शक्ति अपूर्व
संगीत कैसे आता है। इस सवाल का जबाब देते हैं- अविरत श्रम दृढ़ संकल्प मन/सत् संस्कार
का सार्थक यह संदेश युवा नयी पीढ़ी को मार्गदर्शन देता है।

ऐसे ही मृदंग का ध्वनि- धा धिन् धिन् धा.....

इस संगीत सूरों में चित् की चिन्ता चली जाती हुई संत श्री को दिखती है। इस खंड में मुनि
आहार का विधिवत् विस्तृत वर्णन किया है। भक्तों की भावना आहार देने का आनंद, आहार होने के
बाद लौटते समय आने वाली तृप्ति और विशाद ऐसे संमिश्र भावतरंगों का आचार्य श्री वर्णन करते हैं।

इस खंड में पूजा-उपासना के उपकरण आपस में वार्तालाप करते हैं उससे मानव जाती

के गुण अवगुण और मनोभाव प्रतीत होते हैं।

स्वर्णकलश और आतंकवाद के उदाहरण से आज के भौतिक सुखवादी जीवन के संदर्भ मिलते हैं। इससे आज की समाज व्यवस्था का विश्लेषण हो जाता है। सुख, शांति, संपदा के बारे में कहते हैं धन, द्रव्य से सुख लाभ होगा ऐसा नहीं है धन के पीछे मत पड़ो यह संदेश देते हैं। तन और मन के स्वास्थ्य और आरोग्य के लिये कहते हैं श, ष, स, यह तीन बीजाक्षर महत्वपूर्ण हैं। श से कषायों का शमन होता है। स से समता प्राप्त होती है, और ष से पाप और पुण्य के चक्कर से बच जाते हैं। इससे आंतरिक परिवर्तन होता है। और बाह्य शरीर चिकित्सा के लिये माटी पानी और हवा शत्रुओं की एक दवा इस तरह का संदेश देते हैं। आयुर्वेद चिकित्सा करने में अपाय नहीं, असाध्य नहीं, और खर्चा भी नहीं जैसे आयुर्वेद वैद्यक शास्त्र की प्रशस्ती करते हैं पथ्य का महत्व चिकित्सा में महत्व बता देते हैं।

यह समग्र संसार दुःख से भरा हुआ है, सुख क्षणभंगूर वैषयिक स्वरूप का है। शास्वत, अविनश्वर सुख कहाँ है हमें उसकी जानकारी दो इस तरह का आतंकी प्रश्न पूछते हैं, तब संत श्री कहते हैं गुरु तो प्रवचन दे सकते हैं, मार्ग दिखा सकते हैं, आत्मा का उद्धार तो अपने पुरुषार्थ से करना पड़ता है, शाश्वत सुख वचनों से बताया नहीं जा सकता, उसका अनुभव करना पड़ता है। यह कहकर गुरुवर एकाग्र चित्त होते हैं और मूकमाटी परिसर निहारती रहती है।

इस मूल हिन्दी भाषा में लिखा हुआ महाकाव्य का मराठी भाषानुवाद मुनि समाधि सागर जी ने किया है और इस तरह मराठी भाषारूपांतर का प्रयास प्रो. डॉ. रेखा जैन ने भी किया है। मूल हिन्दी महाकाव्य में जो आचार्य श्री के उत्तुंग विचार, कल्पना वैभव, भावतरंग अध्यात्म प्रतिपादन यह पैहलू मराठी भाषा रूपांतर में यशस्वी प्रयत्न हुआ है। भाषानुवाद करते समय मूल संहिता में आने वाला विषय, शब्दार्थ, भावार्थ, इसमें थोड़ी भी गलती और बदल न करने का प्रयास लेखक द्वयों ने किया है। दूसरी बात यह है कि, हर एक भाषा का अपना अलग सौंदर्य है। जिनकी जो मातृभाषा है उन्हें उनकी मातृभाषा में साहित्य पढ़ने का आनंद मिलता है, उनके लिये उसका अर्थ समझना, रस लेना आसान हो जाता है।

हिन्दी और मराठी भाषा में मुहाँवरे और कहावते लगभग एक जैसे हैं, इसलिये अनुवाद करने में आसानी भी होती है। और अनुवाद अर्थ पूर्ण होता है। मराठी भाषा में अनुप्रास, यमक, वृत्त इनकी योजना सुलभ तरीके से की है। इसलिये मराठी अनुवादित काव्य को संगीतयम ज्ञेयता आयी है। इसलिये दोनों मराठी भाषा रूपांतरित दोनों ग्रंथ अतुलनीय हुये हैं।

हिन्दी महाकाव्य में आचार्य श्री के जो तत्त्व विचार हैं, जो कहना चाहते हैं वह परीपूर्णता: मराठी अनुवादित ग्रंथों में आ चुका है।

इस अध्यात्मिक सरल महाकाव्य निर्मिति से आचार्य शिरोमणि 108 विद्यासागर मुनि श्री ने वीतरागी श्रमण संस्कृति चिरंतन रखने में महान योगदान दिया है। इसका लाभ सभी भक्तगण, अध्यात्म के अभ्यासक, संशोधक, साहित्यसिक लेते रहेंगे जैसी शुभ भावना व्यक्त करती हूँ, और प. पू. आचार्य श्री त्रिवार वंदन करते हुए यह समिक्षण पूर्ण करती हूँ।



मोक्ष भूमियों की परिचायक निर्वाण भक्ति

आचार्य पूज्यपाद जी ने अपनी भक्ति की शृंखला में निर्वाण भक्ति की रचना करके सिद्ध क्षेत्रों और भगवान महावीर के जीवन की घटनाओं को वर्णित किया है। पूज्य आचार्य श्री ने लगभग सोलह सौ (1600) वर्ष पूर्व उन तीर्थों का परिचय कराने का प्रयास किया है। तो तीर्थ सघन वनों के एकांत में पर्वतों पर स्थित थे। जहां देव तो सहजता में जा सकते थे परन्तु मनुष्यों का आगमन दुर्गम था ऐसे तीर्थों का प्रमाणिक परिचय जन मानस को प्रदान करके आचार्य श्री ने श्रमण संस्कृति पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

निर्वाण भक्ति में मंगलाचरण—देवों के पति नर नागेन्द्र खगपति भूतेन्द्र और यक्षेन्द्र से जो अभिवंदित हैं तथा जिन्हें अतुल अचर विपुल विमल निरूपम सुख प्राप्त हुआ है जिनके पांच कल्याणक हुए हैं जो तीन लोक के परम गुरु हैं तो भव्य जनों को सृष्टि प्रदान करते हैं ऐसे सन्मति वर्धमान महावीर भगवान का मैं भक्ति पूर्वक स्तवन करता हूँ। प्रस्तुत मंगलाचरण में जहां इन्द्र देवों से पूजनीयता बताई हैं वहीं आत्मीक सुख वैभव को भी परिलक्षित किया है।

निर्वाण भक्ति में भगवान महावीर—भगवान महावीर के गर्भ कल्याणक के विषय में प्रस्तुत भक्ति में कहा गया है कि भगवान महावीर पुष्पोत्तर स्वर्ग का सुख भोगकर हस्तोत्तर चन्द्रमा की स्थिति में आषाढ शुक्ल षष्ठी को विदेह कुण्डलपुर नगर में सिद्धार्थ राजा के महारानी प्रियकारिणी अपर नाम त्रिशला देवी के गर्भ में सोलह स्वप्न देकर आये थे। चैत्र शुक्ल त्रयोदशी उत्तरा फाल्गुन नक्षत्र में सौम्य शुभ लग्न में जन्म लिया था अगले दिन चतुर्दशी को हस्त नक्षत्र में पाण्डुक शिला पर रत्न कलशों से अभिषेक हुआ था। तीस वर्ष तक कुमार अवस्था में रहकर देवों द्वारा उपलब्ध कराये गये भोगों को भोगा था तथा अचानक उदासीनता व वैराग्य आपको प्राप्त हुआ मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी को आपने परिनिष्क्रमण किया चन्द्रप्रभ नाम की पालकी में बैठकर कुण्डलपुर से बाहर निकले थे तथा दशमी के दिन दो दिन का उपवास करने के उपरांत मुनि वर्धमान ऋजु कूला नदी के तट पर बसे जूँभिका ग्राम में आहार लिया तथा 12 वर्ष तक तपस्या की वैसाख शुक्ल दशमी हस्तोत्तर नक्षत्र में क्षपक श्रेणी आरोहण करने के बाद चार घातिया कर्म को नाश करके केवल ज्ञान की प्राप्ति की तथा राजगृही के वैभार गिरि पर्वत पर समवशरण की रचना कुबेर ने की तदुपरांत अनेक नगर में धर्म देशना विहार किया। कमलों से संपन्न पावा नगर के उद्यान में कार्तिक कृष्ण अमावस्या स्वाति नक्षत्र में भगवान महावीर स्वामी ने आठों कर्मों को नष्ट कर निर्वाण की प्राप्ति की देव तरू रक्तचंदन काला चंदन गोशीर्ष, आदि सुगंधित द्रव्यों से अग्नि कुमार देवों ने अपने मुकुट की अग्नि से भगवान महावीर की पूजा करते अंतिम संस्कार किया था।

क्र.	तीर्थभूमि	मोक्ष गये महापुरुष	जिला	प्रदेश
1.	अष्टापद (कैलाश पर्वत)	प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान	चमोली गढ़वाल	उत्तराखण्ड
2.	चंपापुर	वासुपूज्य भगवान	भागलपुर	बिहार
3.	पावापुर	महावीर भगवान	नालंदा	बिहार
4.	गिरनार	नेमीनाथ भगवान प्रद्युम्नकुमार, अनुरुद्ध कुमार शंभुकुमार	जूनागढ़	गुजरात

क्र.	तीर्थभूमि	मोक्ष गये महापुरुष	जिला	प्रदेश
5.	सम्मेद शिखर	बीस तीर्थकर	गिरीडीह	झारखंड
6.	शत्रुंजय (पालीताना)	युधिष्ठिर, भीम अर्जुन पाण्डव	भावनगर	गुजरात
7.	मांगीतुंगी	राम, हनुमान सुग्रीव नील महानील	नासिक	महाराष्ट्र
8.	पावागिरी	स्वर्ण भद्र मुनि	झांसी	उत्तरप्रदेश
9.	सिद्धवरकूट	दो चक्रवर्ती दस काम देव	खंडवा	मध्यप्रदेश
10.	विपुलाचल (राजगृही)		नालंदा	बिहार
11.	द्रोणागिरी	गुरुदत्तमुनि	छतरपुर मध्यप्रदेश	
12.	मुक्तागिरि	ढाई करोड़ मुनि	बैतूल	मध्यप्रदेश
13.	पोदनपुर			
14.	गजपंथा		नासिक	महाराष्ट्र
15.	कुण्डलपुर	श्रीधर केवली	दमोह	मध्यप्रदेश
16.	पावागढ़	लव कुश	पंच महाल	गुजरात
17.	तारंगा	वरदत्तादि डेढ़ करोड़ (मुनि)	मेहसाना	गुजरात
18.	नैनागिर	सागरदत्तादि	छतरपुर	मध्यप्रदेश
19.	कुंथलगिरि	देशभूषण कुलभूषण	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र
20.	आरा पटना	सेठ सुदर्शन	भोजपुर	बिहार
21.	बावनगजा	इंद्रजीत कुंभकरण	बड़वानी	मध्यप्रदेश
22.	पावागिरि (ऊँन)	चिलाती पुत्र	खरगोन	मध्यप्रदेश
23.	मथुरा चौरासी	जम्बू स्वामी	मथुरा	उत्तरप्रदेश
24.	सोनागिर	नंग अनंग कुमार	दतिया	मध्यप्रदेश
25.	गुनावा नवादा	गौतम गणधर	पटना	बिहार
26.	उदयगिरि खंडगिरि	पांच करोड़ मुनि	कटक	उड़ीसा
27.	नेमावर	रावणपुत्र आदि कुमार	देवास	मध्यप्रदेश
28.	बड़ागाँव धसान		टीकमगढ़	मध्यप्रदेश
29.	सूर्य पहाड़ी		गया	बिहार

प्रस्तुत निर्वाण भक्ति में 29 तीर्थों का नाम निर्देश मिलता है। इस तरह से आचार्य पूज्यपाद जी ने तीर्थ वन्दना के भाव को साकार करने के लिये निर्वाण भक्ति का सृजन किया है। भगवान महावीर स्वामी का अधिकृत परिचय इस भक्ति में उपलब्ध होता है। अंतिम तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण भक्ति के केन्द्र में क्यों रखा यह विषय चिन्तनीय हैं।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता मई 2019

जल ही मेरा जीवन

प्रथम-

सूखे कुआ सरोवर सारे
जल बिन सभी तड़पते मारे
मैं भी थोड़ा पानी पाकर
फुदकू अपने पंख फैलाकर
जलसे बचपन जलसे यौवन
जल ही मेरा है जीवन

श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)

द्वितीय-

पर्यावरण बिगड़ा है जब से

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
अप्रैल 2019 के विजेता

प्रथम : इन्द्रकुमार जैन (ककरवाहा)

द्वितीय : अंकित जैन (इन्दौर)

तृतीय : श्रीमति कमला जैन (खरगोन)

त्राहि त्राहि मची है तब से
जल, जीवन करते सब वन
जल ही मेरा जीवन

श्रीमति रानू जैन (दिल्ली)

तृतीय-

मानव लोभी इतना बनता
विषय भोग में इतना रमता
अपने सुख दुःख खूब समझता
औरों का दुःख दर्द ना दिखता
व्यसन वासना में पागल बन
जब मदमाता होता यौवन
स्वार्थ बिगाड़े प्रकृति के साधन
जल ही मेरा जीवन

श्रीमति इन्द्रा जैन (इन्दौर)

वर्ग पहेली क्र. 238
अप्रैल 2019 के विजेता

प्रथम : श्रीमति आभा जैन (इन्दौर)

द्वितीय : श्रीमति अर्पणा जैन (अहमदाबाद)

तृतीय : कु. रश्मि जैन (भोपाल)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : मई 2019 का हल

- | | | |
|----------------|--------------|---------------------------------|
| 01. सिद्ध | 18. उज्जवल | 35. गुणों |
| 02. प्रदर्शन | 19. भविष्य | 36. वात्सल्य |
| 03. दिग्दर्शन | 20. कर्मयोग | 37. भूलना |
| 04. तप | 21. मुक्ति | 38. तन |
| 05. अलौकिक | 22. खुद | 39. स्वर्णिम |
| 06. हर्षमय | 23. आत्मा | 40. अनुकूलता |
| 07. कमजोरी | 24. योगी | 41. चार |
| 08. वास्तविक | 25. श्रमणत्व | 42. सनावद |
| 09. भावों | 26. श्रमण | 43. दो |
| 10. मन | 27. उपयोग | 44. 20 मार्च 2019 |
| 11. ममत्व | 28. कर्मण | 45. 4 से 10 मार्च |
| 12. योगी | 29. सरल | 46. श्री वावनगजा में |
| 13. अज्ञान | 30. जिह्वा | 47. श्री बालचंद हीरालाल
दोशी |
| 14. ब्रह्मचर्य | 31. संशोधन | 48. धर्मात्मा रानी जक्किरबबे |
| 15. चेतन | 32. संयम | 49. उदयपुर (राज.) |
| 16. समय | 33. साधना | 50. 20 अप्रैल 2018 |
| 17. अलंकार | 34. गुणी | |



पुस्तक प्रेरणा

स्नेह त्याग की कठिनता

परिचितः प्रणयः खलु दुस्त्यजः ॥

कदाचित् वह देव स्वर्ग में उत्तमोत्तम स्त्रियों के बीच बैठा था कि उसने अचानक ही अपनी पूर्वभव की स्त्री वनमाला को अवधिज्ञान का विषय बनाया अर्थात् अवधिज्ञान के द्वारा उसका विचार किया सो ठीक ही है क्योंकि परिचित- अनुभूत स्नेह बड़ी कठिनाई से छूटता है।

कामग्रहीतस्य का मर्यादा क्रमोऽपि कः ।

तदनन्तर उसने पुत्री मनोहरी का कर ग्रहण स्वयं ही कर लिया सो ठीक ही है क्योंकि काम रूपी पिशाच से ग्रहीत मनुष्य की मर्यादा क्या है ?

भावार्थ- कामी मनुष्य सब मर्यादाओं और क्रमों को छोड़ देता है।

तावद्भार्यादयो यावन्मर्यादा संस्थितः प्रभुः ।

राजा दक्ष की रानी इला देवी, पति के इस कुकृत्य से बहुत की रूष्ट हुई इसलिये उसने पुत्र को पिता से फोड़ लिया-अलग कर लिया सो ठीक स्वामी मर्यादा में रहता है- मर्यादा का पालन करता है।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. इ आ ण ग उ इ य र ई र् आ अ क् ज् श् म् त् ई म् आ त् आ
2. इ श् उ भ र् अ आ अ क् ज् श् म् त् ई म् आ त् आ
3. इ अ स्य उ न् अ क् ज् श् म् त् ई म् आ त् आ
4. इ आ भ व् अ न आ अ क् ज् श् म् त् ई म् आ त् आ
5. इ अ त् न् अ न् अ क् ज् श् म् त् ई म् आ त् आ

परिणाम :

मई 2019: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी
(4) अर्हत वचन (5) शोधदर्श

फिजियोथैरेपी में अवसर

केरियर



देश ही नहीं दुनिया भर की बीमारियों और शारीरिक अक्षमताओं के इलाज के लिये दवाईयों बाज थैरेपी का चलन बढ़ा है। दवाईयों की अपेक्षा इसके साइड एफेक्ट कम होते हैं।

फिजियोथैरेपी मेडीकल साइंस की एक ब्रांच है फिजियो से मतलब शरीर के बाहरी हिस्से का इलाज करना है। व्यायाम इलेक्ट्रोथैरेपी व मसाज जैसी तकनीकी की मदद से इलाज करना थैरेपी कहलाता है। फिजियोथैरेपी रोगी की शारीरिक इलाज के साथ साथ मानसिक तौर पर भी बीमारियों से लड़ने के लिये उसे शसक्त बनाती है। पोलियो अस्थिमा सर्जरी के बाद रिहैबिलिटेशन मांशपेशियों और हड्डियों के रोग या दूसरी क्रॉनिक बीमारियों से उबरने में फिजियोथैरेपी की अहम भूमिका होती है इसके कोर्स के अंतर्गत छात्रों को मानव शरीर की संरचना मेडिकल साइंस और स्किल ट्रेनिंग के बारे में सिखाया जाता है।

कैसे ले सकते हैं प्रवेश

साइंस स्ट्रीम से पढ़ाई करने वाले छात्रा इस में कैरियर बना सकते हैं फिजियोथैरेपी के बैचलर कोर्स में प्रवेश के लिये न्यूनतम 50 फीसदी अंको के साथ फिजिक्स, केमिस्ट्री बायोलॉजी ओर इंग्लिश विषयों से बारहवी की परीक्षा पास होना आवश्यक है इसके बाद छात्र बैचलर ऑफ फिजियोथैरेपी कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं इसमें प्रवेश एंट्रेंस टेस्ट के स्कोर के आधार पर मिलता है यह कोर्स 3-4 वर्ष का हो ता है इसमें अंतिम 6 महीने में छात्रों को इंटर्नशिप करनी होती है बायोलॉजी या संबंधित स्ट्रीम से बैचलर डिग्री करने वाले छात्र इसके मास्टर कोर्स में प्रवेश लेकर फिजियोथैरेपी में कैरियर बना सकते हैं।

कविता

तकरार

✽ संस्कार फीचर्स ✽

दो जहाँ की छोड़ दी पतवार मैंने
छोड़ दी महफिल सभी सिंगार मैंने
जनिले मंजिल चलूंगा मैं अकेला
उलझनों को कर लिया स्वीकार मैंने
कैसे रिझायेगी मुझे तेरी इनायत
रोशनी के बन्द खोले हार मैंने
कैसे करेगी अब कोई मुझमें तकाजा
ना लिया दुनिया से कोई उधार मैंने
नहीं कीमत कोई गुल की बिना खुशबू
बुत परस्ती से नहीं जूनत मिलेगी
बाइजो से मोल भी तकरार मैंने



दुनिया भर की बातें



अप्रैल 2019

■ 1 अप्रैल

- नेपाल में तूफान बारिश 35 लोग मरे 600 घायल हुये।

- भारतीय सीमा से 4 पाक युद्धक विमान और ड्रोन गुजरे भारत के सुखोई 30 और मिराज देखते ही लौटे।

- मनी लान्ड्रिंग मामले रॉबर्ट वाड्रा को सशर्त जमानत मिली।

■ 2 अप्रैल

- अमरनाथ यात्रा के लिये पंजीयन प्रारंभ हुआ।

- बीड : (महाराष्ट्र) बाड़वानी तहसील के चिंचन गाँव में बैल गाड़ी पर रखी टंकी गिरने से दो बच्चों की मौत हुई।

- जयपुर : विवाह समारोह मांस मिठाई खाने से विवाह समारोह में 35 लोग बीमार हुए जान की मुश्किल पड़ी।

■ 3 अप्रैल

- जगदलपुर : बस्तर के केन्द्रिय जेल में 12 साल से बंद निर्मलक्का उर्फ विजयलक्ष्मी 157 केस में बरी हुई।

- रोम (इटली) संकरी चट्टानों के बीच फंसी गाय को निकालने के लिये हेलीकाप्टर से एयर लिफ्ट किया गया।

- अल्जीरिया के राष्ट्रपति अब्दुल अजीज बुतेफ्लिका ने इस्तीफा दिया वे 20 साल से पद पर थे। उनके खिलाफ देशभर में प्रदर्शन हो रहे थे।

■ 4 अप्रैल

- कांकेर : पुलिया निर्माण के सुरक्षा देने जा रहे बी.एस.एफ की टीम पर नक्सली हमला हुआ 4 जवान शहीद हुआ।

- रिजर्व बैंक ने रेपोरेट 0.25% घटाया जिससे होम और ऑटो लोन सस्ते होंगे।

- यू.ए.ई. के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन जायद ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सर्वोच्च नागरिक सम्मान देने की घोषणा की।

■ 5 अप्रैल

- केशव गुरुगेश को ने स्कॉम का नया चेयरमैन चुना गया।

- इंदौर के भाजपा प्रत्याशी घोषणा में देरी होने से लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने चुनाव लड़ने से इंकार किया।

- नोपोलियन की पत्नी को लिखे पत्र 4 करोड़ में नीलाम हुआ।

■ 6 अप्रैल

- 29 साल तक भाजपा में रहने वाले शत्रुघ्न सिन्हा कांग्रेस में शामिल हुए।

- अ. भा. फुटबॉल महासंघ के अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल फीफा के पहले भारतीय सदस्य बने।

- रूस पहला देश बना जिसने आर्कटिक पर सेन्य बेस बनाया मिसाइल तैनात की।

■ 7 अप्रैल

- मुख्यमंत्री कमलनाथ के करीबी रिस्तेदारों के ठिकाने पर 300 आई.टी. अफसरों ने छापा मारे।

- एन.जी.टी ने आंध्र प्रदेश सरकार पर

100 करोड़ का जुर्माना लगाया अध्यक्ष जस्टिस आदर्श कुमार गोयल ने आदेश दिया।

■ 8 अप्रैल

- चुरू : राजस्थान केशेखावटी में 125 कि. मी. की रफ्तार से तूफान आया दिन में रात हुई।

- भाजपा ने 2019 लोकसभा चुनाव का घोषणा पत्र जारी किया।

- मेलबर्न : शाकाहार समर्थकों ने प्रदर्शन किया 38 गिरफ्तार हुये।

■ 9 अप्रैल

- दंतेवाड़ा विधायक भीमामंडवी का वाहन नक्सलियों ने विस्फोट से उड़ाया विधायक सहित 4 जवान शहीद हुये।

- म.प्र. मुख्यमंत्री कमलनाथ के करीबी रिस्तेदारों के पास आयकर छापा मारी में 281 करोड़ की वे हिसाबी नकदी मिले।

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने अहं फैसले में कहा कि ससुराल ने निकाली गयी महिला कहीं भी केस कर सकती है।

■ 10 अप्रैल

- चुनाव आयोग ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बायोपिक एवं नमो टीवी पर रोक लगायी।

- सुप्रीम कोर्ट में राफेल मामले में नये दस्तावेजों के आधार पर सुनवाई को तैयार हुआ।

■ 11 अप्रैल

- देश के 10 राज्यों में चुनाव समाप्त हुए वहाँ 68 % मतदान हुआ।

- प्रो. नज्मा अख्तर जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी की पहली महिला कुलपति बनी।

- सूडान के राष्ट्रपति उमर अल बशीर ने 30 वर्ष बाद सेना के दबाव में इस्तीफा दिया।

■ 12 अप्रैल

- झारखंड के चीफ जस्टिस अनिरुद्ध बोस एवं गुवाहटी के चीफ जस्टिस ए.एस. वपन्ना सुप्रीम कोर्ट के जज बने।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को रूस का सर्वोच्च सम्मान ऑर्डर ऑफ सेट एंड्यू द एपोस्टल देने की घोषणा हुई।

- पाकिस्तान के क्वेटा में आतंकी हमले में 29 लोग मरे।

■ 13 अप्रैल

- सिलीगुड़ी : कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी के विमान उतरने की मंजूरी नहीं मिलने से रैली रद्द हुई।

- बडगाम (जे.के.) जिले के चडुरा गाम में पी डी पी में महबूबा मुफ्ती के समर्थकों ने रैली में नकील हथियार लहराये।

- सूडान के सेना प्रमुख अब्बाद इब्न ऑफ ने इस्तीफा दिया।

■ 14 अप्रैल

- पुलवामा: जिले सुरक्षा बलों ने एक आतंकी ठिकाना खोजा भारी मात्रा आपत्ति जनक सामग्री बरामद की।

- नेपाल के एवरेस्ट क्षेत्र में लकुला हवाई अड्डे पर एक विमान रनवे से फिसलने से 33 लोग मरे।

■ 15 अप्रैल

- चाँदीपुर : (उड़ीसा) सेनिक कूज निर्भय मिसाइल का परीक्षण सफल हुआ।

- दक्षिण अमेरिका में तूफान से 10 लोग मरे 80 से ज्यादा घायल हुये दो लाख घरों की बिजली गुल हुई। 2500 फ्लाईट कैन्सल हुई।

- भोपाल : माखनलाल विद्यालय के पूर्व कुलपति श्री के कुठालिया सहित 20 फ़ोफ़ेसर्स पर धोखा धड़ी के मामले दर्ज हुए।

■ 16 अप्रैल

- म.प्र. के गाँव दुर्जनपुर का नाम बदल कर शिवधाम के लिये केन्द्र ने मंजूरी दी।

- नासा ने पृथ्वी के आकार का ग्रह सौर मंडल के बाहर खोजा

- पेरिस :- 12वीं सदी नोट्रे डाम कैथेड्रल चर्च जल खाक हुआ।

■ 17 मार्च

- म.प्र. गुजरात में तूफान बारिस के कारण 80 लोग मरे।

- राजस्थान की कांग्रेस सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अपने बकील रूचि कोहली को हटाया। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी के खिलाफ मीनाक्षी लेखी ने मामला दर्ज किया।

- दक्षिण सूडान में तैनात 150 भारतीय सैनिकों को संयुक्त राष्ट्र संघ का शांति रक्षक पदक मिला।

■ 18 अप्रैल

- लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान हुआ 95 सीटों पर 66% वोट पड़े

- सारे मोदी चोर कहने पर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी पर मान हानी का मामला दर्ज हुआ।

- पाकिस्तान के वित्त मंत्री असद उमर ने इस्तीफा दिया।

■ 19 अप्रैल

- भोपाल : भाजपा उम्मीदवार प्रज्ञा ठाकुर ने 2611 के शहीद हेमंत करकरे को देश द्रोही कहा।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात) कांग्रेस नेता हार्दिक पटेल को एक व्यक्ति ने चोंटा मारा।

भीड़ ने उसे बुरी तरह पीटा।

- नेपाल ने पहला सेटोलाईट लॉन्च किया जिसका वजन 1.3 किलो तथा खर्च 2 करोड़ रुपये हुये।

■ 20 अप्रैल

- एयर फोर्स ने सुरक्षा कारणों से अभिनंदन वर्धमान विंग कमाण्डर का ट्रांसफर कश्मीर से किया गया।

- नौ सेना का विध्वंसक पोत इंफाल का मुम्बई में जलावतरण हुआ।

- अबु धाबी में पहले मंदिर का शिलान्यास हुआ।

■ 21 अप्रैल

- श्रीलंका में 8 सीरियल धमाके हुए 3 चर्च और 3 होटलों में धमाके हुये 208 लोगों की मौत हुई 450 घायल हुए।

- तिरुचिरा पल्ली :- मंदिर के सिक्का लेने की भीड़ में भगदड़ में 4 महिलाओं सहित 7 की मौत हुई।

- पाकिस्तान ने जलियांवाला कांड से जुड़े दस्तावेज प्रदर्शित किये।

■ 22 अप्रैल

- राहुल गाँधी ने सुप्रीम कोर्ट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को चौकीदार चोर कहने पर खेद जताया।

- फिलीपिंस में 3 दिन में 5 बार भूकम्प आया तीव्रता 6.4 भी।

- दिल्ली में आप-कांग्रेस गठबंधन में दरार पड़ी कांग्रेस ने शीला दीक्षित को उतारा।

■ 23 अप्रैल

- फिल्मी अभिनेता सन्नी देओल, गौतम गंभीर गायक हंसराज हंस भाजपा में शामिल हुए।

- लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण का मतदान 116 सीटों के लिये हुआ।

- आतंकी संगठन आई एस ने श्रीलंकार में हुए हमले की जिम्मेदारी ली।

■ 24 अप्रैल

- उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी के बेटे रोहित शेखर तिवारी की हत्या का खुलासा क्राईम ब्रांच ने किया उनकी पत्नी अपूर्वा शुक्ला को गिरफ्तार किया उसने गला घोटकर हत्या की।

- साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर को चुनाव लड़ने से रोकने वाली याचिका एन आई ए की अदालत ने खारिज की।

- फिल्मी अभिनेता अक्षय कुमार ने पत्रकार की भूमिका में आकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इन्टरव्यू ली।

■ 25 अप्रैल

- उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन और रूस राष्ट्रपति ब्लदि मोर पुतिन पहली बार मिले।

- उत्तराखंड के रानी खेड नगरी में दुर्लभ उनुन गिलहरी मिली।

- केरल में चक्रवात तूफान आया 64% उड़ाने रद्द हुई।

■ 26 अप्रैल

- पहला रोबोट बनाने वाले वैज्ञानिक निल्स निल्सन का निधन हुआ।

- सूरत : सत्र न्यायालय ने कथा वाचक आसाराम का बेटा नारायण को दुष्कर्म का दोषी पाया।

- मधुवन: मुनि श्री पुष्पदंत सागर जी की आकस्मिक समाधि उपरान्त अन्तिम संस्कार हुआ।

■ 27 अप्रैल

- एयर इण्डिया का सर्वर फेल होने से 5 घंटे तक 155 उड़ानें प्रभावित हुईं।

- आतंकी आइ.एस. के बांग्ला पोस्टर से पश्चिमी बंगाल में हाई अलर्ट जारी किया गया।

- कोलम्बो : श्री लंका में आतंकी ठिकाने पर छापे के दौरान चार आतंकियों ने खुद को उड़ा लिया 55 मरे।

■ 28 अप्रैल

- राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने आइ एस आइ एस से जुड़े संदिग्ध आतंकियों को केरल से गिरफ्तार किया।

- अबूधाबी प्रेट्र : संयुक्त अरब अमीरात (यू ए ई) ने पहली बार भारतीय हिन्दू पिता और मुस्लिम माँ की संतान को जन्म प्रमाण पत्र दिया।

- भुवनेश्वर : नक्सलियों ने कंधमाल जिले के फिरंगिया थाना अंतर्गत फेलर पंगा गांव में एक ठेकेदार की गोलियों से भूनकर हत्या कर दी।

■ 29 अप्रैल

- भाजपा सांसद मीनाखी लेखी के द्वारा अर्ज अवमानता मामले में राहुल गांधी ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दाखिल कर खेद जताया।

- श्रीलंका में नकाब बुर्के पर प्रतिबंध लगा।

■ 30 मार्च

- कथा वाचक आसाराम के बेटे नारायण साँई को दुष्कर्म मामले में सेशंस कोर्ट ने उम्र कैद की सजा सुनाई।

- वाडिया समूह के वारिस नेस वाडिया को जापान की एक अदालत ने ड्रग्स रखने के आरोप में 2 साल की सजा सुनाई

- जापान के राजा अकिहितो ने गद्दी छोड़ी नारुहितो नये राजा बने।

इसे भी जानिये

भारत के नगर और उद्योग

नगर	राज्य	उद्योग
अलीगढ़	उत्तरप्रदेश	ताले
अम्बरनाथ	महाराष्ट्र	मशीन टूल्स
आनन्द	गुजरात	मक्खन पनीर दूध
आगरा	उत्तरप्रदेश	संगमरमर, चमड़ा, दरी
अहमदाबाद	गुजरात	सूती वस्त्र
अम्बाला	हरियाणा	वैज्ञानिक सामग्री
आवडी	तमिलनाडु	हैवी टैंक (विजयन्त)
बंगलूर	कर्नाटक	टेलीफोन, मशीन टूल्स, मोटर्स
बरेली	उत्तर प्रदेश	रेजिन, लकड़ी का काम
बैलाडिला	छत्तीसगढ़	खनिज लोहा
बस्ती	उत्तर प्रदेश	फल अनुसंधान
भण्डारा	महाराष्ट्र	विस्फोटक पदार्थ
चण्डीगढ़	पंजाब	भवन निर्माण
चितरंजन	पं. बंगाल	लोकोमोटिव
कोलकाता	पं. बंगाल	बल्बस लैम्प
दिल्ली	दिल्ली	डी.डी.टी. सूती कपड़ा इंजीनियरी सामान
डिन्डीगुल	तमिलनाडु	सिगार तथा तम्बाकू
दासनगर हावड़ा	पं. बंगाल	छपाई खाना
देवरी	राजस्थान	जस्ता
एरनाकुलम	केरल	केबिल्स
फरीदाबाद	हरियाणा	ट्रेक्टर एवं कृषि यंत्र व इंजीनियरिंग सामान
ग्वालियर	मध्यप्रदेश	चीनी के बर्तन, सूती वरेयन कपड़ा
गोमिया	झारखण्ड	विस्फोटक पदार्थ
हिसार	हरियाणा	भेड़ों का फार्म
सूरियस	तमिलनाडू	छोटे शस्त्र
तिरुपति	आंध्र प्रदेश	पर्लयामा स्कूटर्स



दिशा बोध

सच्ची प्रेमिका कौन ?



प्रश्न 1. प्रेमिका किसे बनाना चाहिये ?

उत्तर प्रेमिका करुणा, कुशलता और मैत्री भावना को बनाना चाहिये।

प्रश्न 2. कंठगत प्राण होने के बाद भी किसके सामने समर्पण नहीं करना चाहिये ?

उत्तर मूर्ख, घमण्डी, कृतघ्न के सामने समर्पण नहीं करना चाहिये।

प्रश्न 3. पूज्य कौन है ?

उत्तर सम्यक् चारित्रवान व्यक्ति पूज्य है।

प्रश्न 4. निर्धन किसे कहते हैं ?

उत्तर अस्थिर चरित्र वाले निर्धन हैं।

प्रश्न 5. यह संसार किसने जीता है ?

उत्तर यह संसार सहनशील और सत्यवादी पुरुषों ने जीता है।

प्रश्न 6. देवों के द्वारा किसके लिये अच्छे से नमस्कार किया जाता है ?

उत्तर दया प्रधान पुरुष के लिये देवों द्वारा नमस्कार किया जाता है।

प्रश्न 7. बुद्धिमान को किससे डर होना चाहिये ?

उत्तर बुद्धिमान को संसार रूपी जंगल से डर होना चाहिये।

प्रश्न 8. सभी प्राणी किसके वाश में होते हैं ?

उत्तर विनयशील, सत्य और प्रिय बोलने वाले के वश में संसार रहता है।

आगे भव्यता पीछे पिछड़ता जैन समाज

* डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन भारती (बुरहानपुर) *

भव्य है हमारा जैन समाज और भव्य है उसकी आयोजनात्मक भव्यता। अभी चातुर्मासों की भव्यता तो हमने देखी ही है, पिच्छि परिवर्तन और नवीन दीक्षाओं की, अब पंचकल्याणकों और महामस्तकाभिषेकों की भव्यता भी दिखाई देने लगी है। हम एक से चौबीस तक, लाख से करोड़ तक और करोड़ से करोड़ों तक के आयोजन भव्यता के साथ कर रहे हैं, करने की योजना बना रहे हैं। मुझे विश्वास है कि प्रेरक गुरुओं का सान्निध्य और आशीर्वाद इन योजनाओं को भव्यता के साथ सफल भी करवा देगा। हमारी भी शुभकामनायें हैं।

लेकिन जो भव्यता ऊपर-ऊपर दिखाई दे रही है वह नीचे तक भी है, विचारणीय है। आज क्या कारण है कि इतनी भव्यता के बावजूद हमारे तीर्थ स्थल सुरक्षित नहीं हैं, संरक्षित नहीं हैं? यहाँ तक कि हमारे तीर्थ स्थलों पर प्रबंधक एवं पुजारी भी जैन नहीं हैं। गाँव से लेकर नगर तक मंदिरों में प्रतिदिन देव दर्शन करने वालों की संख्या घट रही है। इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अधिक भीड़ वात्सल्य भोज में दिखाई देती है। भोजन नहीं तो भजन नहीं। भजन करवाना है तो भोजन करवाना जरूरी है। एक बार मैंने दिल्ली में एक उपनगर में देखा कि धार्मिक आयोजन के बाद लोगों को आलू के समोसे और ब्रेड के सेण्डविच खिलाये जा रहे हैं। मैंने आयोजकों से कहा- यह तो अभक्ष्य है? तो उनका उत्तर था कि लोग यहाँ तो इसी के लालच में इकट्ठे हो जाते हैं। वरना धार्मिक आयोजन में उपस्थिति कम रहती है तो हमारे विरोधी ही हमारा मजाक उड़ाते हैं। अब हम क्या कहते कि इस भव्यता से हमारा समाज अभक्ष्य भोजी बनता जा रहा है। इसके लिये जिम्मेदार कौन है?

आज हमारे पास अच्छे स्कूल, कॉलेज नहीं हैं। अच्छे पुस्तकालय नहीं हैं। साधुओं के लिये विशेष रूप वृद्ध साधुओं के लिए आश्रम नहीं हैं। वृद्ध होने पर जिन परिजनों को उन्होंने दीक्षा लेते समय त्याग दिया था उन्हीं को बुलाकर कहा जाता है कि अब इनकी सेवा करो। इस तरह निर्मोही को मोही बनाया जाता है।

अनेक आबालवृद्ध नर-नारी ऐसे हैं जो भीषण बीमारियों से अर्थ के अभाव में प्रतिदिन भगवान् से मौत मांग रहे हैं। देश में ऐसा कोई व्यक्ति या संस्था नहीं है जो कहते कि चलो, हम तुम्हारा इलाज करवाते हैं। जो अस्पताल समाज ने बनाये भी हैं उन पर चंद लोगों ने अपनी बपौती बना ली है वे ना तो कुछ करते हैं न हटते हैं। वे चाहते हैं कि एम.डी. डॉक्टर भी उन्हें देखकर सलाम ठोके।

उच्च शिक्षा के लिए आज कोटा, पूना, बेंगलोर, हैदराबाद, मुम्बई, दिल्ली प्रसिद्ध हैं। किन्तु यहाँ जैन छात्रों के लिए छात्रावास एवं शुद्ध भोजन की भी व्यवस्था नहीं है। परिणाम यह है कि शाकाहारी एवं मांसाहारी (संयुक्त) भोजनालयों तक में इन्हें भोजन करते हुए देखा जा सकता है। मैकडोनल्ड जैसे रेस्टोरेंट क्या खिलाते हैं?

आज जैनों के नाम हत्या, आत्महत्या में भी आने लगे हैं। आर्थिक धोखाधड़ी और लव-जिहाद के शिकार भी जैन हो रहे हैं। धार्मिक शिक्षण का अभाव है। मैं भव्यता दिखाने वालों से

पूछना चाहता हूँ कि इनके लिये आपके पास क्या योजना है?

बंगाल, बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक के अभाव ग्रस्त जैनों की एक बड़ी संख्या है। जिन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार से वंचित रहना पड़ रहा है। इनकी सुध कौन लेगा?

आज साधु तेजी से विहार करते हुए श्रवणबेलगोला की ओर जा रहे हैं। डोली, ट्राई साइकिल, हाथ ठेला पर साधु चल रहे हैं। तलुवों में टेप चिपका रखे हैं। क्योंकि जल्दी पहुँचना है। ईर्या पथ शुद्धि का तो सवाल ही नहीं, वृत्ति परिसंख्यान और समुचित पड़गाहन, दोपहर के सामायिक के लिए भी समय नहीं है। क्या यह भव्यता के लिए दौड़ हमें जैनाचार से दूर नहीं ले जा रही है। ऐसे ही न जाने और कितने प्रश्न हैं जिनके लिए जिम्मेदार हमारी ऊपरी भव्यता है और ग्रास रूट लेवल पर तैयारी का अभाव। हमारे पिछड़ते हुए स्वरूप की चिन्ता कौन करेगा? आइए, हम भी कुछ सोच रहे हैं, आप भी कुछ सोचें।

कविता

आदमी

* वीरेन्द्र भूपत *

खो गया हे आदमी- आदमी की भीड़ में
खो गई संवेदना- किसी अंधेरी नीड में
खोजता हूँ आत्मीयता- आदमी के भेष में
प्रेम अन्वेषण निरर्थक- आडम्बरो के देश में
स्वार्थ पर लोलुप- दिखा हर आदमी
नीचता से नीच-होता जा रहा है आदमी
आईना अन्धे- दिखाने लग गये हे
कब बुराई देखता है- आप अपनी आदमी
चाहता हूँ आदमी की आदमीयत जाग जावे
मन से उसके बैर कटुता भाग जावे
तब प्रगट होंगी- मनुजता भगवत्ता
जब हृदय से प्रेम का राग गायें
नीच बन जाता है आदमी सजायें दे दे कर
जीतना चाहिये आदमी को दुआयें दे दे कर
घर थे घरों पर नाम थे, नामों पर ओहदे थे
मैंने मेरे शहर में खुद ढूँढा मुझे आदमी न मिला।



कहानी जिद

विस्तर पर गरिमा करवट बदल रही थी उसकी आँखों से नींद ने कुट्टी कर ली थी। चिन्ता के मृगनयनी गरिमा के सुन्दर नयन पर अपना कब्जा कर लिया था गरिमा के नेत्रों में गंगा यमुना के स्रोत बन चुके थे। गरिमा के मन में प्रतिशोध की आग भी धधक रही थी। गरिमा के अंदर अपनी भटकी



जीवनसाथी हो, बने, वह हमसफर होने के साथ-साथ मेरी हर बात का हामी होवे। गरिमा अपने आप को भाग्यशाली मानती रही। उसके पति गौतम ने गरिमा के गौतम के साथ रहते हुए मात्र सात साल व्यतीत किये। सात सालों में गौतम में जो परिवर्तन आया, वह अप्रत्यासित है घटना बनी। गरिमा को ऐसा लगा रहा है

राह को पुनः पुनः अपनी आँखों में फेर रही थी। बीच बीच कुछ कुछ बुदबुदा रही थी।

अतीत की स्मृति में खोई गरिमा सदैव वह सोचती थी जब वह अपने महाविद्यालयी जीवन उसने जो सपना देखा वह साकार नहीं वह उन सभी गर्लफ्रेंडों की बातों को याद करती रहे जब वे उसे स्वर्ग की अप्सरा कहा करती थी मेरी मृग जैसी नयनों का जब आईने में देखती थी तो सचमुच में अपने आप गर्व का अनुभाव करने लगती थी।

गरिमा कि एक ही सोच रही है, कि मैं ऐसी जिंदगी जिधूँ जिसमें कोई रोक टोक न हों। सारा काम मेरी दिल की चाहत से घूमने फिरने कि मुझे स्वच्छंदता हो। जो भी मेरा

जैसा कि कोई नाव समुद्र के बीच से कोई खेवटिया खेते-खेते मुश्किलों के बाद किनारों तक लाता है, पर किनारे पर अचानक तूफानों से घिर जाती है, और नाव डूब जाती है। गरिमा को अपनी सुंदरता की तारीफ सुनने का जो आनंद वैवाहिक जीवन के प्रारंभ में एक वर्ष तक मिला, वह आनंद का स्रोत अचानक अवरूद्ध हो गया। देखते हि देखते आनंद के स्रोत का प्रवाह नहीं रुका अपितु वह सूख भी गया।

गरिमा को अपनी जिंदगी का वह पल खूब याद आ रहा था, जब गौतम अपने तर्कों के माध्यम से परिवार को जोड़ने के सूत्र गरिमा को बताया करता था। सबसे पहले

गौतम कहा करता था परिवार में संवाद-शीलता परिवार में प्राण वायू का काम करता है। संवाद-हीनता जिस परिवार में होती है, उस परिवार के प्रेम का ढांचा बिखर जाता है। धन और धर्म परिवार से पलायन कर जाते हैं। परिवार चिड़ियों के घोंसले से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है, सीखना है तो सीख लो, उन चिड़ियों से जो एक एक तिनके को इकट्ठा करके मात्र घोंसला ही नहीं बनाती, अपने घोंसलें को सदैव याद रखती हैं। अपने दोनों पंख फैलाकर चिड़िया अपने अंडों को सहलाती हैं। तथा अपनी चों चों में दाना रखकर अपने बच्चों को खिलाती हैं। जिससे उनके घोंसले में प्रेम पलवित होता रहता है। प्रेम और सेवा का गहरा संबंध होता है। सेवा के बीज से ही प्रेम का अंकुरण होता है। सेवा यदि दीपक है तो प्रेम प्रकाश है। सेवा का तेल जब तक नहीं होगा तब तक प्रेम का दीपक कैसे जल सकता है।

गरिमा गौतम की इन सब बातों का याद करते ही अपनी आँखों की नम कर लेती थी। गरिमा की आँखें से बहने वाला नीर तकियां की खोली को गीला कर रहा था।

सामूहिक भोजन और भोजन बनाने के महत्व को गौतम ने सदैव मुझे समझाने का प्रयास किया। लेकिन मेरी ही एक जिद रही घर में जब सब सम्पन्नता है और अपार सम्पत्ती है तो फिर मैं खाना बनाऊँ यह तक मुझे कभी समझ में नहीं आई जब हमारे पास साधन है तो हमें उसका उपयोग अवश्य करना चाहिये यह मेरा सोच रहा है।

गरिमा की आँखों में बहुत बड़े-बड़े सपने तैरते रहें है एक महारानी बनने का सपना था। सुखी बनना चाहती थी अपनी जिन्दगी को यश-और आराम से बिताना चाहती थी परन्तु हाय किस्मत जो मुझे आज इस स्थिति में खड़ा कर चुकी है मैं नहीं समझ पा रही हूँ। आखिर यह सब क्यों और कैसे हो गया। जिस सांवली सी सूरत वाली लड़की को मैंने सीधा-साधा समझा था। वह इतनी चालाक निकलेगी मैंने कभी नहीं सोचा था जिसका रंग सांवला एवं अनपढ़ सी एक लड़की जो नितान्त अव्यवहारिक घर और परिवार की मर्यादाओं को नहीं समझने वाली आठवी फेल लड़की में गौतम उलझ गया दूसरी ओर मैं गोरी सुन्दर पढ़ी-लिखी व्यवहार कुशल एक रईस परिवार की बेटी एम.ए पास कही भी नौकरी कर सकती थी परन्तु जिसके पिता के पास अरबों की सम्पत्ति हो उसे क्या नौकरी करना उचित माना जायेगा बड़े नाजों से पली फूल सी कली मैं गरिमा खाना बनाती यह क्या मेरा अपमान नहीं था उनका तो यही यही कहना रहा कि जब हम अपने घर में अपने हाथ से भोजन बनायेंगे तो हमारे घर में संवाद हीनता का वातावरण नहीं बनेगा। प्रेम का संचार अबाधित होता रहेगा। संवाद शून्यता से परिवार टूट जाते हैं। परिवार का समीकरण प्रेम करुणा के साथ संवेदना से मिलकर बनता है। गौतम के विचार सदैव स्पष्ट रहे कि नौकर नौकरानी के द्वारा बनाया भोजन कभी भी प्रेम वात्सल्य के संस्कारों की नींव नहीं

रख सकता है और वह यह भी हमेशा कहा करते थे कि फिर हम भोजन होटल में ही खायें या फिर किसी टिफिन सेंटर से सम्पर्क कर लें वहाँ से ही बना बनाया भोजन आया करेगा हम सब अपनी अपनी सुविधानुसार टिफिन खोलेंगे खा लिया करेंगे।

गरिमा आसमान की तरफ देखती और अपने तकिया को थोड़ा सा खिसका लेती तथा करवट बदलती और चादर से मुँह ढक कर नींद लेने की कोशिश करती परन्तु नींद ने तो उसकी आँखों नहीं आने की कसम जैसी ही खा रखी थी कई रातें गरिमा की ऐसे ही करवट बदलने में ही गुजर गई कभी वह खुद को कोसती तो कभी गौतम को तो कभी अपनी नौकरानी रखने की जिद पर पछताया करती रहती थी। परन्तु उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि इस गौतम को फिर से अपना कैसे बनाया जाये। कई बार वह अपने पिता धर्मेन्द्र को फोन करके मध्यस्थ बनकर कुछ समाधान निकालने का प्रयास करने को कहती किन्तु वे एक ही बात कहते हैं कि यह मामला आप दोनों का है आप दोनों ही मिलकर सुलझायें मुझे बीच में लाने की कोशिश न की जाये तो ही बेहतर है परन्तु गरिमा यह ही कहती है कि पापा जी आप के बिना हम अकेले कैसे इतनी बड़ी समस्या का हल निकाल सकते हैं।

धर्मेन्द्र एक ही बात कहते शादी के पहले तुमने ही तो सारा निर्णय लिया था कि पापा जी मैं अगर अपनी जिंदगी सुखी रह सकती हूँ। तो मात्र गौतम के साथ अन्य

किसी के साथ नहीं। उसमें मैंने गरिमा तुम से कहा था कि कहीं ऐसा न हो कि गौतम तुम्हें धोखा दे जायें क्योंकि मैं जानता था कि धनाढ्य लोगों की नियत और नीति कब डगमगा जाये इस भरोसा नहीं किया जा सकता है जो व्यापार में भी किये गये वादे को तोड़ने में माहिर होते हैं वे मेरी बेटी से किये गये वादे को क्या तोड़ नहीं सकते हैं।

तब गरिमा तुम याद करो तुमने कहा था कि मैं प्रेम को डोरी से गौतम को इतना मजबूती से बाँधूंगी कि वह कभी भी इधन का उधर भी नहीं हो पायेगा। अब बताओं गरिमा। यह सब कैसे हो गया। कहाँ गई तेरी प्रेम की डोरी। पाप जी के इस सवाल के आगे मैं लाजबाब हो जाती हूँ क्योंकि शादी में भी मेरी ही पसंद और मेरी ही जिद चली थी। मुझे गौतम के प्यार पर पूरा भरोसा था पर सच यह पानी का रंग कभी भी बदल सकता है मौसम कभी भी करवट बदल सकता है और आदमी की चाल भी बदल सकती है यह मुझे कतई मालूम नहीं था। भावना में बहकर मैंने जो निर्णय लिया आज वही मुझे परेशानी का सबब बना चुका है। काश मैंने अपने पापा जी के अनुभव का लाभ लेकर उनके अनुसार कुद किया होता तो आज यह दुख का पहाड़ मेरे ऊपर नहीं टूटता।

इधर गरिमा अपनी गलती और जिद पर अफसोस कर रही थी वहीं गौतम अपनी आँखों से गरिमा की फोटो पूरी तरह से हटाकर डस्टबिन में डाल चुका था। माया की माया उसे इतनी लुभा चुकी थी कि उसे

गरिमा अब कोई पुरानी पुस्तक सी लगते लगी। माया के हाथ के बने भोजन ने गौतम को इतना लुभा लिया था कि वह नहीं चाहते हुए भी माया को निकट सरकता चला गया अब वह रोटी बनाने वाली माया से यही कहता है कि माया अब तुम्हारे सिवाय और कोई दूसरा अब मेरी आँखों की पलकों में नहीं बस सकता है। मुझे अब महारानी के नखरों से विरक्ती हो गई है। और तुझ जैसी नौकरानी से प्रगाढ़ आसक्ती हो गई सच्चे प्रेम को माया मैंने तेरे अंदर जो पाया है वह कहीं नहीं मिला।

गौतम के इस कथन पर माया भी चूकती नहीं थी। हास्य विनोद करती हुई बोल देती थी कभी तुम यह बात गरिमा से भी तो कही थी। माया की बात सुनकर गौतम मुस्करा कर कहने लगा व्यंग की भाषा को छोड़कर माया। और कोई भाषा का प्रयोग किया करें क्योंकि व्यंग सुनने सुनाने थोड़ा रख तो पैदा करता है किन्तु इस बात कभी नहीं भूलना चाहिये कि व्यंग वह कड़वा रस जो रिस्ते की मिठास का समाप्त कर देता है।

मैं माया! बस तुम्हें एक विश्वास ही दे सकता हूँ कि मैंने रिस्ता बनाने में कोई जल्दी बाजी नहीं की है यदि रिस्ता बनाया है तो उसे निभाऊँगा जरूर।

माया ने अपनी बात दूसरे शैली में कहना शुरू की एक बात मैं आप कह दूँ कि मुझमें आपने कौन सी ऐसी बात देखी जिससे अपनी विवाहिता पत्नी को छोड़कर मेरी खाना पकाने वाली साँवली अनपढ़ औरत के पीछे लग गये। और गरिमा दीदी जो मेरी

मालकिन भी उनको आपने लगभग किनारे कर दिया मुझे यह बात सोचकर हमेशा विचित्र सा लगता है कि मैं एक परिवार बिगाड़ने वाली सबसे बड़ी पापिन हूँ। मैं इस पाप से कैसे उबर पाऊँगी यह सोच कर मेरे मुँह से पश्चाताप की आह भी निकल जाती है। सचमुच झेल ली है अब मुझे उनकी हाय झेलना चाहिये आज तक हमने जो कुछ भी वह पाप ही हो किया है अब मुझे आज्ञा दे कि मैं नौकरानी जैसी रहूँ और गरिमा दीदी इस परिवार मालकिन फिर से बन जायें।

अच्छा आप यह बताओं कि किसी के हक को छीनता पाप नहीं है। बोलो और आप सच बतायें पाप है या नहीं।

गौतम माया की सुनकर बहुत गम्भीर हो गया कुछ देर तक बिना कुछ बोले ही खड़ा रहा उसकी गर्दन नीचे से ऊँची नहीं हुई। माया ने अपनी कुहनी गौतम के कंधे पर रखकर कहा अब हम बस करें रास्ता बदल ले आप गरिमा के हो जायें मैं आप और गरिमा के बीच से सदैव के लिये हट सकती हूँ।

गौतम गम्भीर होकर माया से बोला माया तुम्हारा कहना ठीक है तुम्हें इस घर में लाया कौन। तुम यदि इस घर में नहीं आती तो क्या मैं तेरे घर जाने वाला था उस गरिमा की एक ही जिद थी मैं खाना नहीं बनाऊँगी बस आप तो खाना बनाने वाली बाई रखिये। मैंने तो तुझे पंसद किया नहीं वही तुझे लायी तो यह क्यों नहीं कहा जाये इस सब बिगाड़ने के पीछे सिर्फ गरिमा की जिद है। ठीक है मैं तेरे कहने से तुझे भूल जाऊँगा और गरिमा को होकर रहूँगा।

नवागढ़ (नंदपुर) पाषाण युग का एक सांस्कृतिक क्षेत्र

✽ प्रो. गिरिराज कुमार, आगरा ✽

नवागढ़ जिसको नंदपुर के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन सभ्यता का स्थल है। यह उत्तरप्रदेश के महारौनी तहसील जिला ललितपुर में मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के सीमा पर 78.80° देशान्तर एवं 24.34° अक्षांश में स्थित है। यह मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ से 30 कि.मी. झांसी (उ.प्र.) से 130 कि.मी. तथा ललितपुर उ.प्र. से 65 कि.मी. पर अवस्थित है। बुंदेलखण्ड जो खजुराहो तथा ओरछा के मंदिरों के लिये विश्वप्रसिद्ध है, का एक हिस्सा है, जिसकी स्थापना गुप्तकालीन शासकों ने की थी।

श्री जयकुमार निशांत जो नवागढ़ के जैन मंदिर के प्रमुख कार्यकर्ता हैं, इन्होंने नवागढ़ की फाइटोन पहाड़ी के पास जैन पहाड़ी में कुछ शैलाश्रय एवं पाषाण चित्र खोजे हैं। उन्होंने कुछ मन के तथा अन्य पुरातत्व सामग्री जो प्राचीन रहवासी प्रयोग करते थे खोजी है। उनकी बहुत तीव्र रुचि इस क्षेत्र का सांस्कृतिक, पुरातात्विक इतिहास जानने और उसको प्रमाणित करने की है, यही कारण है कि वे चाहते हैं कि पाषाण कला एवं अन्य स्थलों का पाषाण कला विशेषज्ञों के द्वारा अवलोकन एवं अध्ययन करवा जाये। इस हेतु उन्होंने मुझे इस क्षेत्र आमंत्रित किया। उनके आमंत्रण पर मैं तथा डॉ. अभिमन्यु जो संस्कृत व्याकरण के सहायक प्रोफेसर हैं, 28 जनवरी 2019 को क्षेत्र पर पहुंचे और स्थान एवं क्षेत्र का अवलोकन अन्वेषण किया।

यहां पर पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प के द्वारा खोजा गया दसवीं शताब्दी का एक जैन मंदिर है। जिसका जीर्णोद्धार जैन ट्रस्ट के द्वारा स्थानीय लोगों की सहयता से ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत जो पं. गुलाबचन्द्र पुष्प के पुत्र हैं, के कुशल निर्देशन में किया गया। वर्तमान में यह सुन्दर मंदिर जीवन्त कृति है और लोगों के द्वारा पूजित-अर्चित है।

नवागढ़ ग्रेनाइट संरचित क्षेत्र है। यहां पहाड़ी के ऊपर प्राचीन रहवासियों के साधन के कुछ अवशेष प्राप्त होते हैं, पहाड़ी गांव के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहां से कुछ बर्तनों के अवशेष प्राप्त होते हैं, पहाड़ी गांव के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहां से कुछ बर्तनों के अवशेष तथा प्राचीन दुर्लभ सामान यथा मिट्टी तथा पाषाण के मन के, धातु उपकरण आदि प्राप्त हुये हैं।

मंदिर के पश्चिम में 1.5 किमी. की दूरी पर एक ग्रेनाइट की पहाड़ी है जिसको सिद्धों की टोरिया कहा जाता है। यहां पर ग्रेनाइट की एक विशाल चट्टान है जो उपर से नीचे तक दो भागों में दरार के द्वारा विभाजित है। उस पर एक कप मार्क बना है जो लगभग वृत्ताकार है। यह चट्टान लगभग 8.6×6×3.5 मीटर लम्बी, चौड़ी ऊंची है। इस चट्टान के क्वार्ट्स क्रिस्टल की संरचना 1.2-0.4 मि.मी. तक है। चट्टान पर एक पैट्रोलिक कप मार्क के रूप में बना है, जिसका माप 60×66×26.5 मिली मीटर है। क्षरण के कारण यह जानना संभव नहीं हो पाया कि किसी तकनीक से इसका निर्माण किया गया था। यह प्रत्यक्ष दबाव (ठोककर) तकनीक के द्वारा या धातु की छैनी का प्रयोग कर बनाया गया। यह सुनिश्चित नहीं हो पाया है। फिर भी इसकी सतह को देखकर लगता है कि इसमें गतिज ऊर्जा का स्थानान्तरण हुआ था, जिसका वर्तमान में कुछ

अवशेष मात्र है। बाकी क्षरण के कारण समाप्त हो गया है। यह एक मात्र कप मार्क है। जिसे हम लोगों ने इस क्षेत्र पर पाया है। लेकिन हम ऐसे और अवशेषों की आशा करते हैं अतः इस क्षेत्र पर गहन खोज होनी चाहिये। जिससे ऐसे अनेक अवशेष प्राप्त हो सकें।

पाषाण चित्र- एक अन्य पहाड़ी है जिसे फाइटोन हिल्स कहा जाता है। यहां पांच चट्टानें (फाइव स्टोन) अवस्थित हैं। इसी कारण इसे फाइटोन कहा जाता है। यह स्थल नवागढ़ गांव से पश्चिम में लगभग 3 किमी. पर स्थित है। यहां पर एक पाषाण गुफा (राक शैल्टर) में कुछ पाषाण चित्र एक बड़ी ग्रेनाइट चट्टान पर मिले हैं। गुफा 3.3 मी. लम्बी, 3 मीटर गहरी एवं 1.55 मीटर ऊंची है। इसमें स्पष्ट रूप से दिखने वाले कुछ जानवरों के चित्र, ज्यामितिक आकृतियां बनी हैं, जो पूर्व पाषाण (माइक्रोलिथिक/मैसोलिथिक) काल के जंगली पशु 6 से 10 हजार वर्ष प्राचीन हैं। इनका संरक्षण आवश्यक है। एक व्यक्ति ने अपना नाम वीर गुर्जर गहरे और मोटे अक्षरों से सफेद खडिया से लिखा है।

संरचना संख्या - 1

इसमें एक जंगली पशु जो बाइसन (जंगली भैंसा/ जंगली बैल सांड) जैसा दिखता है। दाहिने तरफ तीन ज्यामितिक आकृतियां बनी हैं, जो इसके सामने हैं, तथा एक के ऊपर एक हैं। बाइसन 16.5 × 17 सेमी. नाप का है तथा इसका शरीर खड़ी बहु रेखाओं द्वारा सज्जित है तथा सींग पूर्ण विकसित एवं मुड़े हुए हैं। इसके सामने एक ज्यामितिक रचना है जो कम तिरछी रेखाओं द्वारा भरी हुई है। इसके बाद दो आयताकार खंड हैं। इस रचना का नाप 50 × 44 सेमी. है जो एक शैल्टर की दाहिनी दीवाल पर बना हुआ है। ये चित्र लाल रंग से महीन ब्रश के द्वारा बनाये गये हैं। इसके ऊपर गेरूआ रंग से मोटे ब्रश द्वारा जो एक रेखा के अवशेष हैं। इसके बगल में गहरे लाल रंग से बने तीन चिन्ह हैं शायद बाद में बनाये गये हैं। एक वर्गाकार चित्र बना है। चट्टान की सतह उखड़ने के कारण इस चित्र का कुछ दाहिना हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया है।

यह चित्र लवण की सफेद परत से ढक रहा है। इसके अलावा लाल रंग से बना एक जानवर का रेखाचित्र है, क्षरण के कारण इसका रंग हल्का पड़ गया है। यह महीन ब्रश से बना है। इन रचनाओं से यह स्पष्ट झलकता है कि ये चित्र तीन चरणों में बनाये गये हैं। जिनमें से दो जानवरों की पूर्वकालिक पाषाण युग की तथा तीसरी बाद के काल की है।

संरचना संख्या 2

शैल्टर की दीवाल के बायें तरफ 7 टेडी-मेडी रेखायें हैं जो कि मध्यम चौड़ाई के ब्रश द्वारा लाल रंग से एक के ऊपर एक बनाई गई हैं। यह रचना 20×17 से.मी. की है। इसके अतिरिक्त दो ज्यामितिक आकृतियां महीन ब्रश से लाल रंग से बनाई गई हैं। बायें तरफ की आकृति जो 11×10 सेमी. है लगभग वृत्ताकार है और एक केन्द्र वाले दो वृत्तों के बीच के स्थान का सीधी रेखाओं द्वारा सुसज्जित किया गया है। बायी ओर की 16×12 सेमी. की आकृति को आड़ी रेखाओं द्वारा दो भागों में बांटा गया है, नीचे का हिस्सा अपेक्षाकृत बड़ा है और वह 6 अर्थ चन्द्राकार वाली मुड़ी रेखाओं द्वारा सज्जित किया गया है। ऊपरी हिस्सा 9 रेखाओं द्वारा असमान भाग में विभाजित है। यह आकृतियां मोटे सफेद रंग की परत से आवरित है। इसके सिवा रॉक शैल्टर की छत पर उखड़े लाल रंगी की पूर्व आकृतियों की अवशेष हैं।

जैन साधु की पाषाणाकृति-

पाषाण की एक सकरी गुफा में दीवाल पर जैन साधु की आकृति उकेरी हुई है। इस गुफा में हम घुटनों के बल चलकर अंदर पहुंचे। संभवतः यह स्थान जैन साधुओं के द्वारा ध्यान और प्रार्थना के लिये उपयोग में आता होगा तथा किसी ने यह चित्र उकेर दिया होगा। यह 50 सेमी. ऊंचा और 25 सेमी. चौड़ा है। इसके दाहिने हाथ में कोई वस्तु है जो स्पष्ट नहीं दिखती थी।

पाषाण की कुल्हाड़ी

लगभग 500 मीटर गांव के पश्चिम में स्थित पहाड़ी की ढलान पर चर्ट पर बनी एक छोटी हेण्ड एक्स मिली है। यह अच्छी तरह निर्मित है और इसका बेंट 120 डिग्री पर बना है जिसका कुछ हिस्सा उखड़ गया है, सिरा टूट गया है किनारे टेढ़े-मेढ़े हो गये हैं क्योंकि आगे-पीछे दोनों तरफ की 5-5 पर्तें उखड़ गई हैं। किनारों की रिटचिंग दोनों तरफ से की गई है। इसका रंग हल्का पीला है।

द्वितीय अन्वेषण

दिनांक 27-28 मार्च 2018 को नवागढ़ आकर मैंने पूरे क्षेत्र का विधिवत निरीक्षण किया। यहां मुंडी टौरिया, बंगाज टौरिया, पनियारा नाला के आसपास निरीक्षण करने पर छोटी हैन्डेक्स 53.8×39×15 मि.मी. पेटीनेटिड चर्ट 38.3×26.0×10 मि.मी. की तिकोनी आकृति एवं 31.5×23.0×6.4 मि.मी. की फलैक आन चर्ट का अन्वेषण किया।

तृतीया अन्वेषण

5 से 7 जुलाई 2018 को नवागढ़ में मुंडी टौरिया, नवागढ़ से 3 किमी. मैनवार टौरिया तथा नवागढ़ से 7 किमी. सापौन टौरिया का निरीक्षण किया। जिसमें मुंडी टौरिया के दक्षिणी भाग में ग्राम वासियों द्वारा उसकी मिट्टी (गुरम) खोदने से लगभग 7 फुट गहराई का स्थान मिला जिसमें लोवर पोलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष) एवं मिडिल पेलियोलिथिक (35 हजार से 2 लाख वर्ष) के कई पाषाण उपकरण प्राप्त हुई। जिनकी आकृति 61×73.8×46.85 मिमी. , 70×67×26.6 मिमी. है।

सापौन टौरिया, जो माननीय उमाभारती जी के निवास ग्राम डूंडा से 4 किमी. एवं अजनौर से 4 किमी. रोड पर स्थित है यहां क्वार्टज की 200 मीटर लम्बी 50 मीटर ऊंची पहाड़ी है जिसमें क्वार्टज के कई उपकरण प्राप्त हुई जिनकी आकृति 87×81.7×45 मिमी. 70.6×55×25 मि.मी. एवं 130.5×61×39 मि.मी. है। इसी प्रकार मैनवार हिल्स से भी कई उपकरण प्राप्त हुए हैं।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार नवागढ़ क्षेत्र की प्रागैतिहासिक विरासत के साक्ष्य लोअर पेलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष) से अपर पेलियोलिथिक तक प्राप्त हुए हैं, नवागढ़ की एक और विशेषता है कि यहां पाषाण काल के साक्ष्यों के साथ कपमार्क, रॉक पेंटिग्स, रॉक कट इमेज भी मिले हैं।

हजारों वर्ष प्राचीन शैलाश्रयों में जैन संतों के साधना स्थल एवं शयनस्थल यह सिद्ध करते हैं कि नवागढ़ की पहाड़ियों में जैन संतों का आवागमन हजारों वर्षों से निरंतर हो रहा है। यहां प्राप्त मिट्टी एवं पाषाण के मन के यहां विकसित मानव संस्कृति के साक्ष्य हैं। कला शिल्पानुसार यहां यहां गुप्त काल, प्रतिहार काल, चन्देल काल से वर्तमान काल तक के प्रमाण स्पष्ट रूपेण संगृहीत हैं। यहां की पुरातात्विक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विरासत विशिष्ट एवं विलक्षण हैं।

आओ सीखे : जैन न्याय**जैन दर्शन का परोक्ष**

जैन दर्शन में अन्य दर्शनों की तरह प्रमाण के भेद माने गये हैं। वे दो भेद हैं- एक प्रत्यक्ष और दूसरा परोक्ष। यह प्रमाण की चर्चा दार्शनिक युग की देन है। आचार्य श्री कुंदकुंद ने प्रवचनसार ग्रंथ में ज्ञान और ज्ञेय की चर्चा की है, प्रमाण और प्रमेय शब्द का प्रयोग किया, किन्तु तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ में प्रमाण शब्द का प्रयोग किया है ज्ञान को ही प्रमाण कहते हैं। ज्ञान पाँच प्रकार का होता है - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवल ज्ञान। यह दार्शनिक युग के प्रभाव से जैन सिद्धांत में प्रमाण का रूप उपलब्ध हुआ है पाँच ज्ञान के भेद बताने के बाद परोक्ष प्रमाण दो प्रकार के बताये गये हैं। मति और श्रुत ज्ञान को परोक्ष प्रमाण कहा गया है। इस तरह ज्ञान संबंधी प्राचीन जैन परम्परा को निबद्ध करके तत्त्वार्थ सूत्रकार ने मति, स्मृति, संज्ञा, चिंता और अभिनिबोध ज्ञानों अनर्थान्तर बताया है। इस तरह उन्होंने अपने समय में प्रचलित स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क और अनुमान प्रमाणों का अन्तर भाव मतिज्ञान में करके जैन क्षेत्र में दार्शनिक प्रमाण पद्धति को स्थान दिया। दार्शनिक क्षितिज पर नये-नये सितारे एक के बाद एक उगते थे और अपनी प्रभा से दर्शन शास्त्र का विकास करके अस्त हो जाते थे समन्तभद्र, सिद्धसेन, वसुबंधु, दिग्गज, धर्मकीर्ति, सबर, कुमारिल्य, वात्सायन, पूज्यपाद आदि प्रमुख दार्शनिकों ने भारत में जन्म लेकर अपने-अपने विचारों को प्रस्तुत किया, उनके पारस्परिक दार्शनिक सधर्मों के फलस्वरूप सभी दर्शनों का विकास हुआ और नयी-नयी गुत्थियों को सुलझाने का प्रयत्न हुआ। जैन परम्परा में तत्त्वार्थ सूत्रकार ने तार्किक परम्परा को मतिज्ञान में अन्तर भूत करते हुये अपनी भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन किया। किन्तु इससे प्रमाण पद्धति की समस्याएँ नहीं सुलझ सकीं। सबसे सबल गुत्थी थी इन्द्रिय जन्य ज्ञान को परोक्ष मानना। किसी भी दार्शनिक ने इन्द्रिय से उत्पन्न ज्ञान को परोक्ष नहीं माना। सब उसे प्रत्यक्ष मानते हैं। दूसरी समस्या परोक्ष प्रमाण के भेदों को लेकर। दार्शनिकों के बीच बार-बार यह प्रश्न होता था कि जैन अगर अनुमान आदि दशान्तर में प्रसिद्ध प्रमाणों को परोक्ष प्रमाण मानते हैं तो उन्हें स्पष्ट करना चाहिये कि परोक्ष प्रमाण के कितने भेद हैं उनके लक्षण भी सुनिश्चित क्या हैं? उपरोक्त प्रमाण विषयक समस्या को आचार्य श्री अकलंक देव ने हमेशा को सुलझा दिया। तत्त्वार्थ सूत्र की पद्धति को मान्य करते हुये 'तत्प्रमाणे' सूत्र को आदर्श मानते हुये प्रत्यक्ष और परोक्ष को भेद किये किन्तु प्रत्यक्ष के दो भेद करते हुये एक सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष और दूसरा मुख्य प्रत्यक्ष। इन्द्रिय और मन की सहायता से होने वाले मतिज्ञान को परोक्ष की परिधि से बाहर निकाल कर सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष नाम देकर प्रत्यक्ष की परिधि में सम्मिलित किया है। इस परिवर्तन सेना तो कोई प्राचीन जैन परम्परा को क्षति पहुँची है और विपक्षी दार्शनिकों को भी नुक्ता चीनी करने का कोई अवसर प्राप्त नहीं हुआ, क्योंकि प्राचीन जैन परम्परा इन्द्रियों से होने वाले ज्ञान को परोक्ष उत्तर दार्शनिक उसे प्रत्यक्ष कहते थे। किन्तु सांख्यवहारिक अर्थात् लौकिक प्रत्यक्ष नाम देने से वह विवाद सदैव के लिये समाप्त हो गया।

स्मृति आदि प्रमाणों को अकलंक देव सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष में अन्तरभूत किया और परोक्ष में श्रुतज्ञान में भी किया, जब तक इनमें शब्द का सन्सर्ग ना होतब तक इन्हें सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष माना और शब्द का सन्सर्ग होने के बाद इन्होंने स्मृति आदि को परोक्ष श्रुतज्ञान में अन्तर्भूत किया। अकलंकदेव ने सांख्यवहारिक को दो प्रत्यक्ष में माना एक इन्द्रिय प्रत्यक्ष और दूसरा अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष स्मृति आदि को अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष माना और मतिज्ञान को इन्द्रिय प्रत्यक्ष माना है। इसी मान्यता को अपना समर्थन मानते हुये उन्होंने प्रत्यक्ष के तीन भेद किये, एक इन्द्रिय प्रत्यक्ष, दूसरा अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष और तीसरा अतिन्द्रिय प्रत्यक्ष। अवग्रह से लेकर धारणा तक ज्ञान को एक देश होने के कारण इन्द्रिय प्रत्यक्ष और अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष माना। तथा स्मृति आदि को परोक्ष माना। अकलंकदेव के बाद जैन तार्किकों ने एक मत से सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष मानना स्वीकार किया हैं। किसी ने स्मृति आदि अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष नहीं माना। अकलंक देव ने तत्त्वार्थ सूत्रकार के मत की रक्षा करने के लिये जो प्रयत्न किया वह सफल नहीं हो सका, किन्तु उनकी शुद्ध तार्किक प्रमाण पद्धति को सभी ने एक स्वर से अपनाया। तथा परोक्ष प्रमाण के स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान, आगम ये पांच परोक्ष प्रमाण के भेद सर्वमान्य हुये। इस तरह प्रत्यक्ष और परोक्ष ज्ञान के पाँचों भेदों को किसी ना किसी में गर्भित कर दिया।

* जंजीर

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- स्पर्श के खेल

खेल विधि- एक स्वयं सेवक दूसरे को दोनों मिलाकर तीसरे को तीनों मिलकर चौथे को छूते हुए सबको संगठन जंजीर में साथ लेते जायेंगे। जंजीर से बाहर के स्वयंसेवक इससे बचने का तथा इसमें तीन से अधिक संख्या होने पर पीछे से तोड़ने का प्रयास करेंगे। टूटने पर जंजीर के सब स्वयं सेवकों की पीठ पर बाकी लोग मुक्के मारेंगे। वे सब भागकर एक निश्चित स्थान पर जायेंगे। तथा पुनः जंजीर बनाकर प्रारंभ करेंगे। सबके जंजीर में आने पर खेल समाप्त होगा।

* साँप नेवला

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- स्पर्श के खेल

खेल विधि- एक स्वयं सेवक नेवला तथा बाकी उसके सामने आगे पीछे खड़े होकर कमर पकड़कर साँप की आकृति बनायेंगे। नेवला साँप की पूछ (अंतिम स्वयं सेवक) को तथा साँप अपने फन (पहले स्वयंसेवक) से नेवले को छूने का प्रयास करेगा। जो इसमें पहले सफल होगा। वह विजयी होगा नेवले के स्थान पर हर बार अलग-अलग स्वयं सेवक को खड़ा करें।

* चामुण्डराय

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- स्पर्श के खेल

खेल विधि- एक स्वयं सेवक बाये हाथ से अपनी नाक पकड़ेगा तथा दाहिने हाथ को इसके बीच सँड की तरह निकालकर बाकी सबको छुयेगा। जो स्वयं सेवक छुए जायेंगे वे भी इसी प्रकार गणेश बनकर छूना शुरू कर देंगे सबके गणेश बन जाने पर खेल समाप्त होगा।

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

हमारे गौरव

कृष्ण द्वितीय शुभतुंग अकालवर्ष (878-914) ई.

राज्य का वस्तुतः स्वामी तो 876 ई. के लगभग ही हो गया था, जब उसके पिता सम्राट ने राज्यकार्य से अवकाश ले लिया था उसका विधिवत् राज्याभिषेक भी 878 ई. में हो गया। इसका शासन भी युद्धों, विजयों कभी-कभी पराजयों से भी पूर्ण रहा उसकी पट्टरानी चेदिनेश कोक्कल प्रथम की पुत्री थी यह सम्राट और उसकी पट्टरानी दोनों जैनधर्म में आस्था रखते थे। आचार्य गुणभद्र तो युवराजकाल में ही उसके विद्यागुरु थे। उसके सम्राट होने के पश्चात् भी सम्भव है वह कुछ वर्ष जीवित रहे और सम्राट उनके प्रति विनयावक्त रहा। उनके उपरांत उनके पट्ट शिष्य लोकसेन भी उसके द्वारा सम्मानित रहे, उसी के शासनकाल में उन्होंने गुरु के उत्तरपुराण की प्रशस्ति को संवर्धित करके बंकापुर में लोकादित्य की राजसभा में उक्त महापुराण का पूजोत्सव किया था कृष्ण द्वितीय के अनेक सामन्त सरदार जैनधर्म के अनुयायी थे और साथ ही बड़े पराक्रमी उत्तरापथ में कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार नरेश महीपाल को पराजित करके गंगा नदी में अपने घोड़े नहलाये थे। सेनाध्यक्ष श्री विजय भी जैन था। वनवासी का शासक लोकादित्य तो जैन था ही। सौदन्ति के रट्टराज पृथ्वीराम ने भी अपने प्रदेश के जैन मंदिरों के लिये भूमि आदि के दान दिये थे। एक परम जैन सामन्त तोल पुरुष विक्रम सान्तर ने अपनी राजधानी हुमच्च में पालियक्क-बसदि नामक जिनालय बनवाये थे। तथा 807 ई. में कुन्द- कुन्दान्वय के मौनी सिद्धान्त भट्टारक के लिये एक अन्य बसदि बनवायी थी। उसने अपनी राजधानी में सम्भवता उसकी गुडडबसदि में भगवान बाहुबलि की प्रतिमा भी प्रतिष्ठा की थी।

विक्रमवरगुण नामक एक अन्य सामन्त ने पेरियकुडि के अरिष्टनेमि भट्टारक के शिष्य को दान दिया था। कृष्ण के राज्यकाल में ही 881 ई. में कोप्पण तीर्थो पर चटुगुदु भट्टारक के शिष्य जैन मुनि सर्वनन्दि का समाधिमरण हुआ था। उस काल में कोप्पण एक धर्मतीर्थ एवं उन्नत जैन केन्द्र हुआ था। स्वयं कृष्ण द्वितीय ने मूल गुण्ड बदनि के आदि स्थानों के जैन मंदिरों को दो दान दिये थे। उसका 914 ई. का बेगुमारा ताम्रशासन भी एक जैन दानपत्र ही है। इसी कृष्णवल्लभ नृप के शासनकाल में 903 ई. में धवल विषय के गुण्ड नामक नगर में वैश्य जाति में उत्पन्न प्रसिद्ध चन्द्राचार्य के पुत्र चिकार्य ने जो सुन्दर एवं उन्नत जिनभवन बनवाया था उसके लिये उसके पुत्रों और नगार्य व अरसार्य ने चन्दिकावाट के सेनान्वयी पूज्यपाद कुमारसेन के प्रशिष्य और वीरसेन के शिष्य कनकसेन मुनि को कन्द वर्ममाल क्षेत्र में तथा अन्यत्र भूमि का दान दिया था। उसी अवसर पर उक्त जिनालय के लिये अनेक श्रेष्ठियों तथा नगर में निवास करने वाले विदेशी महाजनों ने भी दान दिया था। इसी राष्ट्रकूट नरेश के प्रश्रय में कन्नडी भाषा के जैन महाकवि गुणवर्म ने अपने हरिवंश पुराण की रचना की थी।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति



19वीं सदी के फोटोग्राफर लाला दीन दयाल जी



नवंबर-2006 में डाक टिकट जारी होने के समय किसी भी स्रोत से यह पता नहीं चला कि लाला दीन दयाल जी किसी वर्ग से संबंधित हैं। जैनज्म फिलेटली ग्रुप के प्रधान श्री सुधीर जैन (सतना-एम.पी.) के माध्यम से 28 अक्टूबर 2012 को सूचना मिली कि लाला दीन दयाल जी के पड़ोसी दामाद श्री एन.के. जैन मुम्बई निवासी ने सूचित किया है कि लाला दीन दयाल जी दिगम्बर जैन थे। इस सूचना ने उपरांत इस डाक टिकट को जैन व्यक्तित्व के रूप में अपने लेख में शामिल कर रहा हूँ।

लाला दीन दयाल का जन्म सन् 1844 को एक संपन्न जैन परिवार में मेरठ के निकट सरधना यू.पी. में हुआ था। उन्होंने स्कूल की शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत थॉमसन्स सिविल इंजीनियरिंग कॉलेज रुड़की से टेक्निकल शिक्षा ग्रहण की और इंदौर में पी.डब्ल्यू डी विभाग में हैड एस्टीमेटर तथा ड्राफ्ट्समैन बन गये। वहां कार्य करते हुए उनकी फोटोग्राफी के प्रति रुचि उत्पन्न हुई, जो जनून की हद तक पहुंच गई। इंदौर के महाराजा टुकोजी राव होलकर-II तथा मध्य भारत के गवर्नर-जनरल के एजेंट सर हेनरी डैली ने इन्हें प्रोत्साहित किया कि वह इंदौर में अपना स्टूडियो खोल लें। सन् 1857 में लाला दीन दयाल को वेल्स के राजकुमार की शाही यात्रा के दौरान फोटोग्राफी करने का कार्य सौंपा गया। सन् 1882-83 में तत्कालीन एजेंट सर लेफ्टि गिफ्रिन इनको अपने मध्यभारत के भ्रमण पर साथ ले गये। उन्होंने ग्वालियर, खजुराहो, रीवा, सांची आदि के महलों और किलों की तथा सोनागिर जैन मंदिर व अन्य मंदिरों की 89 तस्वीरों को ऑटोटाइप कार्बन प्रणाली से बेहतरीन ढंग से पुनः विकसित कर सर लेफ्टि गिफ्रिन की Famous Monuments of Central India संकलन के लिये तैयार किया।

1885 में लार्ड डफरिन ने उनको सम्मानित किया व उन्हें महामहिम वाइसरॉय भवन के फोटोग्राफर के तौर पर नियुक्त कर दिया, जहां उन्हें वाइसरॉय लार्ड डफरिन की तस्वीरें लेने का अवसर मिला। बाद में आने वाले वाइसरॉय अर्ल ऐलगिन तथा ड्यूक ऑफ कनोर्ट के दरबार में भी रहे। सन् 1887 में लाला दीन दयाल को विशेष सम्मान मिला इन्हें शाही फरमान जारी करके सामाजी महारानी विक्टोरिया का फोटोग्राफर नियुक्त किया गया, इनको अनगणित संख्या में पुरस्कार प्रदान किये गये, आप जल्दी ही सरकारी सेवा से त्यागपत्र देकर निजी तौर पर फोटोग्राफी करने लगे, उन्होंने अपने फोटोग्राफ्स की भारत में जयपुर, पूना और कलकत्ता में प्रदर्शनियां लगाई व अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। विदेशों में भी प्रदर्शनी लगाई। शिकागो में इन्हें वर्ल्ड कोलंबियन एक्सपोजिशन में विशेष पुरस्कार दिया गया।

इनकी ख्याति दिनों-दिन बढ़ने लगी। 1896 में इन्होंने बॉम्बे के अंदर अपना एक बहुत बड़ा फोटोग्राफी का स्टूडियो स्थापित कर दिया, जिसे भारतीय तथा अंग्रेजों ने संरक्षण दिया तथा इनके नियमित ग्राहक बन गये। निजाम हैदराबाद इनके बॉम्बे स्टूडियो में विशेष तौर पर आए तथा इन्हें सिकंदराबाद में स्टूडियो स्थापित करने के लिये आमंत्रित किया। लाला दीन दयाल ने नवाब की बात मान कर एक बड़ा सुन्दर तथा विशाल स्टूडियो सिकंदराबाद में भी स्थापित कर दिया। निजाम महबूब अली पाशा-VI की शादी, इनके शिकार पर जाने तथा विदेशी शाही मेहमानों के सिकंदराबाद आने पर उनके फोटो लाला दीन दयाल ने खींचे, नवाब ने उन्हें राजा मुसव्विर जंग की उपाधि से विभूषित

किया। इसके बाद उन्हें राजा दीन दयाल के नाम से पुकारा जाने लगा। राजा दीन दयाल ने कई ब्रिटिश उच्च पदाधिकारियों, सेना के युद्ध अभ्यासों की तथा बादशाह जार्ज पंचम जो उस समय प्रिंस ऑफ वेल्स थे, इन सबके चित्र लिये।

निजाम-VI उन्हें 1903 में होने वाले दिल्ली दरबार में भी अपने साथ लेकर गये थे, इस दिल्ली दरबार में भारत की रियासतों के शाही घरानों के राजा-महाराजा-नवाब आदि सम्मिलित हुये थे। उनका प्रिंस ऑफ वेल्स के साथ जो ग्रुप फोटो लिया वह लाला दीन दयाल ने खींचा था। आज भी भारतवर्ष की पुरानी रियासतों के शाही महलों में यह ग्रुप फोटो देखने को मिलता है। लाला दीन दयाल ने भारत के कोने-कोने की यात्रा की तथा अनेक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों तथा पर्यटक स्थलों में घूमे और 6000 से अधिक तस्वीरों की श्रृंखला का संग्रह किया जो उस समय का सबसे बड़ा संग्रह था। इनके फोटोग्राफ 19वीं सदी के भारत की मनोहर विपुल, सौम्य वैभव और गरिमापूर्ण आकर्षण की दुर्लभ सचित्र झांकियां प्रस्तुत करती है। उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वर्ग के व्यक्तियों, नवाबों, राजा-महाराजाओं, शाही महलों, जैन मन्दिरों, अन्य धार्मिक स्थानों, शाही शिकार, जुलूसों, दरबारों आदि को अपनी तस्वीरों में उतार कर इन्होंने उस दौर के स्वर्णिम क्षणों को सदा के लिये संजो लिया है।

इनके फोटोग्राफों की न केवल भारत में अपितु पूरे संसार में सराहना हुई। विदेशी पर्यटक जब भी भारतवर्ष की यात्रा पर आते तो बड़ी संख्या में इनकी तस्वीरें देखने व अपनी फोटो खिंचवाने के लिये इनके स्टूडियो में जरूर जाते। इनके बड़ी संख्या में खींचे हुए फोटोग्राफ, ग्लास, प्लेट्स तथा फोटोग्राफी के उपकरण नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में मौजूद है। इनके कुछ फोटोग्राफ अमेरिका तथा इंग्लैंड के संग्रहालयों में रखे हुए हैं। कुछ फोटोग्राफ निजी कला केन्द्रों, रंग महलों तथा संग्रहकर्ताओं के पास हैं। लाला दीन दयाल पर कई पुस्तकें भारत तथा विदेशों में प्रकाशित हुई हैं। भारत वर्ष में फोटोग्राफों के पितामह लाला दीन दयाल का 61 वर्ष की आयु में 5 जुलाई 1905 को बम्बई में निधन हो गया।

लाला दीन दयाल पर डाक टिकट

भारत वर्ष में फोटोग्राफी के अग्रगामी लाला दीन दयाल की मृत्यु के 100 वर्ष बाद उनके चित्र वाला एक डाक टिकट भारत सरकार के डाक विभाग ने 11 नवम्बर 2006 को जारी किया था, इस मल्टीकलर डाक टिकट का मूल्य 500 पैसे हैं तथा इसे चार लाख की संख्या में छापा गया था। डाक टिकट के बीच में एक गोले के अंदर इनका चित्र छापा गया है तथा गोले के बाहर चारों ओर इनकी खींची हुई कुछ तस्वीरों के चित्र हैं, डाक टिकट के ऊपर भारत India लिखा है, नीचे 500 पैसे मूल्य व हिन्दी तथा इंग्लिश में लाला दीन दयाल लिखा है। इस डाक टिकट को उस समय के केन्द्रीय खनन राज्य मंत्री टी. सुब्रामी रेड्डी तथा आंध्र प्रदेश सर्कल के चीफ पोस्ट मास्टर जनरल यशोदरा मेनन ने हैदराबाद में 11 नवम्बर 2006 को एक भव्य समारोह में विमोचन किया था। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैंड से छपने वाले स्टेनले गिब्बस के टालॉग में No. 2222 तथा कामनवेल्थ देशों के के टालॉग में नंबर 2359 पर दिया गया है।



लाला दीन दयाल डाक टिकट विमोचन समारोह

योग दिवस 21 जून पर विशेष : शरीर, मन और आत्मा के मध्य संतुलन स्थापित करता है योग

✽ डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) ✽

योग की उत्पत्ति प्राचीन समय में, योगियों द्वारा भारत में हुई थी। योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द से हुई है, जिसके दो अर्थ हैं - एक अर्थ है, जोड़ना और दूसरा अर्थ है- अनुशासन। योग का अभ्यास हमें शरीर और मस्तिष्क के जुड़ाव द्वारा शरीर और मस्तिष्क के अनुशासन को सिखाता है। योग आपको स्वस्थ और सुंदर बनाता है।

पिछले पचास सालों में योग न सिर्फ एक अंतराष्ट्रीय घटना बन चुका है, बल्कि दुनिया के हजारों लाखों लोगों के लिये एक जाना पहचाना नाम बन चुका है।

योग में जो शक्ति है वह दुनिया के और भी व्यायाम में नहीं है। योग की सबसे खासियत यही है कि योग के लिये आपको किसी भी प्रकार के यंत्र की आवश्यकता नहीं है। साथ ही योग एक ऐसी शारीरिक क्रिया है जिससे बिना किसी औषधि के सभी रोगों से मुक्ति पाया जा सकता है। योग के लिये आप प्रतिदिन सुबह बस 20-30 मिनट दें और दिनभर की थकावट से दूर रहे। बच्चों के लिये भी योग एक बेहतर व्यायाम है। जिससे बच्चे स्वस्थ रहते हैं और साथ ही इससे उनका दिमाग शांत और मजबूत बनता है।

यह एक ऐसी पद्धति है जिसके माध्यम से शरीर, मन और आत्मा के मध्य संतुलन स्थापित किया जा सकता है। यह हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने का एक स्वाभाविक तरीका है। योग को अपनी दिनचर्या का अंग बना लेने से हम स्वयं को स्वस्थ महसूस करते हैं। योग के जरिए न सिर्फ बीमारियों का निदान किया जाता है। बल्कि स्वयं के अंदर एक नयी ऊर्जा का संचार किया जा सकता है। शरीर को सही आकार में लाने के लिये यह बहुत सुरक्षित, आसान और कारगर तरीका है।

योग एक व्यावहारिक दर्शन की तरह है जो नियमित अभ्यास के माध्यम से हमारे भीतर आत्म-अनुशासन और आत्म-जागरूकता परिस्थितियों के परे हैं। योग के लिये बस अनुशासन और दृढ़ संकल्प ही आवश्यक शर्तें हैं। साथ ही यह जीवन में परिवर्तन, शारीरिक और मानसिक समस्याओं के बिना स्वस्थ जीवन प्रदान करता है।

अंतराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है। यह दिन वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। पहली बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया, जिसकी पहल भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी जिसमें उन्होंने कहा

योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिये एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय

में है। हमारी बदलती जीवन-शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। तो आये एक अंतराष्ट्रीय योग दिवस को गोद लेने की दशा में काम करते हैं।

नरेन्द्र मोदी, संयुक्त राष्ट्र महासभा

इस साल 21 जून 2019 को पाँचवा अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जायेगा। योग की खोज भारत में हुई थी। भारत के ऋषि मुनि हजारों साल पहले योग करते थे। योग का उल्लेख ऋग्वेद और शास्त्रों में किया गया है। बाबा रामदेव को योग गुरु माना जाता है। भारत और पूरी दुनिया में योग को पहुंचाने में बाबा रामदेव का बहुत बड़ा योगदान है और स्वामी बाबा रामदेव आज भी योग को लोगों तक पहुंचाने में लगे हुए हैं। 27 सितम्बर 2014 को युनाइटेड नेशन (संयुक्त राष्ट्र संघ) की सभा में 21 जून को अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा हुई थी। उस सभा में 193 देशों ने भाग लिया था और ज्यादातर देशों ने योग का समर्थन किया था। फिर 21 जून 2015 को पूरी दुनिया में पहला अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया था। भारत में इसका मुख्य आयोजन नई दिल्ली में किया था। जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सहित कई राजनेता, फिल्मी सितारों के साथ हजारों लोगों ने राजपथ पर योग किया था।

यह एक आध्यात्मिक अभ्यास है, जो शरीर और मस्तिष्क के संतुलन के साथ ही प्रकृति के करीब आने के लिये ध्यान के माध्यम से किया जाता है। यह पहले समय में, हिन्दू बौद्ध और जैन धर्म के लोगों द्वारा किया जाता था। यह शरीर और मन को नियंत्रित करके जीवन को बेहतर बनाता है। योग हमेशा स्वस्थ जीवन जीने का एक विज्ञान है। यह एक दवा की तरह है जो हमारे शरीर के अंगों के कार्यों के ढंग को नियमित करके विभिन्न बीमारियों को धीरे-धीरे ठीक करता है।

योग और ध्यान को आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से हमारे शरीर को स्वस्थ बनाने के लिये अनिवार्य माना गया है। योग सिर्फ शरीर को तोड़ने-मरोड़ने का दूसरा नाम नहीं है। सनातन योग के अद्भुत फायदों को लोहा सिर्फ भारत ही नहीं पूरे विश्व के लोगों ने माना है। क्योंकि योग के माध्यम से मस्तिष्क और शरीर का संगम होता है।

दैनिक जीवन में योग का अभ्यास शरीर को आन्तरिक और बाहरी ताकत प्रदान करता है। यह शरीर के प्रतिरोधी प्रणाली को मजबूती प्रदान करने में मदद करता है, इस प्रकार यह विभिन्न और अलग-अलग बीमारियों से बचाव करता है। यदि योग को नियमित रूप से किया जाये तो यह दवाईयों का दूसरा विकल्प हो सकता है। यह प्रतिदिन खाई जाने वाली भारी दवाईयों के दुष्प्रभावों को भी कम करता है। प्राणायाम और कपाल-भांति जैसे योगों को करने का सबसे अच्छा समय सुबह का समय है, क्योंकि यह शरीर और मन पर नियंत्रण करने के लिये बेहतर वातावरण प्रदान करता है।

हम योग से होने वाले लाभों की गणना नहीं कर सकते हैं, हम इसे केवल एक चमत्कार की तरह समझ सकते हैं, जिसे मानव प्रजाति को भगवान ने उपहार के रूप में प्रदान किया है। यह शारीरिक तंदरूस्ती को बनाये रखता है, तनाव को कम करता है, भावनाओं को नियंत्रित करता है, नकारात्मक विचारों को नियंत्रित करता है और भलाई की भावना, मानसिक शुद्धता, आत्म समझ को विकसित करता है साथ ही प्रकृति से जोड़ता है।

नियमित योग करने वाले व्यक्तियों के लिये योग बहुत अच्छा अभ्यास है। यह स्वस्थ जीवन शैली और हमेशा के लिये बेहतर जीवन जीने में सहायता करता है।

योग का अभ्यास हमारे मन को संयमी बनाता है। योगाभ्यास से दुबला व्यक्ति भी ताकतवर और बलवान बन जाता है। योग आपको अनुशासन समझाता है, योग आपके मन को तैयार करता है, योग आपको मैच्योर हैं, योग आपको अंधकार से बचाता है, योग उनके लिये है जो अपना जीवन सच में बदलना चाहते हैं, जो इस ब्रह्माण्ड के सत्य को समझना चाहते हैं, जो शक्ति सम्पन्न होना चाहते हैं और योग उनके लिये भी हैं जो हर तरह से स्वस्थ होना चाहते हैं। योग आपको स्वस्थ और सुंदर बनाता है। आप चाहे किसी भी धर्म से हो, यदि आप स्वयं को बदलने के लिये वचनबद्ध है तो योग आपकी मदद अवश्य करेगा। योग के अभ्यास की कला व्यक्ति के मन, शरीर और आत्मा को नियंत्रित करने में मदद करती हैं। यह भौतिक और मानसिक संतुलन कर के शान्त शरीर और मन प्राप्त करवाता हैं। तनाव चिंता का प्रबंधन करके आपको राहत देता हैं। यह शरीर में लचीलापन, मांसपेशियों को मजबूत करने और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ाने में भी मदद करता है। यह श्वसन ऊर्जा और जीवन शक्ति में सुधार लाता हैं। योग का अभ्यास करने से ऐसा लगता है कि जैसे यह मात्र शरीर को खींचने या तानने तक ही सीमित हैं, लेकिन आप जैसा देखते हैं, महसूस और गतिविधि करते हैं, उससे कहीं अधिक यह आपके शरीर को करने में सक्षम करता हैं। योग आंसन शक्ति, लचीलापन और आत्मविश्वास का निर्माण करते हैं। योग का नियमित अभ्यास करने से वजन में कमी, तनाव से राहत, प्रतिरक्षा में सुधार और एक स्वस्थ जीवन शैली बनाये रखने में मदद प्राप्त हो सकती हैं।

वर्तमान युग, आधुनिक युग में योग का महत्व बढ़ गया है। इसके बढ़ने का कारण व्यस्तता और मन की व्यग्रता है। आधुनिक मनुष्य को आज योग की ज्यादा आवश्यकता है, जबकि मन और शरीर अत्यधिक तनाव, वायु प्रदूषण तथा भागमभाग के जीवन से रोगग्रस्त हो चला है।

आधुनिक मनुष्य के लिये रोग-ध्यान बहुत ही जरूरी हो गया है। आज के आधुनिक दुनिया और जटिल जिंदगी में यदि आप मानसिक तनाव मुक्त जीवन के साथ ही शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो योग ध्यान को अपनाने की बहुत आवश्यकता है।

आधुनिक युग में प्रायः हर आदमी जिंदगी की व्यस्तताओं, जटिलताओं, पर्यावरण प्रदूषण, शोरगुल तथा विभिन्न आधुनिक मशीनों से निकलने वाले सूक्ष्म तरंगों के प्रभाव से शारीरिक, मानसिक तनाव तथा थकान अनुभव करता है। योग- ध्यान से इसके दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है। निरंतर योग-ध्यान करते रहने से शरीर-मस्तिष्क में नई सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता में सहयोगी है।

योग-ध्यान करने से शरीर की प्रत्येक कोशिका के भीतर प्राण शक्ति जीवन्तता का संचार होता है। जिससे शरीर स्वस्थ, सबल महसूस होता है। शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है।

आइये योग दिवस 21 जून अवसर पर हम भी योग में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वह करें। योग करें करायें ओर निरोग रहें।

पीलिया रोग नियंत्रण में असावधानी न रखें

* जितेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर)*

आँख, मुँह, हाथ पैरों के नाखून, त्वचा का पीला होना, मूत्र का पीला होना व भूख नहीं लगना, उल्टी होना, कब्ज, मिट्टी के रंग के दस्त, पेट फूलना, शरीर में खुजली चलना, नाड़ी की गति धीमी पड़ना, नींद नहीं आना, कमजोरी, बेहोशी, भूलना, बकना, शरीर में खींचन इत्यादि पीलिया रोग के लक्षण हैं।

रक्त में बिलिरुबिन की अत्यधिक मात्रा पीलिया का कारण होती है, यह पीला नारंगी रंग का पदार्थ जो लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाता है, जो ऑक्सीजन का वहन करता है। जब लाल रक्त कोशिकायें नष्ट होकर इनकी जगह नई कोशिकायें बनती हैं तब यह अपशिष्ट या मृत कोशिकाओं को यकृत रक्त से छान देता है। जब यकृत किन्हीं कारणों से इन्हें नहीं छान पाता है तो रक्त में बिलिरुबिन बढ़ने लगते हैं। यकृत और पित्ताशय में यह तरल पदार्थ पित्त किसी कारण से छोटी आंत में न जाकर रक्त में मिल जाते हैं जिससे पीलिया रोग हो जाता है।

पीलिया रोग यकृत के बढ़ जाने, पित्त पथरी, पित्त नली में व्यूमेर व किसी बाहरी चीज का दबाव पड़ना, पित्त नली के भीतर संक्रमण होना, पित्त नली का किसी कारण से सिकरा पड़ जाना, सर्दी लगा लगाकर पित्त नली का प्रदाह, मन्दाग्नि, अल्कोहल का सेवन करना, दूषित चीजों को खाना, पीना आदि कारण हैं।

नवजात शिशुओं में पीलिया की बीमारी अक्सर देखी जाती है क्योंकि उनका यकृत अधिक क्रियाशील नहीं रहता है, उन्हें सुबह शाम की धूप बहुत लाभदायक होती है। कब्ज नहीं होने देना, पुराना जौ, गेहूँ, चावल, मूंग, मसूर की दाल, हल्का भोजन करना। फलों का शुद्ध रस, गन्ने का शुद्ध ताजा रस बहुत लाभदायक है। किन्तु उड़द की दाल, खटाई बादी वाली चीजों का सेवन हानिकारक है, अल्कोहल का सेवन, दूषित बाजार का खान पान हानिकारक है।

पीलिया के लक्षण दिखते ही तुरन्त डॉक्टर की सलाह व जाँच से बिलिरुबिन का पता लगाया जा सकता है व डॉक्टर की सलाह व उपचार से सभी चिकित्सक पद्धतियों में उपचार द्वारा नियंत्रण हो जाता है। रोग के प्रति असावधानी रखने पर विपरीत प्रभाव से यकृत बढ़ जाता है। एवं पेट की दाहिनी ओर दर्द होता है व कभी कभी अत्यधिक संक्रमण से यकृत प्रभावित होने से खतरनाक सिद्ध हो सकता है।



हास्य तरंग

1. एक गांव में इंजीनियर एक टेडे पाइप में तार डालने की कोशिश एक सप्ताह से कर रहे थे, यह देख गांव का व्यक्ति बोला मैं कुछ सहायता कर सकता हूँ ? इंजीनियर ने कहा हम एक सप्ताह से कोशिश कर रहे हैं पर नहीं हो पा रहा है। आप कैसे कर सकते हो ? व्यक्ति बोला मुझे एक दिन का मौका दो व आप सभी यहाँ से चले जाओ। व्यक्ति एक चूहा लाया और उसकी पूँछ में तार बांध दिया और चूहे को पाइप में डाल दिया, चूहा पाइप की दूसरी तरफ तार के साथ बाहर निकल आया। इंजीनियर बड़े आश्चर्य चकित हुए यह कैसे संभव हुआ। व्यक्ति बोला जुगाड़ की तकनीक है।

2. एक व्यक्ति डॉक्टर के पास आकर कहता है, मुझे चेहर की प्लास्टिक सर्जरी कराना है। डॉक्टर- आप तो बहुत हेन्डसम दिखते हैं। व्यक्ति बोला मैं भीख मांगने का काम करता हूँ कोई भी फूटी कोडी भी नहीं देता है।

3. टीचर (भावित से) अपने पिता का नाम बताओं भावित-श्रीमति राम। टीचर तुम्हें इतना भी ज्ञान नहीं है कि पुरुष के नाम के आगे श्री लगाते हैं। भावित जी मुझे मालूम है, मेरे पिता जी का नाम मतिराम है।

4. अधिकारी (चौकीदार के इन्टरव्यू के लिये आये व्यक्ति से) आपकी योग्यता क्या है ? व्यक्ति सर में पी.एच.डी हूँ। अधिकारी इस पद के लिये दसवी पास व्यक्ति चाहिये व्यक्ति- सर मेरी पी.एच.डी का मतलब ही पास हायर स्कूल विथ ग्रेट डिफिकल्टीज है।

5. परीक्षा में अगर मैं प्रधानमंत्री होता विषय पर निबंध लिखने को दिया गया। एक छात्र ने लिखा अगर मैं प्रधानमंत्री होता तो यहाँ परीक्षा देने नहीं आता।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर) इन्दौर

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए
राजेन्द्र महावीर

सनावद- शासकीय हाईस्कूल बासवा में कार्यरत माध्यमिक शिक्षक राजेन्द्र महावीर जैन ने शासकीय अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय खण्डवा में दो वर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान अनेक पुरस्कार प्राप्त किये व अपनी सकारात्मक कार्यशैली के चलते उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन हुए विदाई समारोह में महाविद्यालय प्राचार्य श्रीमति तनुजा जोशी ने उन्हें अनेक प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए उनके कार्यों की सराहना करते हुए बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न शिक्षक बताया। श्री जैन ने महाविद्यालय में भाषण-कविता-निबंध परिचर्चा आदि प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान व अनेक कार्यक्रमों का सफल संचालन व आयोजन किया।

खण्डवा कलेक्टर विशेष गढ़पाले के निर्देश पर आयोजित घर सजाओं प्रतियोगिता में श्री जैन ने जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार व पाँच सौ रुपये की नगर राशि भी जीती। बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर के परीक्षा परिणामों में 73 प्रतिशत के साथ कक्षा में चौथे स्थान बनाया। सम्मान व विदाई के अवसर पर संस्था की प्राचार्य श्रीमति तनुजा जोशी, राकेश यादव, डॉ. उमेश अग्रवाल, डॉ. ज्योति राठौर, डॉ. रश्मि दुधे, डॉ. मो. अ. खान, ममता यादव, कार्यालय अधीक्षक संजय अत्रे, सपना शर्मा सहित बी.एड. एम.एड के समस्त छात्राध्यपक उपस्थित थे। विदाई समारोह के अवसर पर सराकोद्वारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के आशीर्वाद से श्रुत संवर्द्धन संस्थान मेरठ से प्रकाशित बड़े भैया की पाती (लेखक श्री सुरेश जैन आई.ए.एस) जीवन जीने की राह में (लेखक श्री जिनेश जैन), मादक पदार्थों से लाभ-हानि (लेखक श्री गोपीनाथ अग्रवाल) सभी उपस्थित 200 शिक्षक एवं छात्राध्यपकों को भेंट किये।

बाल कहानी

अशोक प्रदीपनगर

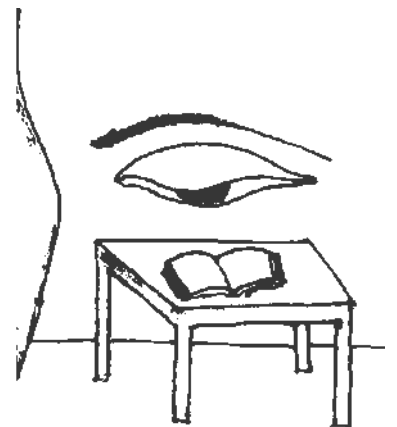


ललितपुर के क्षेत्रपाल मंदिर में मुनि श्री अभय सागर जी का संसंध आगमन हुआ एक दिन वे अपने आहार के बाद कुछ संस्मरण सुना रहे थे उसी संस्मरण की श्रृंखला में उन्होंने बताया कि कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति अपनी धुन में सवार हो जाता है और उसे ये मालूम नहीं होता है कि मैं क्या कह रहा हूँ इसी तरह की घटना एक मेरे साथ भी हुई वह कि कुण्डलपुर सन् 1992 की बात है कि मुनि श्री सुधासागर जी का पत्र लेकर प्रदीप अशोक नगर आये हुए थे आचार्य श्री को उन्होंने मुनि श्री सुधासागर जी का पत्र दिया आचार्य श्री ने पत्र पढ़कर अपना निर्देश दे दिया और पत्र तुरंत लिखने का निर्देश दे दिया मैंने शीघ्र पत्र को लिखा व सामायिक के पहले ही पत्र वाहक को पत्र देने का निश्चित कर लिया तत्काल मैंने एक ब्र. जी से कहा कि जाओ बुलाकर लाओ ब्रह्मचारी जी नये-नये थे इसलिये उन्होंने भी अशोक प्रदीपनगर के नाम से खोज बोन शुरु की मैंनेजर और मुनीम ने ब्रह्मचारी जी से कह दिया भैया इस नाम से तो कोई भी यहाँ नहीं आया ब्रह्मचारी जी ने मुझे सूचना दी मैंने इस नाम का कोई भी व्यक्ति नहीं आया है मैंने डांटते हुए कहा क्या यार तुम इतना सा भी काम नहीं कर सकते हो फिर से जाओ तुम्हें जरूर मिलेगा ब्रह्मचारी जी फिर गये परन्तु अशोक प्रदीपनगर नाम का कोई भी व्यक्ति न मिलने से वापस आ गये और मुझसे कहा कि महाराज जी सब जगह ढूँढ़ लिया मगर अशोक प्रदीप नगर का कोई भी व्यक्ति नहीं मिल रहा तब मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ तक मैंने कहा भैया अशोक प्रदीप नगर नहीं प्रदीप अशोक नगर है। इतने में प्रदीप स्वयं यहाँ मेरे सामने आकर खड़ा हो गया हम सब लोग खूब हंसे।

कविता

माँ जिनवाणी

द्वादशांग मय माँ जिनवाणी श्रुत बोध विस्तार है जो जिनवाणी अध्ययन करता उसका ही उद्धार है रात दिवस तो अध्ययन करता जिनवाणी कल्याणीका मोह तिमिर वो क्षण में हरता यह उपकार जिनवाणी का मुक्त पथ मिल जाये जिससे यह जीवन का सार है सकल विद्या का समावेश हे जिन आगम का रूप है श्रुत सम्यक निधि देता अनुपम मिले बोध निज रूप है ज्ञान विराग धरे श्रुत से जो पाता शिव का द्वार है राग द्वेष को मिटा विरागी मोक्षमार्ग पा जाता है वैर विरोध मिटाकर मन का मैत्री भाव जगता है यही ज्ञान है यही ध्यान महिमा अपरम्पार है



संस्कार गीत

मानवता



क्षमा प्रेम करूणा समता ही मानवता का है आधार
सेवा और समर्पण से तो हर प्राणी का है उद्धार

1.

मिले सफलता उस मानव को
जो विपदा में धैर्य रखे
असफलता को गले लगाये
संकट में भी मजा चखे
कर्म निरंतर करते जाओ
तूँ ही है अपना करतार

2.

सतत साधना में मिल पाती
अंतर की ही प्रेरणा
लगनशीलता बने योजना
संकट की संवेदना
बड़े आत्मविश्वास कठिन पथ
सात समंदर करता पार

3.

संघ शक्ति से विश्व विजय हो
मित्र बने सारा संसार
जातिपंथ से मुक्त रहे जो
वह पाता सबका ही प्यार
व्यक्ति उन्नति करे निरंतर
गढ़े सदा ही शुभ संस्कार

बाल कविता

भारत प्यारा



भारत का भारत स्वर्ग का कोना
उगले चाँदी उगले सोना
दाता अन्न विधाता भारत
अध्यात्म का केन्द्र है भारत
ऋषियों ने निर्माण किया है
अपने तप से श्रृंगार किया है
विश्व शांती का दूत है भारत
सत्य अहिंसा रूप है भारत
दया प्रेम महिमा इसकी
अनेकान्त ही गरिमा इसकी
बलिदानों का देश है भारत
मोक्षभूमि तीरथ है भारत
भारत सुन्दर श्रेष्ठ सलोना
इसमें जीवन सार्थक होना

समाचार

पंचकल्याणक

इन्दौर - श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर परदेशीपुरा इन्दौर में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री प्रशान्त सागर जी, मुनि श्री निर्वेग सागर जी महाराज के संसंघ सान्निध्य में दिनांक 26 मई से 31 मई 2019 तक पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभय भैया, पं. अमित जैन के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

इन्दौर - श्री मुनि सुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर स्मृति नगर इन्दौर में मुनि श्री प्रसन्नसागर महाराज के संसंघ सान्निध्य में दिनांक 23 मई 30 मई 2019 तक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नितिन भैया, ब्र. धीरज भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में ब्र. तरूण भैया निर्देशन में सम्पन्न होगा।

संगोष्ठी सम्पन्न

इन्दौर - आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज के संसंघ सान्निध्य में समाधि भक्ति पर दो दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी श्री दिगम्बर जैन मंदिर गुमास्ता नगर में सम्पन्न हुई। समाधि भक्ति के 170 छंद सन् 2005 से 2018 तक प्रकाशित हो चुके हैं और अभी कार्य निरंतर चल रहा है। संगोष्ठी में डॉ. अनुपम जैन, पं. जयसेन जैन कैलाश वैद्य आदि विद्वान उपस्थित रहे।

कुमारी पलक जैन को कक्षा 10वीं में सुयश

इन्दौर - कुमारी पलक राकेश जैन ने कक्षा 10वीं में 98.6 प्रतिशत अंक प्राप्त

कर जैन समाज का नाम रोशन कर जैन समाज को गौरवान्वित किया है। आप सेंट रेफिल्स स्कूल की छात्रा रही सी.बी.एस. ई. बोर्ड में यह सफलता आपने प्राप्त की। आपने हिन्दी, गणित, सोशल साइंस में 100 में 100 अंक प्राप्त किये। अंग्रेजी माध्यम छात्रा होने के बावजूद हिन्दी भाषा में शत प्रतिशत अंक लाकर आचार्य श्री विद्यासागर जी की भावना को साकार किया। उस उपलब्धि पर दिगम्बर जैन समाज सामाजिक सासंद तथा संस्कार सागर परिवार पंचबालयति मंदिर इन्दौर ने पलक को बधाई और शुभकामनायें प्रेषित की।

गौ माता की रक्षा करेंगे

उज्जैन - गौ संरक्षण पर केन्द्रित म्यूजिकल विडियो एलबम गौमाता की रक्षा करेंगे रिलीजिंग भारत और अमेरिका, नेपाल व भूटान में 11 मई किया गया। अम्बा जी म्यूजिकल प्रोडक्शन के सहनिर्माता विशाल जैन एवं निर्माता विनायक लुनिया है पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी और बिहार के समीप बने पांच देशों के अंतराष्ट्रीय बार्डर पर देश भर से भारी मात्रा में गौ तस्करी होती है। और हमारा उद्देश्य वहां जनजागृति लाना है इसलिये सिलीगुड़ी का चयन किया गया है। 2010 में गौ हत्या के विरोध में जियो और जीने दो नामक हिन्दी फीचर फिल्म बनाकर इस दुनिया में गौ वंश को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग स्व. श्री लुनिया जी द्वारा की गई थी।

आचार्य शांतिसागर राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न

द्रोणगिरि-श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत परिषद के तत्वावधान में श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र प्रबन्धकारी समिति द्वारा दिनांक 7 मई 2019 अक्षय तृतीया के पावन दिवस पर द्रोणगिरि में चारित चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर विद्वत परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. महेन्द्र कुमार जैन (मनुज) इन्दौर की अध्यक्षता में संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें अनेक विद्वानों ने अपने विचार रखे।

नैतिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

नई दिल्ली- दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षण समिति के तत्वावधान में श्री दिगम्बर जैन अतिथि भवन गली नं. 6 कैलाश नगर में 14 से 17 मई तक अर्हम योग के साथ आयोजित प्रशिक्षण शिविर महती धर्म प्रभावना के साथ साथ द्रण विश्वास व नये संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण शिविर में जैन दर्शन के प्रमुख विद्वान डॉ. जयकुमार जैन, डॉ. अशोक कुमार जैन, डॉ. आलोक जैन, ब्र. अरूण कुमार जैन ने लगभग 100 अध्यापकों को बड़ी तन्मयता से प्रशिक्षित किया। जिसमें अधिकतर महिलायें थी। विपिन जैन व रूचि जैन ने अर्हम योग का विधिवत प्रशिक्षण दिया। दिल्ली एन.सी. आर के विभिन्न दिगम्बर जैन मंदिरों में 19

मई से 30 जून तक शिविर आयोजित की जायेंगे।

सिरि भूवल्लय ग्रंथ अद्भुत है-आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज

इन्दौर-सिरि भूवल्लय ग्रंथ अद्भुत व अनूठी सम्पदा है, इस ग्रंथ में अंकों-अंको में कला-विज्ञान, तीन सौ तिरसेठ दर्शन एवं सात सौ अठारह भाषाएँ समाहित होने के साथ-साथ दर्शनों, सभी धर्मों के मूल ग्रंथों व अध्यात्म का समागम है। आगम हमारी आत्मा का विभव है। यह बात आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज ने आज जैन संस्कृति शोध संस्थान व श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में जिंसी इन्दौर में स्थित भवन में आयोजित एक विद्वत संगोष्ठी में कहीं। आचार्य श्री यहां संस्थान में संरक्षित तेरह सौ वर्ष प्राचीन, ताडपत्रों की पाण्डुलिपि व ताम्रपत्रों पर वर्णित शास्त्रों का मात्र दर्शन करके ही हमारे पापों का नाश हो जाता है, इनके दर्शन कर हम धन्य हैं। समाज के संजीव जैन संजीवनी ने बताया कि प्रातः कालीन इस संक्षिप्त विद्वत संगोष्ठी में ब्र. जिनेश मलैया, डॉ. महेन्द्र कुमार जैन (मनुज), श्री हेमंत सेठी, पं. सुरेश मारौरा, डॉ. गजेन्द्र कुमार जैन, सिरि भूवल्लय अन्वेषण परियोजना की परियोजना अधिकारी श्रीमति आशा जैन, पं. शिखरचन्द्र जैन एडवोकेट, राकेश जैन, श्री प्रवीण जैन, श्री अभिषेक जैन-मंडावरा, श्री बवन कदम, विककी भैया, श्री विपुल पाल आदि उपस्थित थे।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : जून 2019

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

- मन की व्यग्रता रोकने का नाम ही है ?
- समीचीन उद्देश्य बनाने के लिये की आवश्यकता है पर उसे पूर्ण करने के लिये ध्यान की आवश्यकता है ?
- जिसका अशन (भोजन) और आसन पर.....है, वहीं ध्यान लगा सकता है ?
- प्रवृत्ति -गत प्रमाद.....से और शुद्धात्मचलन रूप प्रमाद ध्यान से मिटाया जाता है ?
- आत्मध्यान के लिये न एयरकण्डीशन (वातानुकूलित) की जरूरत है और न किसी..... की जरूरत है ?
- एयरकण्डीशन में ध्यान करने वालों की.....के समय कण्डीशन (हालत) बिगड़ जाती है ?
- जिस तरह रीढ़ को सीधा करना मात्र ध्यान नहीं है उसी तरह भीड़ जोड़ना मात्र भी नहीं है ?
- ध्यान एक ऐसा प्रयोग है जिससे यह प्राणी भी ऊर्ध्वगमन कर जाता है ?
- प्रतिदिन कम से कम पाँच मिनट बैठकर करो। सोचों, जो दिख रहा सौ में नहीं हूँ किन्तु जो देख रहा है सौ में हूँ ?
- तनरंजन और मनरंजन से परे की बात करने वाले विरले ही लोग होते हैं ?
- जिसको शिव की चिन्ता नहीं वह जीवित अवस्था में भी शव के समान है ?
- को अप्रमत्त और शरीर को शून्य करने से ध्यान में एकाग्रता स्वयमेव आती है ?
- आत्मा भिन्न हैं और शरीर भिन्न है, इसकी सही प्रयोगशाला..... की साधना है ?
- विनय और वैध्यावृत्ति सीखे बिना हम किसी की..... नहीं करा सकते ?
- अन्तरंग तप है, उसे यदि कोई संयमी व्यक्ति करना चाहता है तो करे किन्तु असंयम से बचकर, सावधानी पूर्वक, निरवद्य करे ?
- की सल्लेखना सफल नहीं हो पाती ?
- आधि, व्याधि और से परे स्वस्थ समाधि होती है ?
- जीवन से इंकार नहीं है और न ही मृत्यु से इंकार है। अपितु उसमें महाजीवन की आशा है, वह आत्महत्या नहीं है क्योंकि आत्महत्या में कषाय की तीव्रता एवं जीवन से निराशा रहती है ?
- जिसने एकान्त में शयनासन का अभ्यास किया है वही.....होकर समाधि कर सकता है और करा भी सकता है क्योंकि एकान्त में बैठने से भय और निद्रा दोनों को जीता जा सकता है ?
- बाहर आने पर से नाता टूट जाता है, जो भीतर की ओर दृष्टि रखता है वह धन्य है ?
- मन्त्र जहाँ काम नहीं करता, वहाँ काम कर जाता है और बाहरी तन्त्र जहाँ काम नहीं करता वहाँ भीतरी समाधितन्त्र काम कर जाता है ?
- प्रयोग का निग्रह पहले होता है,..... का बाद में ?
- मुक्ति काल से नहीं बल्कि के सम्पादन से होती है ?
- संसार और शरीर के प्रति राग करना..... से मुख मोड़ना है किन्तु वैराग्य भाव लाना मुक्ति से नाता जोड़ना है ?
- निराकुलता जीवन में जितनी-जितनी आती जाये, ...जितनी-जितनी कम होती जाये

- उतना-उतना मोक्ष आज भी है ?
26. चित्त की स्वस्थता के लिये जरूरी है ?
27. अकेले चित्र का ही नहीं किन्तु का भी अनावरण करो ?
28. साधना की चरम सीमा है, जिसे भीतरी एवं बाहरी वस्तुओं के त्याग करने पर होने वाली चित्त शुद्धि के माध्यम से प्राप्त किया जाता है ?
29. मन सांसारिक विषय-कषायों में वैसे ही लगा रहता है किन्तु आत्म-कल्याण में लग जाना ध्यान है। इसी हेतु एक-एक क्षण का उपयोग करने पर उसकी संसिद्धि हो जाती है ?
30. केवलज्ञान और में उतना ही अन्तर है जितना 15 अगस्त और 26 जनवरी में। केवलज्ञान का होना स्वतन्त्रता दिवस और मुक्ति का होना गणतन्त्र दिवस है ?
31. भाव ही श्रमण्य है उसी में श्रमण की शोभा है ?
32. के साथ सुख का गठबंधन है ?
33. अध्यात्म का आनन्द की गोद में है ?
34. समता के साँचे में ढला हुआ ज्ञान ही के समय काम आता है ?
35. समताधारी यश में फूलता नहीं और अपयश में नहीं ?
36. जरा-जरा सी बातों में क्षुब्ध होना की प्रौढ़ता नहीं है, ज्ञानी की प्रौढ़ता की झलक समता में है ?
37. जो आँखें अपमान का प्रसंग पाकर भी रक्तवर्ण की नहीं होती अपितु क्षमा-समता के दूध से भर जाती हैं वे को पा जाती हैं ?
38. जो साधक वस्तुओं को न अच्छी, न बुरी मानता है अपितु समता भाव रखता है वही व्यक्ति भगवान महावीर का बन सकता है ?
39. समता वहीं पर टिकती है जहाँ पर किसी वस्तु के प्रति नहीं रहती ?
40. तलवारों का वार सहने वाले लोग आज फिर भी मिल सकते हैं लेकिन का वार सहना कितना कठिन है। इसे सहने वाले विरले ही साधक मिलते हैं बन्धुओं ?
41. जीवकाण्ड ग्रंथ में कितनी गाथायें हैं ?
42. कर्मकाण्ड ग्रंथ में कितनी गाथायें हैं ?
43. लब्धिसार ग्रंथ में कितनी गाथायें हैं ?
44. क्षपणासार ग्रंथ में कितनी गाथायें हैं ?
45. त्रिलोकसार ग्रंथ में कितनी गाथायें हैं ?
46. संस्कार सागर में आगम दर्शन शीर्षक में किसका वर्णन है ?
47. देवकृत कितने अतिशय होते हैं ?
48. प्रकृति कितने प्रकार की होती है ?
49. पाचाकाग्रि के कितने भेद हैं ?
50. मुनि श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज की समाधि कब और कहा हुई ?

10 प्रश्न संस्कार सागर मई 2019, 40 प्रश्न दिल्लताणी सागर बूंद समाय,
ध्यान/समाधि, समता अध्यात्म से लिये गये हैं।

यह ग्रंथ आप मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करें- फोन 0731-4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: जून 2019

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं. (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर

नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजे तब तक के लिए।

वर्ग पहेली 2 4 2

1	2				4		5	6
7			8	9			10	
11			12					
		13			14		15	
16	17			18	19		20	
21			22					
		23			24			
	25				26			
27				28				

ऊपर से नीचे

1. साहार, अधिकरण, बेस -3
2. भाट -3
3. हाथी, हस्ति, गज -4
4. पति -3
5. झुकना, नमस्कार, नम्रीभूत होना -3
6. संगीत में सुरों का समूह, खींचना -2
9. औठ, औष्ट, प्रेम, प्यार -2
13. उच्च सुर, वायर -2
15. रहस्य -2
16. किनारा तीर -3
17. वीता हुआ -2
18. शास्त्र, जिनवाणी, श्रुत, समय -3
19. संध्या, सांझ -2
20. नारी -3
22. व्रत, नियम, चारित्र -3
23. सतत, हमेशा -2
24. प्यास, तृषा -3
25. बालम, साजन, पति -2

बायें से दायें

1. श्रुतज्ञान का प्रथम अंग -4
4. समता, बराबरी का भाव -4
7. राजा भोजकी नगरी म.प्र. का एक जिला -2
8. कमल, पंकज नीरस -3
10. चित्त अंतस् -2
11. युद्ध समर -2
12. दशानन, लंकेश -3
13. मुकुट, आगरा का महल -2
14. वह (संस्कृत में) -1
16. समुद्र उदधि -3
18. उम्मीद, भावी कामना -2
20. बकरा पुराना धान्य -2
21. कल्याण सुख -2
22. मिलन -3
23. आंशिक त्याग, काल मर्याद त्याग -3
24. राजस्थान का एक शहर -3
26. रोहिणी नक्षत्र से प्रारंभ होने वाले दिन -2
27. अवस्था विशेष, चाल -2
28. दयोदय महाकाव्य के रचयिता -5

वर्ग पहेली 2 4 1 का हल

1	शु	त	पं	च	मी		क	ल	म
ति		च			6	त	स	ला	द
	8	त	र	9	ल		ला	10	वा
11	स	ह		12	स	त	ह	14	रि
म			15	ब	ल	म		16	क
द		र	सा			17	ध	र	म
19	शि	ग	मा			21	र	म	णी
23	ख	र		24	म		से		ल
25	र	ज		26	सा	ध	न	27	रा
									ह

.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीय पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

मैं अलबेला रहा अकेला



नियम

1. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकाल कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
2. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
3. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार 999 रु., द्वितीय 49 रु., तृतीय 24 रु.
4. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की 95 तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक
कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

चातुर्मास कलश आकृषित डिजाइनों में सस्ते एवं सुन्दर



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक : 29/05/2019, पोस्टिंग दिनांक : 03/06/2019